जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 19 संख्याः 112 प्रभात जालोर, रविवार 28 जुलाई, 2024 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा का कार्यकाल छः माह और बढ़ा

ऐसा माना जा रहा है कि प्र.मंत्री मोदी व संघ प्रमुख मोहन भागवत के बीच पार्टी को कंट्रोल करने के लिये चल रही खींचतान के कारण नड्डा को एक्सटैंशन देना आवश्यक हो गया था

- रेणु मित्तल -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा अगले 6 माह तक पार्टी अध्यक्ष पद पर बने रहेंगे। उनका कार्यकाल समाप्त हो चुका है तथा अब वे कार्यकाल विस्तार पर हैं।

उनका कार्यकाल क्यों बढ़ाया गया, जबकि उनके स्थान पर कोई अन्य नेता अध्यक्ष बनना था। इसीलिये तो उन्हें एन.डी.ए. सरकार के गठन के समय केन्द्रीय मन्त्री बनाया गया था।

नया अध्यक्ष न बनाये जाने के पीछे मूल कारण आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच चल रही रस्साकशी है। भागवत चाहते हैं कि उनकी पसंद का कोई कट्टर आर.एस.एस. समर्थक व्यक्ति भाजपा अध्यक्ष बने, जिससे पार्टी का नियन्त्रण फिर से उनके हाथों में आ जाये, जो मोदी-शासन के दस वर्षों के दौरान, उनके हाथों से निकल गया है।

दूसरी तरफ, मोदी अपनी पसन्द का कोई व्यक्ति चाहते हैं, जिससे पार्टी तथा सरकार दोनों में ही सत्ता उनके नियन्त्रण में रहे। इसलिए, नए अध्यक्ष का निर्णय अभी टाल दिया गया है।

अगले छः महीने, मोदी 75 वर्ष की आयु को पार कर लेंगे। यही आयु-सीमा रिटायर होने के लिये तय की गई है, जिससे अपेक्षाकृत युवा नेता सत्ता के संचालन तन्त्र में आ सकें।

यहाँ यह याद दिलाना उचित होगा कि एल.के.आडवाणी तथा मुरली मनोहर जोशी तथा अन्य उम्रदराज नेताओं को रिटायर कर सत्ता से बाहर कर दिया गया था, क्योंकि वे लोग 75 वर्ष के हो चुके थे। आर.एस.एस. मोदी शासन का अन्त करने तथा उनके स्थान पर अपनी पसंद का नेता लाने के लिये कारणों की तलाश रही है। जब 2024

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह भी माना जा रहा है कि मोहन भागवत नया भाजपा अध्यक्ष पूर्णतया आर.एस.एस. का कट्टर समर्थक चाहते हैं। जिससे पुनः भाजपा पर उनका पूर्णतया नियंत्रण हो।
- मोदी शासन के गत दस वर्षों में संघ का भाजपा में प्रभाव कम हो गया था तथा नये पार्टी अध्यक्ष के मार्फत भागवत पुनः भाजपा पर संघ का प्रभाव स्थापित करना चाहते हैं।
- छः माह में मोदी 75 वर्ष के हो जायेंगे तथा आडवाणी व मुरली मनोहर जोशी की भांति उन्हें भी रिटायर होना पड़ेगा तथा बागडोर युवा पीढ़ी के नेता को सौंपनी पड़ेगी।
- आर.एस.एस. मोदी को लोकसभा चुनाव के बीच ही रिटायर करना चाहती थी, जब भाजपा लोकसभा में अल्पमत में आ गयी थी, पर, मोदी ने सीधे एन.डी.ए. की ओर से प्र.मंत्री पद का उम्मीदवार बनकर भाजपा के संसदीय बोर्ड की भूमिका गौण कर दी थी।
- अब मोदी की आयु 75 वर्ष होने के बाद एक संघर्ष की स्थिति बनेगी तथा आर.एस.एस. मूल के सांसदों की भूमिका निर्णायक हो जायेगी। ऐसा माना जा रहा है कि योगी आदित्यनाथ का रोल भी महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि निरंतर चर्चा जोर पकड़ती जा रही है कि मोदी-शाह द्वय योगी को हटाना चाहते हैं।

जे.डी.ए. सचिव गिरफ्तारी वॉरंट और जे.डी.सी. जमानती वॉरंट से तलब

जयपुर, 27 जुलाई (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, चतुर्थ ने पृथ्वीराज नगर (पी.आर.एन.) में भूखंड देने से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट तक केस हारने के बाद भी, 11 साल में आयोग के आदेश की पालना नहीं करने पर जे.डी.ए. सचिव हेमपुष्पा शर्मा के गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं।

- जिला उपभोक्ता आयोग ने पृथ्वीराज नगर योजना में भूखंड देने के एक मामले में यह आदेश दिए। इस मामले में जे.डी.ए. सुप्रीम कोर्ट में भी हार चुका है फिर भी परिवादी शंभुदयाल अग्रवाल को भूखंड नहीं दिया गया।

आयोग ने गांधी नगर एस.एच.ओ. को निर्देश दिया है कि वे सचिव को गिरफ्तार कर 12 अगस्त को आयोग के समक्ष पेश करें। इसी के साथ आयोग ने जे.डी.सी. मंजू राजपाल को भी 10 हजार रुपए के जमानती वारंट से 12 अगस्त को तलब किया है और वारंट की तामील की जिम्मेदारी गांधीनगर एस.एच.ओ. को दी है। आयोग ने यह आदेश परिवादी शम्भूदयाल अग्रवाल के प्रार्थना पत्र पर दिया। प्रार्थना पत्र में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीति आयोग प्रकरण में ममता बनर्जी की मजबूरी झलकती है?

नीति आयोग की बैठक में उन्होंने महसूस किया कि वे अलग-थलग पड़ गईं और एकमात्र गैर-भाजपा मु.मंत्री बनकर रह गईं, जो नीति आयोग की बैठक में भाग ले रही हैं

- अंजन रॉय -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। हर तरीके से ममता बनर्जी राष्ट्र का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करने के लिए बेताब हो रही हैं क्योंकि अब वो राष्ट्रीय राजनीति में शुन्य पर चली गईं हैं।

ममता बनर्जी ने दिल्ली में आयोजित नीति आयोग की बैठक पर अपने क्रोध का इज़हार किया और दावा किया कि उन्हें बैठक में अपनी बात रखने का पर्याप्त समय नहीं दिया गया। उन्होंने उनके साथ हुई घटना के बारे में दावे के साथ कहा कि उनका माइक जानबूझकर बंद कर दिया गया था।

उनके इस बेबुनियाद आरोप के जवाब में केन्द्र सरकार ने उनके इस दावे का खंडन किया कि उनका माइक बंद कर दिया गया था, सरकार ने दावे के साथ कहा कि यह आरोप सत्य नहीं है।

दुसरी तरफ, बंगाल से उनके इंडिया गठबंधन के एक प्रतिनिधि ने उनके इस दावे को बकवास बताया।

पश्चिम बंगाल से कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी जो एक बार संसद में विपक्ष के नेता रह चुके हैं उन्होंने ममता बनर्जी पर आरोप लगाया कि वे राहुल गांधी के राष्ट्रीय राजनीति में मुख्य भूमिका में आने के कारण उनसे बहुत "ईर्ष्या" करती हैं।

अधीर रंजन ने कहा कि ममता बनर्जी यह जानती थीं कि नीति आयोग की बैठक में क्या होने वाला है इसलिए उन्होंने अपनी ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए जानबूझकर यह सब नाटक किया था। ममता बनर्जी प्रधानमंत्री की उपस्थित में दिल्ली में आयोजित नीति

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अतः उनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं बचा, इसके अलावा नीति आयोग की बैठक के बीच में बायकॉट का नाटक रचकर वॉकआउट करें।
- प्रैस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (पी.आई.बी.) ने "फैक्ट चैक" करके अपना निर्णय सुनाया कि ममता बनर्जी का दावा गलत है कि उनका "माइक" बंद कर दिया गया और उन्हें बोलने का पर्याप्त समय नहीं दिया गया। पी.आई.बी. के अनुसार उन्हें जो समय आवंटित था, उन्होंने न केवल उसका पूरा उपयोग किया, बल्कि अपने आवंटित समय से ज्यादा समय लिया और उनका समय खत्म होने के बाद भी उनको रोकने के लिये घंटी भी नहीं बजाई थी।
- कांग्रेस के बंगाल के नेता अधीर रंजन चौधरी, जो लोकसभा में विपक्ष के नेता भी रह चुके हैं, ने सार्वजनिक बयान में कहा, ममता बनर्जी को भारी जलन हो रही है राहुल गांधी से, क्योंकि वे लोकसभा में विपक्ष के नेता ही नहीं बने, बल्कि इण्डिया गठबंधन की राजनीति अब उनके चारों तरफ ही घूम रही है।

राजस्थान से बैंगलुरू भेजा गया 14,000 किलोग्राम संदिग्ध "डॉग मीट" जब्त

समझा जाता है कि बैंगलुरू में रैस्त्रां अपने ग्राहकों को मटन के नाम पर डॉग मीट परोस रहे हैं

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। संभावना है कि बेंगलुरू के रैस्त्रां और भोजनालय अपने ग्राहकों को कुत्ते का मांस (डॉग मीट) परोस रहे हैं। यह बात तब सामने आई, जब पुलिस व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने राजस्थान से आई एक ट्रेन से कार्टनों में भरकर आया संदिग्ध डॉग मीट जब्त किया।

स्थानीय पुलिस के अनुसार, व्यापारी लोग आमतौर पर ट्रेन से मांस के कार्टन भेजते हैं। कुछ आकलनों के अनुसार, राजस्थान से तकरीबन 14,000 किलो मांस ट्रेन से बेंगलुरू भेजा जाता है। शुक्रवार को स्थानीय पुलिस तथा फूड सेफ्टी एण्ड स्टैण्डर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया के कर्मियों ने जयपुर- मैसूर एक्सप्रेस से आए संदिग्ध डॉग मीट के 150 कार्टन जब्त किए। फूड सेफ्टी एण्ड स्टैण्डर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया (एफ.एस.एस.ए.आई.) ने एक प्रेस कॉन्फ्रैंस में बताया कि मांस के सैम्पल जांच व परीक्षण के लिए लैबोरेटरी भेजे गए हैं। यह भी कहा गया कि प्रतिबंधित पशु मांस भेजने और रैस्त्रां तथा भोजनालयों को बेचने के दोषी पाए गए लोगों को सख्त सजा दी जाएगी।

गौ रक्षक समूहों के अनुसार, राजस्थान से हर रोज बड़ी तादाद में मांस ट्रेन से बेंगलुरू आता है। शुक्रवार को अधिकारियों ने बेंगलुरू के यशवंतपुर रेलवे स्टेशन पर मीट के ट्रकों को पकड़ा, जिन पर शहर में वितरण के लिए मांस के कार्टन लादे जा रहे थे। यह माल जयपुर- मैसूर एक्सप्रेस से आया था। सूचना मिलने पर बी.बी.एम.पी. (बृहत बेंगलुरू महानगर पालिका) के स्वास्थ्य अधिकारी तुरंत रेलवे स्टेशन पहुँचे।

ज्ञातव्य है कि डॉग मीट के व्यापार पर प्रतिबंध है तथा नागालैण्ड, मिज़ोरम और अरुणाचल प्रदेश में, जहाँ कथित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- स्थानीय पुलिस ने बताया कि जयपुर-मैसूर एक्सप्रैस से 14,000 किलोग्राम मांस के कार्टन राजस्थान से बैंगलोर भेजे गए थे।
- स्थानीय पुलिस व फूड सेफ्टा एण्ड स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारियों को खबर मिली कि कार्टनों में संभवतया "डॉग मीट" है।
- बेंगलुरू के यशवंतपुर रेल्वे स्टेशन पर जब ये कार्टन ट्रकों में लादे जा रहे थे तब पुलिस ने इन्हें जब्त कर लिया और सैम्पल टैस्ट के लिए भेजे हैं।
- अगर साबित हो गया कि यह डॉग मीट है तो दोषियों पर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

दिल्ली: कोचिंग सैन्टर के बेसमैंट में पानी भरा, दो स्टूडैंट्स की मौत

नई दिल्ली, 27 जुलाई। दिल्ली में बारिश के बाद कई इलाकों में पानी भर जाने की जानकारी सामने आई है। सेंट्रल दिल्ली के राजेंद्र नगर में यू.पी.एस.सी. एग्जाम की तैयारी कराने वाले एक कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में पानी भर गया। घटना में दो छात्राओं के मौत की खबर है। घटना की जानकारी मिलते ही फायर और एनडीआरएफ की टीमें बचाव के लिए पहुंचीं। घटना राव आई.ए.एस. स्टडी सैंटर की बताई जा रही है। दिल्ली सरकार ने घटना की मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दे दिए हैं।

घटना पर डी.सी.पी. सैंट्रल एम हर्षवर्धन ने बताया कि शाम 7 बजे हमें सूचना मिली कि राजेंद्र नगर में एक यू.पी.एस.सी. कोचिंग संस्थान के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- दिल्ली के राजेन्द्र नगर इलाके में बारिश के बाद कोचिंग के बेसमैंट में पानी भर गया, जिससे वहां क्लास ले रहे कई स्टूडैंट्स फंस गये तथा दो छात्राओं की मौत की जानकारी सामने आई है।

ममता बनर्जी ने भविष्य में आयोजित नीति आयोग की किसी भी बैठक में भाग न लेने की धमकी दी

विपक्ष के नेता ममता बनर्जी का समर्थन करते हुए नज़र आये

- श्रीनन्द झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आज नीति आयोग की चल रही बैठक से बीच में ही बाहर आई और आरोप लगाया कि उन्हें बैठक में बहुत कम समय बोलने दिया। उन्होंने सिर्फ इतना ही नहीं कहा बल्कि यह भी धमकी दी कि वे भविष्य में आयोजित होने वाली बैठकों में उपस्थित नहीं होंगी। बनर्जी ने कहा कि नीति आयोग के पास कोई वित्तीय शक्तियां नहीं हैं। इस संस्था को या तो वित्तीय शक्तियों से समर्थ बनाया जाए, या फिर जो पहले योजना आयोग था उसे पुनर्जीवित किया जाए।"

विपक्षी नेताओं ने भी बनर्जी की इस शिकायत का साथ दिया कि बैठक में उनके भाषण को छोटा कर दिया क्योंकि उनके भाषण के दौरान उनके माइक की आवाज बंद कर दी गई थी। इस घटना पर स्टालिन ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि "क्या यही सहभागिता वाला संघवाद है? क्या एक मुख्यमंत्री से व्यवहार का यही तरीका है? भाजपा की केन्द्र सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि विपक्षी दल हमारे लोकतंत्र का अभिन्न हिस्सा हैं और उन्हें चुप कराने के लिए उनके साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए।"

इस मामले पर लालू प्रसाद की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी.) ने भी सरकार को आड़े हाथों लिया और नीति आयोग को एक "विफल विचार" बताया। राजद के राज्यसभा सांसद मनोज झा ने नीति आयोग पर टिप्पणी करते हुए कहा "नीति आयोग क्या है? यह वह निकाय है जिसे एक विशेष अकादमिक अभ्यास के लिए गठित किया है। इससे क्या उपलब्धि प्राप्त हुई है? साफतौर से कुछ भी नहीं। योजना आयोग से क्या परेशानी थी? सिर्फ यह कि वह नेहरू के समय से चली आ रही थी, इसलिए नीति आयोग का गठन किया गया। परन्तु आप नेहरू युग की कई चीजों को अभी तक चला आ रहा था।

मीडिया के एक वर्ग ने ममता बनर्जी के नीति आयोग की आज की बैठक में उपस्थित होने के निर्णय को इंडिया गठबंधन में बढ़ती हुई दरार कहा था, क्योंकि विपक्ष-शासित सात राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने "भेदभावपूर्ण बजट प्रस्तावों" के विरोध में नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करने का निर्णय किया था। उन्होंने बजट प्रस्तावों को विपक्ष शासित राज्यों की उपेक्षा और उनके साथ भेदभाव करने के समान बताया। इसका बनर्जी ने बैठक में लगभग उसी अंदाज में अपनी बात कही। इससे पूर्व बनर्जी ने जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की पत्नी सुनीता से मुलाकात की ओर उन्हें समर्थन का विश्वास दिलाया। कुछ सप्ताह पूर्व उनकी मुम्बई यात्रा के दौरान बनर्जी ने एन.सी.पी. (एस.पी.) के अध्यक्ष शरद पवार एवं शिव सेना (यू.बी.टी.) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तमिलनाडू के मु.मंत्री स्टालिन ने कहा, ऐसा बर्ताव किसी भी मु.मंत्री से नहीं किया जा सकता। विपक्ष प्रजातंत्रीय व्यवस्था का हिस्सा है कोई शत्रु नहीं, जिसे इस तरह चुप कराया जा सकता है।
- लालू यादव ने कहा, "फेल्ड आइडिया" (असफल सोच) है नीति आयोग, योजना आयोग वो ही काम कर रहा था, जो नीति आयोग से अपेक्षा है। मोदी सरकार ने योजना आयोग केवल इसलिये भंग किया क्योंकि यह नेहरू जी के समय गठित हुआ था।
- बहरहाल दिल्ली में ममता बनर्जी अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता से उनके घर जाकर मिलीं तथा पूरा समर्थन देने का वादा किया।
- इसी प्रकार वे मुम्बई यात्रा के दौरान वरिष्ठ नेता शरद पवार व उद्धव ठाकरे से भी मिली थीं, विपक्ष में एकता दिखाने के लिये।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने की बड़ी घोषणा

नई दिल्ली/जयपुर, 27 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई) के अवसर पर सेना के अग्निवीरों के लिए बड़ी घोषणा की है। उन्होंने कहा कि समर्पण और राष्ट्र भक्ति की भावना से देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले अग्निवीरों के लिए राजस्थान सरकार ने राज्य पुलिस, जेल प्रहरी और वनरक्षक के रूप में आरक्षण का प्रावधान रखा है।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार के इस फैसले से अग्निवीरों को देश की सेवा के बाद प्रदेश में भी काम करने का अवसर प्राप्त होगा।

- अग्निवीरों को राज्य पुलिस, जेल प्रहरी और वनरक्षक के रूप में आरक्षण मिलेगा।

'जब मैं नीति आयोग की बैठक में बोलने लगी तो मेरा माइक बंद कर दिया गया'

प.बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केन्द्र सरकार पर सनसनीखेज आरोप लगाकर बैठक से वॉकआउट किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। केन्द्र सरकार और गैर भाजपा शासित राज्यों के बीच बढ़ते मतभेद का स्पष्ट नज़ारा नीति आयोग की बैठक में दिखा। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एकमात्र विपक्षी मुख्यमंत्री थीं जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुई नीति आयोग की बैठक में शामिल हुई थीं, पर जब वो कुछ बोल रही थी उस समय उनका माइक्रोफोन बंद कर दिया गया तो वे नाराज़ होकर मीटिंग छोड़कर बाहर आ गईं।

बनर्जी ने नीति आयोग की बैठक में राजनैतिक भेदभाव का आरोप लगाया। गैर भाजपा शासित राज्यों में से सिर्फ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ही बैठक में शामिल हुई थीं और इंडिया ब्लॉक के बाकी सभी मुख्यमंत्रियों ने बैठक का बहिष्कार किया था।

बनर्जी का दावा है कि उनका माइक म्यूट कर दिय गया और सिर्फ 5 मिनट ही बोलने दिया गया। लेकिन केन्द्र सरकार ने प्रैस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो द्वारा फैक्ट चैक करवाकर इस दावे को खारिज कर दिया।

बनर्जी ने पत्रकारों से कहा कि, "मैंने कहा था आपको (केन्द्र) राज्यों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए मैं बोलना चाहती थी पर मेरा माइक बंद था। मुझे सिर्फ 5 मिनट बोलने दिया गया पर मुझ से पहले वालों को 10-20 मिनट दिए गए थे। मैंने मीटिंग से वॉक आउट किया है। मैं भविष्य में कभी भी नीति आयोग की बैठक में हिस्सा नहीं लूंगी।"

ममता बनर्जी ने कहा कि मैंने मीटिंग में कहा केन्द्र सरकारों को राज्यों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। सरकारें ऐसे नहीं चलतीं। सभी से समान व्यवहार करना चाहिए। भाजपा शासित राज्यों और भाजपा समर्थक राज्यों के मुख्यमंत्रियों को 15-20 मिनट बिना किसी टोकाटाकी के बोलने दिया गया। असम, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री 10-15 मिनट बोले। आंध्र के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू 20 मिनट बोले। बनर्जी ने आगे कहा, "मैं एक मात्र मुख्यमंत्री थी, जो विपक्ष शासित राज्य से थी। उन्हें इसके बारे में खुश होना चाहिए था और मुझे बोलने देना चाहिए था।"

बनर्जी ने कहा कि उनके साथ जो व्यवहार हुआ है वह सभी क्षेत्रीय दलों का अपमान है।

विपक्षी दलों ने पूर्व में आरोप लगाया था कि बजट में आंध्र व बिहार पर मेहरबानी की गई क्योंकि केन्द्र सरकार इन दो राज्यों के समर्थन पर टिकी है।

कांग्रेस ने तो पहले ही कह दिया था कि पक्षपाती बजट के विरोध में कांग्रेस के मुख्यमंत्री नीति आयोग की बैठक में भाग नहीं लेंगे।

अन्य विपक्षी दलों ने भी बजट में पक्षपात के खिलाफ नीति आयोग की बैठक में भाग लेने से मना कर दिया था। तमिलनाडू के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने बायकॉट की घोषणा करने की शुरुआत की। उसके बाद कांग्रेस शासित राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक व तेलंगाना ने भी बैठक के बहिष्कार की घोषणा की और फिर पंजाब, केरल व झारखंड ने भी यही रूख अपनाया।

- मरने वाले सभी लोग एक ही परिवार के थे।

अनंतनाग में वाहन खाई में गिरा, आठ लोगों की मौत

श्रीनगर, 27 जुलाई। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में शनिवार को एक वाहन के खाई में गिर जाने से पांच बच्चों सहित आठ लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। हादसा डकसुम किश्तवाड़ रोड पर अरशान के पास हुआ।

अधिकारियों ने कहा कि वाहन किश्तवाड़ से डकसुम की ओर जा रहा था, तभी चालक ने नियंत्रण खो दिया और खाई में लुढक गया, जिससे एक ही परिवार के आठ लोगों की मौत हो गई। दुर्घटना के तुरंत बाद, वरिष्ठ नागरिक और पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे। मृतकों में पांच बच्चे और दो महिलाएं शामिल हैं।

मृतकों की पहचान किश्तवाड़ के पुलिसकर्मी इम्तियाज राथर, अफरोजा बेगम, रेशमा और छह से 15 साल की उम्र के बीच के पांच बच्चों के रूप में की गई। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल, मनोज

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

मूर्ख आदमी अपने बड़े से बड़े दोष अनदेखा करता है, किन्तु दूसरे के छोटे से छोटे दोष को देखता है। –संस्कृत सूक्ति

गरीबी दूर करने के लिए शिक्षा की अनिवार्यता

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कौशल, मूल्य, और व्यवहार सीखते हैं, जो उनके बौद्धिक, नैतिक, और शारीरिक विकास को बढ़ाते हैं। यह व्यक्तियों को समाज में सक्रिय और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करती है, नवीन विचार और प्रौद्योगिकी सीखने के अवसर प्रदान करती है, और इस प्रकार जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायक होती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान को रटना नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक समझ और क्रिटिकल थिंकिंग के कौशल का विकास करना है, जो व्यक्तियों को जानकारी का उपयोग कर समस्याओं का समाधान करने और जीवन में उन्नति करने में सक्षम बनाता है।

आइए देखें कि विश्व भर में उच्च शिक्षा और गरीबी के बीच संबंध कैसे हैं। जैसे, स्कैंडिनेवियाई देशों में जहां शिक्षा का स्तर उच्च है, वहाँ गरीबी अत्यंत कम है। ये देश शिक्षा में भारी निवेश करते हैं और शिक्षा सभी के लिए सुलभ है। इसके विपरीत, अफ्रीकी महाद्वीप के कई देशों में शिक्षा की पहुँच सीमित है और गुणवत्ता कम है, जिससे ये देश गरीबी में डूबे हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा का स्तर और गरीबी के बीच सीधा संबंध है।

पढ़े-लिखे लोग स्वयं को गरीबी से बाहर कैसे कर लेते हैं और गरीबी से मुक्त होकर पुन: वापस गरीबी में गिरने से बचने में अधिक सक्षम और समर्थ कैसे रहते हैं? वस्तुत: इस मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन को समझने के लिए इस विषय पर वर्ष 2024 तक 33,232 शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इस विषय पर 700 से अधिक शोधपत्र ऐसे हैं जिनके शीर्षक में शिक्षा और गरीबी का सन्दर्भ है। आइये देखते हैं, शिक्षा किस प्रक्रिया से गरीबी दूर करती है और पुन: गरीबी में गिरने से बचाती है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को न केवल बेहतर रोजगार मिलते हैं, बल्कि यह उन्हें समाज में सक्रिय और जागरूक नागरिक बनने में भी सहायक होती है। वर्ष 2024 में 38 देशों के आंकड़ों के आधार पर प्रकाशित एक शोध के अनुसार, उच्च शिक्षा का प्रचार-प्रसार न केवल समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है बल्कि आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन में भी सहायक होता है। विश्व बैंक के अनुसार, शिक्षित व्यक्ति उच्च आय वाली नौकरियों के लिए योग्य होते हैं और उनके पास बेहतर स्वास्थ्य और जीवन स्तर तक पहुँच होती है, जिससे समाज के समग्र विकास में योगदान मिलता है।

अध्ययन यह भी बताता है कि उच्च शिक्षा का प्रचार-प्रसार शैक्षिक विकास और वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी नवाचार को प्रोत्साहित करता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा धनात्मक प्रभाव पड़ता है। स्वाभाविक है सरकारों को उच्चकोटि की विद्यालयीन शिक्षा के साथ ही उच्च-शिक्षा के प्रसार पर ध्यान देना चाहिए ताकि देश के आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन दोनों को बढ़ावा मिल सके। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष जो किसी व्यक्ति ने स्कूल में बिताया है, उससे उसकी औसत आय में 10 प्रतिशत की वृद्धि होती है। इससे न केवल व्यक्तिगत आय में सुधार होता है, बल्कि यह राष्ट्रीय आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देता है। शिक्षा से लोगों को बेहतर रोजगार पाने, उद्यिमता की ओर बढ़ने और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता मिलती है।

चीन में वर्ष 2024 में प्रकाशित एक अध्ययन शिक्षा और सापेक्ष गरीबी के मध्य रिश्तों के साथ ही शिक्षा और सापेक्ष गरीबी के अंतर-पीढ़ीगत संचरण में कमी पर किया गया। इसके निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि जैसे-जैसे बच्चों की अनिवार्य शिक्षा की अवधि एक सेमेस्टर से बढ़ती है, उनके सापेक्ष गरीबी का अनुभव करने की संभावना 6-8 प्रतिशत तक कम हो जाती है। सापेक्ष गरीबी के अंतर-पीढ़ीगत संचरण को शिक्षा ही रोक सकती है।

यहां आपको याद रखना चाहिए कि शिक्षा भले ही गरीबी मिटाने के लिए जरूरी हो, पर गरीबी खुद शिक्षा प्राप्त करने में एक बड़ी बाधा है। गरीबी से जुड़ी चुनौतियाँ शैक्षिक उपलब्धियों में असमानता बढ़ाती हैं, जो बाद में आय, स्वास्थ्य और खुशहाली में भी असमानता का कारण बनती हैं। स्कूल सीधे तौर पर गरीबी का मुकाबला तो नहीं कर सकते, पर वे गरीबी के कलंक से निपटने और स्कूली शिक्षा को अधिक समान बनाने की नीतियाँ लागू कर सकते हैं। सरकारों को भी हर बच्चे को उनकी पसंद के विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जरूरी संसाधन मुहैया कराने चाहिए। इसके अलावा, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता है, जिससे भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार हो सके।

इस प्रकार, शिक्षा गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक अनिवार्य साधन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर विकास को संभव बनाता है, जिससे एक समृद्ध, स्वस्थ और संतुलित समाज की नींव रखी जा सकती है। शिक्षा के माध्यम से, व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सुधार कर सकते हैं, बल्कि वे समाज के लिए भी उपयोगी और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहते हैं और समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के प्रति संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार वे न केवल अपने लिए बल्कि समाज के अन्य वर्गों के लिए भी बेहतर परिस्थितियाँ बनाने में योगदान देते हैं।

तीसरी बात यह है कि शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने में मदद करती है। उच्च गुणवत्ता वाली उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने पर सभी के लिए समान अवसर प्राप्त होते हैं, चाहे व्यक्ति की आर्थिक या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। इससे समाज में व्याप्त जातिगत, लैंगिक और आर्थिक भेदभाव को कम करने में मदद मिलती है, और सभी वर्गों के लोगों को उनकी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का मौका मिलता है। स्वाभाविक है कि जब व्यक्ति, परिवार, व समाज उन्नति करते हैं तो राष्ट्र उन्नति करता है।

अंतत:, शिक्षा व्यक्तियों को नई तकनीकों और विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जो आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य हैं। इस प्रकार, शिक्षा गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ सतत विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है, जिससे न केवल व्यक्तिगत जीवन में सुधार होता है, अपितु समाज के हर क्षेत्र में प्रगति सुनिश्चित होती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि शिक्षा को हर स्तर पर प्रोत्साहित किया जाए और इसे सभी के लिए सुलभ बनाया जाए। इसके माध्यम से हम एक ऐसे समाज की नींव रख सकते हैं जो न केवल अधिक जागरूक और शिक्षित हो, बल्कि अधिक समृद्ध और समानता युक्त हो।

शिक्षा के महत्व को समझने और इसे व्यापक रूप से लागू करने के लिए, सरकारों, समुदायों और व्यक्तियों का सामूहिक प्रयास आवश्यक है। यह सहयोग न केवल शैक्षिक अवसरों को बढ़ाएगा बल्कि एक ऐसा वातावरण भी तैयार करेगा जहाँ हर व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँच सके। इस प्रक्रिया से शिक्षा गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। इसलिए, शिक्षा को समाज के समग्र विकास के लिए एक प्राथमिकता के रूप में देखा जाना चाहिए।

यहाँ कुछ बातें ध्यान रखना आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से कौशल को बढ़ावा देना होगा। शिक्षा का अर्थ रट्टामार ज्ञान या रोट-लर्निंग नहीं, विश्लेषणात्मक समझ का विकास है। शिक्षा कौशल का मूल है। अगर कौशल विकास नहीं हुआ तो वह शिक्षा, शिक्षा नहीं है। अगर कौशल नहीं है तो डिग्रियां सिर्फ कागज का टुकड़ा हैं। लेकिन, जैसा कि हम पूर्व में बता चुके हैं कि गरीबी दूर करने में व्यक्ति को शिक्षित होने के साथ स्वस्थ भी होना चाहिए और वहां के समाज और प्रशासन व्यवस्था में शांति होनी चाहिए तथा बढ़िया पर्यावरण संरक्षण होना भी आवश्यक है। इन चारों को बहुत व्यापक अर्थ में समझना आवश्यक है।

इस प्रकार, शिक्षा गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक अनिवार्य साधन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर विकास को संभव बनाता है, जिससे एक समृद्ध, स्वस्थ और संतुलित समाज की नींव रखी जा सकती है। शिक्षा के माध्यम से, व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सुधार कर सकते हैं, बल्कि वे समाज के लिए भी उपयोगी और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि सरकारें और समाज के सभी वर्ग शिक्षा को प्राथमिकता दें और इसे सुलभ बनाने के लिए आवश्यक संसाधनों का निवेश करें।

गरीबी एक ऐसा अभिशाप है जो न केवल व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि पूरे समाज की प्रगति को भी रोकता है। इसके चंगुल से मुक्ति पाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण चार महत्वपूर्ण स्तंभ हैं जो न केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक अपितु सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में सहायक हैं। यदि भारत के गावों में रहने वाले अति-गरीब की किस्मत बदलनी है तो उस परिवार के बच्चों की शिक्षा के लिए गाँव-गाँव उच्चकोटि के शिक्षक नियुक्त करने होंगे, समाज के लोगों को शिक्षक का सम्मान करना होगा, तभी शिक्षक उन बच्चों के दिल में परिवर्तन के लिए अपने उच्च विचारों की चिंगारी से जलती हुई आग पैदा करेगा। गरीबी से बाहर निकालने के लिए परिवर्तन की आग और उस आग को सदा जीवित रखने के लिए समाज द्वारा सम्मानित और उच्चकोटि के शिक्षकों द्वारा दिया ज्ञान ही यह परिवर्तन ला सकता है। तमाम बाकी उपाय आज तक असफल रहे हैं। चंद हजार की चाकरी में उच्चकोटि के शिक्षक नहीं पैदा किये जा सकते। दैनिक मजदूरी की दरों में संविदा कर्मी मिलते हैं, शिक्षक नहीं।

ऐसे शिक्षक जो अपने ज्ञान और उत्साह से बच्चों के दिलों में नई उम्मीद और सपने जगा सकें, वे गरीबी की जंजीरों को तोड़ने में मददगार सिद्ध हो सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि समाज भी शिक्षकों का सम्मान करे। शिक्षकों को सम्मान देना उन्हें प्रेरित करता है और उनके कार्य में गुणवत्ता लाता है। जब समाज शिक्षकों को उचित सम्मान देता है, तो शिक्षक भी अपने कार्य को और अधिक जिम्मेदारी और निष्ठा से निभाने का प्रयास करते हैं।

अंत में, यह समझना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण के संयोजन से ही गरीबी के गहरे अभिशाप को मिटाया जा सकता है। दुनिया में शायद ही कोई समाज ऐसा हो जो शिक्षित होकर भी गरीब हो। इसलिए, भारत के प्रत्येक बच्चे को उच्चकोटि की शिक्षा प्रदान करना न केवल आवश्यक है बल्कि यह भारत को डेमोग्राफिक डिविडेंड का लाभ उठाने में सक्षम बनाएगा। गरीबी की भयावह और विकट परिस्थितियों को सकारात्मकता में बदलने की क्षमता हम सभी के भीतर है, बशर्ते हमारे हृदय में उस परिवर्तन की आग धधक रही हो। हालांकि, इस आग को संभालने के लिए सत्यनिष्ठा, आत्म-नियंत्रण, करुणा और परोपकार जैसे मानवीय गुण अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि इनके बिना, यही आग हमें भस्म कर सकती है। इस प्रकार, हमें स्वयं के साथ समग्र समाज को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने के लिए इन मूल्यों को भी अपनाना होगा। शिक्षा मानव को सामर्थ्य प्रदान करती है, जिससे उनमें समर्थता आती है और यह समर्थता उन्हें निर्भय बनाती है, जिससे वे समाज में सशक्त रूप से उभरते और उन्नति करते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

समृद्ध और विकसित भारत का बजट

सतीश पूनिया

केंद्र सरकार ने वर्ष 2024-25 के बजट में विकसित भारत की रूपरेखा तैयार की है। यह बजट विकसित भारत के लिए महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसकी तैयारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनावों से बहुत पहले ही कर दी थी। देश की आर्थिक प्रगति के लिए यह बजट ग्रोथ इंजन का काम करने वाला है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में देश के सभी सैक्टर, और सभी वर्गों का ध्यान रखा है। वित्त मंत्री ने वेतन भोगियों, किसानों, महिलाओं, युवाओं, छात्रों के लिए कई घोषणाएं की हैं। सही मायने में यह सर्वस्पर्शी और समावेशी बजट है। वित्त मंत्री ने बजट में नौ प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर फोकस किया है। इनमें कृषि में उत्पादकता और लचीलापन, रोजगार और कौशल, समावेशी मानव संसाधन विकास और सामाजिक न्याय, विनिर्माण और सेवाएं, शहरी विकास, ऊर्जा सुरक्षा, बुनियादी ढांचा, नवाचार, अनुसंधान और विकास तथा अगली पीढ़ी के सुधार जैसे महत्वपूर्ण सैक्टर शामिल हैं। इनमें आवंटित बजट से आगामी वर्षों में होने वाले कार्यों से विकसित भारत की तस्वीर उभरने लगेगी।

देश में रोजगार और काम की तलाश के लिए संघर्षरत युवाओं के लिए बजट में सात बड़ी घोषणाएं की गई हैं। मोदी सरकार ने रोजगार और कौशल विकास जैसे सैक्टर के लिए एक लाख अड़तालीस हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। रोजगार से संबंधित प्रोत्साहन योजनाओं से अगले पांच साल में चार करोड़ से ज्यादा युवाओं को नौकरी, कौशल विकास या फिर अन्य अवसर उपलब्ध करवाएं जाएंगे। इससे बड़ी संख्या में युवा शक्ति को काम मिलेगा। भारत की आर्थिक प्रगति में मध्यम आय वर्ग की बड़ी भूमिका रहती है। मध्यम आय वर्ग को आयकर में छूट देकर राहत देने का काम किया है। इससे मध्यम आय वर्ग की जेब में बचा पैसा देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में एक संवाहक का काम करेगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 29 जनवरी 1962 में एक लेख में खेती के बारे में लिखा था कि "देश के आर्थिक विकास का आधार खेती है। क्योंकि भारत में 72 फ़ीसदी जनसंख्या की आय का मुख्य स्त्रोत खेती ही है और राष्ट्रीय आय का आधा हिस्सा खेती से आता है। इस कारण खेती को पहली प्राथमिकता दी जानी चाहिए।" पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अनुयायी भारतीय जनता पार्टी के लिए खेती और कृषि हमेशा प्राथमिकता में रहे हैं।

इस बजट में भी कृषि और किसानों पर विशेष फोकस रहा है। कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने डेढ़ लाख करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया है। खेती में इनोवेटिव टेक्नोलॉजी, प्राकृतिक खेती और मौसम के अनुकूल फसलों से जुड़ी कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं। बजट में ऐलान किया गया है कि अगले दो साल में एक करोड़ किसानों की प्राकृतिक खेती में मदद की जाएगी। सरकार दलहन और तिलहन के लिए मिशन की शुरुआत करेगी। सरकार इन नकदी फसलों के उत्पादन और मार्केटिंग तंत्र को मजबूत कर उत्पादकों को मजबूत करने का काम करेगी। मोदी सरकार हमेशा से कृषि क्षेत्र में नवाचार का समर्थक रही है। इस बजट में भी खेती के लिए डिजिटल सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने की बात कही गई है। अक्सर मौसम की मार झेलने को अभिशिप्त किसानों को मौसम का पूर्वानुमान, फसल संबंधी सलाह और बाजार में चल रही कीमतों के बारे में किसानों को अपडेट मिल सकेगा। देशभर के छह करोड़ किसानों की जमीनों का रजिस्ट्रेशन कराया जाएगा। इसके अतिरिक्त चार सौ जिलों में फसलों का डिजिटल सर्वे भी किया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार ने कृषि बजट बढ़ाकर इस साल कृषि और संबद्ध क्षेत्र के लिए 1.52 लाख करोड़ का प्रावधान रखा है, जो मोदी सरकार का किसानों के प्रति समर्पण मजबूती से स्थापित करता है। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार से लेकर और अब पिछले 10 वर्षों में मोदी सरकार ने किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम को मजबूती देकर देश के करोड़ों किसानों को संबल दिया है, अब इसी क्रम में पांच राज्यों में नए किसान क्रेडिट कार्ड भी जारी किए जाएंगे जो अन्नदाता किसान को एक बड़ी ताकत देने का काम होगा। महात्मा गांधी कहते थे भारत की आत्मा गांवों में बसती है।

जब तक गांवों को मजबूत नहीं किया जाएगा, देश का उन्नयन संभव नहीं है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर मोदी सरकार पिछले दस वर्षों से लगातार काम कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, पानी या इंटरनेट सुविधाओं के विस्तार की बात हो, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए मोदी सरकार ने उल्लेखनीय कार्य किया है। इस बजट में भी देश के पच्चीस हजार गांवों को हर मौसम के अनुकूल ऑल वेदर रोड के नेटवर्क का प्रावधान किया गया है। इसमें पच्चीस हजार ग्रामीण बस्तियों में कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए ऑल वेदर रोड के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के नए चौथे चरण की शुरूआत की जाएगी।

इसके अलावा गांव और गरीबों से जुड़ी पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, मनरेगा, ग्राम स्वराज अभियान, जल जीवन मिशन, पीएम किसान सम्मान निधि, स्वच्छ भारत मिशन, सामाजिक न्याय और यूरिया सब्सिडी जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं पर दस लाख 76 लाख करोड़ रुपए खर्च करने का प्रावधान किया है। गरीब कल्याण अन्न योजना को एनडीए सरकार ने फिर अगले पांच साल के लिए बढ़ा दिया है। प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए आवंटन 35.36 प्रतिशत बढ़ाकर मोदी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि हर घर विहीन नागरिक को घर उपलब्ध करवाना उनकी प्राथमिकता में है। भाजपा नीत केंद्र सरकार शहरों में आर्थिक तौर पर कमजोर और मध्यम वर्ग के लिए घर खरीदने में सहायता देकर उन्हें आवास उपलब्ध करवाने में मदद कर रही है। वित्त मंत्री ने घोषणा की है कि पीएम आवास योजना अर्बन के अंतर्गत अगले पांच साल में दस लाख करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा। केंद्र सरकार ने योजना के दूसरे चरण में अगले पांच साल में एक करोड़ शहरी गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को घर मुहैया करवाने का लक्ष्य रखा है।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के साथ उनके सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया है। वित्त मंत्री ने महिलाओं और लड़कियों के लिए तीन लाख करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार का जोर महिलाओं को विशेष स्किल में प्रशिक्षित करना है। इसके लिए देश की इंडस्ट्री के साथ मिलकर महिलाओं के कौशल विकास के लिए स्किलिंग कार्यक्रम चलाए जाने की घोषणा की गई है। महिला स्वयं सहायता समूहों को उत्पादों को बाजार उपलब्ध करवाने में भी सहायता की जाएगी। इससे देश की नारी शक्ति को बल मिलेगा और देश की अर्थव्यवस्था की गति को और ताकत मिलेगी। भारत में रोजगार उपलब्ध करवाने में छोटे तथा मझौले उद्यमों का बड़ा योगदान रहा है। देश की जीडीपी में इस सैक्टर की भागीदारी एक तिहाई से ज्यादा है। ट्रेड और मैन्युफैक्चरिंग में बड़ी संख्या में एमएसएमई सैक्टर रोजगार उपलब्ध करवाते हैं। वित्त मंत्री ने देश में तीस लाख नए रोजगार के लिए एमएसएमई सैक्टर को ग्रोथ इंजन बनाने की घोषणा की है।

सरकार ने इस सैक्टर की लंबित मांग को पूरा करते हुए ऋण सीमा सौ करोड़ रुपए तक करने की घोषणा की है। गौरतलब है कि एमएसएमई सैक्टर में देश में सवा तीन करोड़ से ज्यादा महिलाओं को रोजगार मिला हुआ है। वर्ष 2025 तक पांच करोड़ महिलाओं को एमएसएमई से जोड़ने के लक्ष्य पर सरकार काम कर रही है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह सरकार का मजबूत कदम है। एक समय था जब युवा कोई स्टार्टअप शुरु करने से पहले यह सोचता था कि उसके लिए फंड कहां से जुटेगा। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्टार्टअप योजना के बाद देश में स्टार्टअप के लिए फंड जुटाना बहुत आसान हो गया है।

देश में अप्रैल 2024 तक एक लाख 27 हजार स्टार्ट-अप कार्य कर रहे हैं। स्टार्टअप को और गति देने के उद्देश्य से बजट में एनडीए सरकार ने एंजल टैक्स हटाने की घोषणा की है। इस टैक्स के हटने से स्टार्टअप नवाचारों पर ज्यादा खर्च कर सकेंगे, उन्हें फंड जुटाना भी आसान होगा और देश में स्टार्टअप के इकोसिस्टम को बढ़ावा मिलेगा। निश्चित ही भाजपा नीत एनडीए सरकार का यह बजट देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के नए मानक स्थापित करेगा। बजट से युवा, मध्यम वर्ग, किसान, महिलाओं की उन्नति के साथ देश के आधारभूत ढांचे और उद्योग तंत्र को नया बल मिलेगा।

(लेखक भाजपा के वरिष्ठ नेता हैं)

–डॉ. सतीश पूनिया,
(भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष)

भामाशाह ने भौनावास पी.एस.सी. की दशा सुधारी

15 लाख की लागत के मेडीकल उपकरण व अस्पताल में कराया विकास कार्य

पावटा, (निसं)। राजकीय अस्पतालों का नाम सामने आते ही टूटी-फूटी बिल्डिंग, फर्नीचर का अभाव और दवाइयों की कमी की तस्वीर उभरती है। लेकिन पावटा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत भौनावास में एक ऐसा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी है जहां न केवल शानदार भवन और फर्नीचर है बल्कि निजी चिकित्सालयों जैसी सुविधाएं नि:शुल्क उपलब्ध हैं।

यह तस्वीर पीएचसी का सबसे बड़ा भवन भौनावास प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की है। जिसका श्रेय भामाशाह सेठ विशंभर दयाल को जाता है। जिन्होंने 35 साल पहले सरकार राजकीय अस्पताल के लिए न केवल जमीन दी बल्कि 24 बड़े कमरों का दो मंजिला भवन बना कर दिया। जिसमें दो बडे वार्ड व साथी डॉक्टर के लिए अलग से क्वार्टर भी बनाकर दिये गए हैं। समय-समय पर भवन का रख रखाव रंग रोगन भी भामाशाह परिवार द्वारा करवाया जाता है।

भौनावास का प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र किसी प्राईवेट अस्पताल से कम नहीं है।

पूर्व सरपंच राजपाल सिंह शेखावत ने बताया कि भामाशाह सेठ के सुपुत्र श्यामसुंदर एंड कंपनी व भाई 15 लाख रुपए की लागत से अभी आठ बेड, आठ लॉकर, दो कंप्यूटर, दो एसी, पूरे परिसर में इंटरलॉक टाइल, पूरे परिसर का मरमत व रंग रोगन करवाइए करवाई है। सरपंच रेवती कंवर, डॉ. विजय यादव, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर कैलाश यादव, महेश, ममता, देवेंद्र, रामनिवास, अजय, किशोरी, मुकेश, सरोज समेत ग्रामीणों ने भामाशाह परिवार को धन्यवाद दिया ।

बिजली कर्मचारी ने घायल मोर की जान बचाई

सांभरझील, (निसं)। जी.एस.एस. के नजदीक 11 केवी लाइन पर बैठा मोर करंट लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर मौजूद निगम के गार्ड राजेंद्र कुमार मीणा व विद्युतकर्मी टीकमचंद कुमावत धड़ाम की आवाज सुनकर तत्परता से दौड़े और घायल मोर को संभाला। अपने स्तर से जो भी प्रयास थे करके मोर की जान बचाई। बताया कि यह मोर काफी देर से विद्युत लाइन पर बैठा हुआ था

और वहां से उड़ने के लिए जैसे ही उसने पंख फैलाए पंख का हिस्सा दूसरे तार से टच कर गया और करंट के कारण उसका पांव डैमेज हो गया।

सांभर में करंट से घायल राष्ट्रीय पक्षी मोर की बिजली कर्मचारी ने जान बचाई।

इनकी ओर से वन विभाग के श्यामश्री शर्मा को सूचना दी तो उन्होंने एनजीओ से बात करके कुछ सदस्यों को सांभर भिजवाया। इसकी सूचना पुलिस को भी दी गई थी।

एनिमल रेस्क्यू टीम के सदस्य रोशन कुमावत, श्याम सिंह, पिंटू कुमावत, श्याम सुंदर जांगिड़, राधे दायमा, एनिमल वेलफेयर संस्था अध्यक्ष रोशन कुमावत, सदस्य हेमंत (टोनी) मौके पर मौजूद रहे और घायल पक्षी का प्राथमिक उपचार कर वन विभाग की नर्सरी पहुंचाया।

राशिफल रविवार 28 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र दिन 11:48 तक, शूल योग रात्रि 8:11 तक, बालव करण प्रात: 8:24 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:48 तक है। आज कालाष्टमी, वन महोत्सव दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:33 से 9:13 तक, लाभ-अमृत 9:13 से 12:33 तक, शुभ 2:13 से 3:33 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:13

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

सिंह
शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। मन में असंतोष बना रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में आपसी अनबन, वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

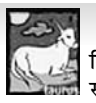

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात हो सकती है।

सार-समाचार

सोना व चांदी के जेवर पार

जोधपुर, (कासं)। शहर के निकटवर्ती सालोड़ी गांव में जाटों- मालियों की ढाणियों में एक घर में रखे संदूक से अज्ञात चोर लाखों के जेवरात चोरी कर ले गए। 20 जुलाई को दंपति ने चेक किया तो गहने सही सलामत थे, 25 को संदूक को ताला टूटा हुआ था और गहने गायब मिले। अज्ञात चोर ने सेंध लगाकर आभूषण चोरी कर लिए। घर की महिला की मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं है। उसका उपचार चल रहा है। पति ने इस बारे में राजीव गांधी नगर थाने में रिपोर्ट दी है। पुलिस ने बताया कि सालोड़ी गांव के जाटों- मालियों की ढाणियों में भागीरथ माली रहता है। उसकी पत्नी मानसिक रोगी है और उसका उपचार चल रहा है। 20 जुलाई को पति पत्नी ने घर में रखा संदूक चेक किया तो उसमें रखे गहने सही सलामत पाए थे। मगर 25 जुलाई को चेक किया तो पता लगा कि संदूक का ताला टूटा हुआ है और उसमें रखे जेवरात कंठी, बोर, तिलड़ी, कानों के टोप्स, चेन, चांदी का कंदोरा, अंगुठियां, सोने की फीणी आदि नहीं मिले। अज्ञात चोरों द्वारा जेवरात चोरी कर लिए गए। वक्त घटना वह खेत पर गया हुआ था और उसकी मानसिक रोगी पत्नी घर पर ही रहती है। राजीव गांधी नगर पुलिस अब इसमें जांच कर रही है।

कई स्थानों से दुपहिया वाहन चोरी

जोधपुर, (कासं)। शहर में दुपहिया वाहन चोरी की घटनाएं नहीं रूक रही। अलग अलग स्थानों से बाइक और मोपेड चोरी के प्रकरण पुलिस में दर्ज हुए है। चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पुलिस ने बताया कि सर्वेश्वर महादेव मंदिर के पास सूंथला निवासी शैलेन्द्र सिंह पुत्र सवाई सिंह शेखावत ने रिपोर्ट दी कि वह अशोक उद्यान आया था। जहां बाहर से अज्ञात शख्स उसकी मोपेड एक्टिवा चुरा ले गया। इसी तरह मोइलों का बास बनाड़ निवासी अली मोहम्मद पुत्र खाजू खां ने चौपासनी हाउसिंग पुलिस को बताया कि वह पाल गांव ठाकुरजी का मंदिर ठाठाण्ड में आया था। जहां से उसकी बाइक चोरी हो गई। जबकि उदयमंदिर पुलिस ने बताया कि ओसियां के बिरसालुकलां निवासी सुनील पुत्र भैराराम जाट रा बहादुर मार्केट एमजीएच रोड पर आया था। जहां मार्केट के बाहर से उसकी बाइक कोई चुरा ले गया।

फरार 15 हजार का इनामी गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। जिले की ग्रामीण पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी के प्रकरण में लंबे समय से फरार चल रहे 15 हजार के इनामी अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारी शेरगढ़ पुलिस ने की है ग्रामीण पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह यादव ने बताया कि शेरगढ़ के एनडीपीएस एक्ट में फरार वांछित 15 हजार का इनामी अभियुक्त पृथ्वीराज पुत्र हेमाराम विश्नोई निवासी रावर कारपड़ा को दस्तयाब करने के साथ अब गिरफ्तार कर लिया गया है। वह काफी समय से फरार चला आ रहा था। आरोपी गिरफ्तारी के लिए एसपी भोपाल सिंह लखावत, जयदेव सियाग (एसआईसीएडब्ल्यू) जोधपुर ग्रामीण के सुपरविजन में एवं उपाधीक्षक रतन सिंह के सुपरविजन में टीम का गठन किया था। टीम में जिला स्पेशल टीम के हैड कांस्टेबल चिमनाराम, कांस्टेबल चनणाराम, सेठाराम आदि भी शामिल रहे।

अवैध डोडा पोस्त व शराब बरामद

जोधपुर, (कासं)। जिला पश्चिम की लूणी पुलिस ने अवैध डोडा पोस्त बरामद कर दो लोगों को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार कर किया है। वहीं दो लोगों से पुलिस ने अवैध शराब बरामद की है। लूणी थानाधिकारी हुकमसिंह ने बताया कि सूचना मिलने पर फींच गांव में अवैध रूप से डोडा पोस्त रखने के आरोप में फींच निवासी जांवताराम विश्नोई और खुडाला के सोनाराम को पकड़ा गया। इनके पास से 6.2 किलो अवैध डोडा पोस्त जब्त किया गया। वहीं सदर बाजार थाने के एएसआई नेमीचंद ने भील बस्ती सोजती गेट के पास अवैध रूप से शराब बेच रहे प्रदीप को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 24 बोतल बरामद की। जबकि बनाड़ थाने के एसआई राजूराम ने सांसियो की ढाणी गुजरावास खुर्द में अवैध रूप से शराब बेच रहे सत्री पुत्र लच्छाराम सांसी को गिरफ्तार किया।

महिला आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर संपन्न

जोधपुर, (कासं)। पुलिस आयुक्तालय के महिला शक्ति आत्मरक्षा केंद्र के तत्वावधान में हनवंत आदर्श विद्या मंदिर लाल सागर में चल रहे सात दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का समापन हो गया है। समापन समारोह का शुभारंभ विद्यालय समिति की उपाध्यक्ष मंजू सारस्वत, पूर्व छात्र परिषद के सोशल मीडिया प्रभारी रामचंद्र देवासी, सेवा प्रमुख भंवरदान, व्यवस्थापक सज्जन सिंह भाटी, रामूराम, श्रीपाल सिंह राजपुरोहित द्वारा मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन कर किया गया। पुलिस आयुक्तालय जोधपुर के महिला आत्मरक्षा केंद्र के ट्रेनर आरक्षक धर्माराम, दुर्गा व किरण का श्रीफल व मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया गया। प्राचार्य बाबूलाल ने मंचासीन अतिथियों का परिचय करवाया गया।

त्रिस्तरीय जन सुनवाई निधारित

बालोतरा, (नि.सं.)। अगस्त माह में राज्य सरकार के निर्देशानुसार त्रिस्तरीय जन सुनवाई का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर नानूराम सैनी ने बताया कि अगस्त माह के प्रथम गुरुवार 1 अगस्त को ग्राम पंचायत स्तर, द्वितीय गुरुवार 8 अगस्त को उपखंड एवं 16 अगस्त शुक्रवार को जिला स्तर पर जन सुनवाई शिविर आयोजित होंगे। उन्होंने बताया कि अगस्त माह के तीसरे गुरुवार 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस होने के कारण जिला स्तरीय जन सुनवाई 16 अगस्त को होगी। उन्होंने जनसुनवाई का व्यापक प्रचार प्रसार करने एवं परिवादों का गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए।

युवक से देशी कट्टा मय मैग्जीन बरामद

जोधपुर, कासं)। शहर की प्रतापनगर पुलिस ने कायलाना स्थित फिल्टर हाउस के पास में एक युवक को संदेह के आधार पर पकड़ा। उसकी तलाशी लिए जाने पर उसके पास में एक देशी पिस्टलमय मैग्जीन बरामद हुई। इस पर उसे आर्म्स एक्ट में गिरफ्तार कर लिया गया। थानाधिकारी के अनुसार रात्रि साढ़े नौ बजे के करीब गश्त के समय कायलाना झील से पहले फिल्टर हाउस के पास एक संदिग्ध युवक को रोककर तलाशी ली तो उसके पास एक देशी पिस्टल मय मैग्जीन बरामद हुई। युवक गुढा विश्नोईयान निवासी अर्जुन पुत्र घीसाराम लुहार को आर्म्स एक्ट में गिरफ्तार कर लिया गया।

दुर्घटना में घायल युवक की मौत

जोधपुर, (कासं)। शहर के सरदारपुरा बी रोड पर एक पिज्जा सेंटर के सामने सड़क हादसे में घायल हुए युवक की अस्पताल में उपचार के बीच मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के भाई की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया है और शव को कार्रवाई के बाद परिजन के सुपुर्द कर दिया। सरदारपुरा पुलिस ने बताया कि रिडिया फांटा, सूरसागर निवासी साजिद खां पुत्र मोहम्मद इकबाल ने रिपोर्ट दी। इसमें बताया कि 9 जुलाई की रात्रि के समय एक पिज्जा सेंटर के सामने बी रोड पर अज्ञात वाहन की चपेट में आने से घायल हुए उसके भाई को इलाज के लिये अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बीस दिन तक जीवन मृत्यु से संघर्ष करते अब उसकी मौत हो गई। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है।

बृजराज शर्मा पहुंचे जोधपुर

जोधपुर, (कासं)। जम्मू और कश्मीर के मुख्य चुनाव आयुक्त बृजराज शर्मा ने सपरिवार ओसियां में श्री सच्चियाय माताजी मन्दिर के दर्शन किए। शर्मा मन्दिर की कलाकृति और पौराणिक पृष्ठभूमि को देखकर अभिभूत हो गए। उन्होंने मंदिर इतिहास की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर ट्रस्टी पुजारी रामविलास शर्मा ने उनका स्वागत किया। वे जोधपुर पहुंचने के बाद ओसियां में सच्चियाय माताजी मंदिर दर्शनार्थ को गए।

करंट से महिला की मौत

जोधपुर, (कासं)। जिले के ओसियां उपखण्ड क्षेत्र के ग्राम बिरसालू कला के जाणियों की ढाणी निवासी एक महिला की कृषि कार्य करते समय करंट लगने से मौत हो गई। जानकारी के अनुसार मोहनी देवी पत्नी चेतनराम जाणी सुबह खेत में काम कर रही थी तभी पास लगे विद्युत पोल की ताण के संपर्क में आ गई। बारिश के मौसम के चलते ताण में करंट दौड़ रहा था जिससे महिला कृषक की करंट लगने पर मौके पर हो मौत हो गई। सूचना पर खेड़ापा पुलिस मौके पर पंहुची तथा शव को कब्जे में लिया। बाद में पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

जाट समाज का समान समारोह आज

जोधपुर, कासं)। बनाड़ रोड स्थित तेजल विकास संस्थान एवं वीर तेजाजी न्यू जाट समाज संस्थान के तत्वावधान में 28 जुलाई को जाट समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। संस्थान अध्यक्ष रामदयाल डूडी ने बताया कि कार्यक्रम के संबंध में जानकारी दी।

जैसलमेर की एक गली में अधूरा रोड विवाद बन रहा

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर नगर परिषद के वार्ड संख्या 34 में एक गली का कार्य पिछले कई महीनों से अधूरा पड़ा है, वार्ड वासियों का कहना है कि गली में सीमेंट रोड(सी सी रोड) बनवाई जावे। कोलतार रोड (डामर रोड) नही बनाने देंगे। गली वासियों का कहना है कि रोड की खुदाई करवा कर सही लेवल से कार्य करवाया जावे। खुदाई नहीं करवाने पर बरसात की सीजन में पानी हमारे घरों में आएगा। गली वासियों का कहना सही है। वार्ड पार्षद सिकंदरअली का कहना है कि गली में डामर रोड का कार्य गली वासियों ने रुकवा दिया है, अब सी सी रोड नहीं बनेगी ना ही खुदाई करवा कर रोड बनवाई जाएगी। घरों में बरसाती पानी आएगा, ऐसा मुझे नहीं लगता।

वहीं वार्ड वासी गीता प्रजापत के नेतृत्व में पिछले दिनों जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी से मिले और अपनी व्यथा सुनाई। विधायक भाटी द्वारा आयुक्त नगरपरिषद लजपालसिंह को दूरभाष पर गली में खुदाई करवा कर सी सी रोड बनवाने का निर्देश दिया गया।

तत्पश्चात वार्ड वासी आयुक्त कार्यालय मिलने गये उन्हे आयुक्त ने आश्वासन दिया कि गली की खुदाई करवा लेवल सही करवा कर सी सी रोड शीघ्र बनवाई जाएगी।

शनिवार को पार्षद द्वारा वार्ड की अधूरी रोड वाली गली से लगाती गली में सी सी रोड का कार्य शुरू करवाया गया। तभी पूरे वार्ड वासी इकठे हो कर पहले पास वाली गली के अधूरे कार्य को पूरा करने का पार्षद से कहने लगे। घरों से बाहर आए वार्ड वासियों की बात पार्षद ने नहीं सुनी ओर ठेकेदार को कह कर पास लगती गली के सी सी रोड का कार्य शुरू करवा दिया।

इस दौरान वार्ड वासी रिटायर्ड कस्टम अधिकारी के पी गोस्वामी, रिटायर्ड पोस्ट मास्टर, जितेंद्र खत्री, दीपक शर्मा, गीता प्रजापत ने पार्षद से समझाइस की और पहले अधूरी रोड का सी सी वर्क करवाने की बात कही।

इस दौरान वार्ड वासियों ने आयुक्त से दूरभाष पर बात करके उनके द्वारा पिछले दिनों दिए गये आश्वासन की बात कही। तब आयुक्त द्वारा मौके पर कार्य कर रहे ठेकेदार को फोन पर बोला गया कि पहले अधूरे कार्य में खुदाई करवा कर सी सी रोड का कार्य शुरू करो इस दौरान पार्षद के प्रभाव में आकर ठेकेदार कहने लगा कि मैं तो जैसा पार्षद कहेगा, वैसा ही करूंगा।

मौके पर उपस्थित वार्ड के जेईएन के मूकदर्शक बने रहने पर वार्डवासियों को गुस्सा आया और ठेकेदार को नया कार्य नहीं करने दिया। जिस पर नगर परिषद प्रशासन द्वारा पार्षद के साथ में मौके पर पुलिस जाब्ता भेज कर नये काम करने का विरोध करने वाले वार्ड वासियों को हटाकर कार्य को शुरू करवाना चाहा गया।

वार्डवासी लगभग 50 महिलाओं ने पुलिसकर्मियों को अपनी परेशानी बताई और कहा कि ऐसी स्थिति में पार्षद अपनी जिद् से अगर नया कार्य शुरू करवाएगा तो सभी महिलाएं रोलर के आगे सड़क पर सोकर विरोध करेंगी।

मामला आखिर उच्च अधिकारियों तक पहुंचा, उन्होंने पुलिस जाब्ते को वापिस बुला लिया और नया कार्य रुकवा दिया।

इस दौरान वार्डवासी कह रहे थे कि पार्षद सिकंदरअली कांग्रेस के सिंबल से पार्षद बना है। पिछले दिनों नगर परिषद सभापति हरिवल्लभ कल्ला द्वारा पार्टी बदल कर भाजपा में शामिल होने के बाद पार्षद भी भाजपा में शामिल हो गया। अब वार्ड वासियों को आये दिन धमकियां देता है कि मैं जैसा चाहूंगा वैसा करूंगा। अधूरी रोड को सी सी रोड कोई हालत में नहीं बनने दूंगा।

वार्डवासी गीतादेवी प्रजापत का कहना है कि पार्षद सिकंदर अली वार्ड वासियों को आपस में लड़वाना चाहता है, परन्तु हम सब वार्ड वासी पार्षद की मनमानी नहीं चलने देंगे। अधूरे कार्य में गली की खुदाई करवा कर सही लेवल करके सी सी रोड बनवा कर रहेंगे।

वार्ड संख्या 34 के पार्षद सिकंदर अली का कहना है कि अधूरी रोड बनाने को लेकर मेरे द्वारा मना नहीं किया गया है। अभी तो जो कार्य शनिवार को शुरू करवाया है, पहले वहीं होगा, अधूरा कार्य नहीं।

जैसलमेर नगर परिषद के वार्ड संख्या 34 की एक गली में अधूरा पड़ा रोड कार्य लोगों व पार्षद के मध्य टकराव को बढ़ा गया। फोटो-राष्ट्रदूत

विधि सेमिनार का आयोजन 10 अगस्त को

बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की विभिन्न शाखाओं की बैठक आयोजित

जोधपुर, (कासं)। बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की कार्यकारिणी समिति की बैठक शनिवार को भुवनेश शर्मा, चेयरमैन की अध्यक्षता में बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के कार्यालय में संपन्न हुई।

समिति ने अधिवक्ताओं से प्राप्त नाम परिवर्तन के लिए आवेदन पत्रों पर विचार विमर्श कर उनका उचित निस्तारण किया गया। समिति ने बार कौंसिल ऑफ राजस्थान द्वारा राजस्थान उच्च न्यायालय के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में विधि सेमिनार का आयोजन 10 अगस्त को जोधपुर में किये जाने के संबंध में विस्तार से विचार विमर्श किया। उपरोक्त विधि सेमिनार में उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ मुख्य अथिति के रूप में शिरकत करेंगे। एक दिवसीय विधि सेमिनार में बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के पूर्व सदस्यों का सम्मान किये जाने का भी निर्णय लिया गया। सेमिनार में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश, उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशगण, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सहित पूर्व न्यायाधीशगण, बार कौंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं सदस्गण, वरिष्ठ अधिवक्तागण, बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के पूर्व सदस्गणगण, राज्य में स्थित समस्त बार संघों के अध्यक्ष/सचिव या उनके प्रतिनिधि इत्यादि कई अतिथि इस समारोह में भाग लेंगे। बैठक में जगमाल सिंह चौधरी, राजेश पंवार, नवरंग सिंह चौधरी एवं घनश्याम सिंह राठौड़ सदस्यगण उपस्थित थे एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों में सुरेश चन्द्र श्रीमाली, को-चेयरमेन, बार कौंसिल ऑफ इण्डिया, सैयद शाहिद हसन, कुलदीप कुमार शर्मा, सुशील कुमार शर्मा एवं राम प्रसाद सिंगारिया भी उपस्थित थे।

बार कौंसिल ऑफ इण्डिया एडवोकेटस वेलफेयर फण्ड कमेटी फॉर द स्टेट ऑफ राजस्थान समिति की बैठक चेयरमेन सुरेश चन्द्र श्रीमाली की अध्यक्षता में बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के-कार्यालय में सम्पन्न हुई, इसमें जगमाल सिंह चौधरी, कुलदीप कुमार शर्मा ने भी भाग लिया। बैठक में 24 अधिवक्ताओं के मृत्यु दावों का निस्तारण कर उनके आश्रितों को आठ लाख चालिस हजार रूपए (8,40,000/-) एवं बीमारी दावों में 28 अधिवक्ताओं को चार लाख छियालिस हजार रूपए (4,46,000/-) के भुगतान की स्वीकृति प्रदान की। इस प्रकार समिति ने कुल 52 दावों का निस्तारण कर कुल बारह लाख छियासी हजार रूपए (12,86,000/-) स्वीकृत किए गए।

बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की पंजीयन समिति की बैठक कुलदीप कुमार शर्मा की अध्यक्षता में बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के कार्यालय में संपन्न हुई एवं पंजीयन समिति ने करीब 500 नए अधिवक्ताओं का पंजीयन किया गया। पंजीयन समिति के सदस्य डॉ. महेश शर्मा एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य जगमाल सिंह चौधरी, राजेश पंवार एवं घनश्याम सिंह राठौड भी बैठक में उपस्थित थे।

भारतीय विधिज्ञ परिषद् ने सर्टिफिकेट एंड प्लेस ऑफ प्रैक्टिस (सत्यापन) नियम, 2015 की प्रशासनिक समिति- 1 की बैठक भी बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के कार्यालय में सैयद शाहिद हसन की संयोजकता में संपन्न हुई। समिति ने करीब 266 अधिवक्ताओं का नवीनीकरण किया गया। नवीनीकरण समिति के सदस्य सुशील कुमार शर्मा एवं कपिल प्रकाश माथुर उपस्थित थे।

महंत भीमगिरी महाराज ने श्रद्धालुओं के लिए सड़क मांगी

बालोतरा के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी भुवनेश्वर सिंह चौहान ने हल्देश्वर महादेव मंदिर के दर्शन किए। फोटो-राष्ट्रदूत

बालोतरा, (निसं)। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी भुवनेश्वर सिंह चौहान ने जिला कलेक्टर बालोतरा के निर्देश पर बजट घोषणा के तहत स्वीकृत हुए हल्देश्वर महादेव मंदिर का निरीक्षण किया तथा रुद्राभिषेक करके स्वयं के साथ आमजन के विकास की कामना की।

पंचायत समिति सिवाना के विकास अधिकारी दिनेश सिंह भाटी ने बताया कि आम नागरिकों की आस्था का केंद्र तथा रमणीक स्थान हल्देश्वर महादेव मंदिर पर अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला बालोतरा भुवनेश्वर सिंह चौहान ने पहुंच कर राज्य सरकार की बजट घोषणा से संबंधित व्यवस्थाओं एवं संभावनाओं का जायजा लिया। जंगल के पशु पक्षियों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था पर्याप्त हो तथा जंगल हरा भरा रहे। इसके लिए छोटे-छोटे एनीकट का निर्माण करवाया जाए तथा चेक डैम को बनाकर बहता पानी को धीमी गति प्रदान की जाए। अत: पानी का ठहराव जल जंगल जमीन के लिए उपयुक्त रहता है।

साथ ही एक श्रेष्ठ और विशाल सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया जाए एवं सौर ऊर्जा उत्पन्न करने वाले उपकरण को स्थापित किया जाए। इसके लिए निर्देश प्रदान किया मंदिर के महंत भीमगिरी जी महाराज के द्वारा मुख्य रूप से भक्तों के आने-जाने हेतु सड़क निर्माण की मांग रखी गई। आवागमन की सुविधा आसान होगी तो सभी सुविधाएं धीरे-धीरे स्वत ही विकसित हो जाएगी। इसलिए सबसे पहले रास्ते का निर्माण करवाया जाए।

अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला बालोतरा भुवनेश्वर सिंह चौहान ने जिला कलेक्टर बालोतरा को निवेदन करने हेतु सहमति प्रदान की, ताकि राज्य सरकार की योजना के अनुसार निश्चित समय में तकमिना बनाकर कार्य को निश्चित समय में पूर्ण करवाया जा सके।

इस अवसर पर विकास अधिकारी दिनेश सिंह भाटी, प्रधान मुकन सिंह राजपुरोहित एवं क्षेत्र के मौजिज व्यक्ति एवं ग्रामीण जन उपस्थित थे।

विहिप की दो दिन की बैठक शुरू

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में विश्व हिंदू परिषद की केंद्रीय प्रबंध समिति की दो दिवसीय बैठक की शनिवार सुबह 9:30 बजे महेश्वरी भवन रातानाडा में शुरू हुई।

कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार, संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे महामंत्री बजरंग लाल बांगड़ा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सह सर कार्यवाह भैयाजी जोशी, रामजन्म भूमि ट्रस्ट महासचिव चंपत राय भी हिस्सा ले रहे हैं।

दो दिवसीय केंद्रीय प्रबंध समिति की बैठक की शुरुआत शनिवार को महेश्वरी भवन में दीप प्रज्वलन के साथ हुई। बैठक में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री बजरंग लाल ने दो दिन के कार्यक्रमों के बारे में बताया। गौ रक्षा को लेकर बोलते हुए कहा कि गाय की रक्षा गौशाला में नहीं हो सकती, बल्कि गाय की रक्षा किसान, गृहस्थ के खूंटे पर ही होगी।

गाय की सेवा ठीक उसी प्रकार से करें जिस प्रकार से हम अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा करते हैं। दूध के लालच में गाय की सेवा नहीं करें।

मंदिर को लेकर बोलते हुए कहा कि प्राचीन समय में मंदिर पूजा पाठ के ही स्थान नहीं थे। ये हमारी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक चेतना के केंद्र थे।

पिछले एक हजार वर्षों से विधर्मियों ने हमारे मंदिरों को सिर्फ विध्वंस ही नहीं किया, उन्होंने हमारे चरित्र का हमारे आध्यात्मिक मूल्यों का, विकास का, परम्पराओं का, समाज की आत्मा विध्वंस किया।

इसलिए मंदिरों का आध्यात्मिक वैभव वापस प्राप्त हो इसके लिए इस पर चर्चा की जाएगी।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में धर्मांतरण तेजी से बढ़ रहा है, इसे रोकना होगा। इसके लिए उन्होंने केंद्रीय प्रबंध समिति के बैठक में आए अलग-अलग प्रांत के पदाधिकारी को जानकारी दी कहा कि यदि ढाई हजार लोगों की घर वापसी विश्व हिंदू परिषद करवाता है वहीं दूसरी तरफ इससे भी अधिक गुना में हिंदुओं को दूसरे धर्म में कन्वर्ट किया जा रहा है। इसे हमें तेजी से रोकना होगा। इसके अलावा जनसंख्या नियंत्रण, गौ रक्षा, हिंदू सनातन संस्कृति का प्रचार प्रसार करने सहित कई विषयों पर जानकारी साझा की।

बच्चों को नशे के नुकसान की जानकारी दी

जालोर, (कासं)। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जालोर एवं ग्रामीण उत्थान मानव संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में नशा मुक्ति जागरूकता अभियान के तहत महात्मा गांधी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रामदेव कॉलोनी जालोर में बच्चों को नशे से दूर रहने व उसके होने वाले दुष्परिणाम के बारे में जानकारी दी।

बच्चों को पैंफलेट वितरण कर अपने परिवार में नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करने का आव्हान किया गया तथा नशा मुक्ति पुनर्वास केंद्र के क्रियाकलापों के बारे में जानकारी दी गई तथा बच्चों को नशा मुक्ति के लिए शपथ दिलाई गई। इस कार्यक्रम में विद्यालय स्टाफ, नशा मुक्ति केंद्र के परियोजना समन्वय हीरालाल, काउंसलर रावत राम सहित अन्य उपस्थित रहे।

सैनी ने निरीक्षण किया

बालोतरा, (निसं)। अतिरिक्त जिला कलेक्टर नानूराम सैनी के द्वारा शनिवार को अपने भ्रमण के दौरान पचपदरा, निवाई, थोब, सिमरखियां, मंडली स्थित विद्यालय, पीएचसी, सीएचसी, ई मित्र, आयुर्वेद औषधालय, पशु चिकित्सा केंद्र एवं उचित मूल्य की दुकान का निरीक्षण किया।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर नानूराम सैनी ने पचपदरा, निवाई, सिमरखियां स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का औचक रूप से निरीक्षण कर बच्चों से पाठ्य पुस्तक, गणवेश वितरण सहित मध्यान भोजन की जानकारी ली।

उन्होंने बच्चों को मिलने वाले मध्यान भोजन के गुणवत्ता आदि की जानकारी लेने के साथ ही विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति की जानकारी लेने के पश्चात संबंधित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को निर्देश दिए कि बच्चों को दिए जाने वाले मध्यान भोजन पौष्टिक एवं गुणवत्ता पूर्ण रहे। शिक्षक विद्यालयों में समय पर उपस्थित रह कर शिक्षण कार्य करायें। विद्यालय में अनुपस्थित रहने वाले शिक्षकों पर कठोर कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

डाइंग कैडर घोषित करने से नाराज चिकित्सक शिक्षकों की पाली में अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी है। फोटो-राष्ट्रदूत

सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण किया

बालोतरा, (निसं)। पचपदरा विधायक डॉ. अरुण चौधरी ने शनिवार को जेरला स्थित सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण किया।

प्रप्त जानकारी के अनुसार पचपदरा विधायक डॉ. अरुण चौधरी ने शनिवार को जेरला स्थित सिवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण कर कार्यप्रणाली को जाना एवं अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट जिले की महती आवश्यकता है, जो अपशिष्ट जल को प्रभावी ढंग से साफ और शुद्ध करके हमारे पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा में महत्वपूर्ण हैं।

प्रदूषण को रोकने के लिए, भूमि एवं जल निकायों में निपटान से पहले अपशिष्ट जल को प्रभावी ढंग से उपचारित करना अनिवार्य है।

उन्होंने कहा कि पानी को प्राकृतिक स्त्रोतों में वापस छोड़ने से पहले हानिकारक प्रदूषकों को हटा दिया जाए, जिससे प्रदूषण को रोका जा सके और पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहे।

इस दौरान उन्होंने वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत पौधारोपण किया। इस दौरान उपखंड अधिकारी राजेश कुमार, नगर परिषद सभापति सुमित्रा जैन, नगर परिषद के सहायक अभियंता अखाराम समेत अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत भेडाना पंचायत समिति गुडामालानी (बाडमेर)

क्रमांक: ग्राप/निविदा/2024/09 दिनांक: 22.07.2024

निविदा सूचना संख्या:- 02,03/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से ग्राम पंचायत भेडाना के कार्य सी सी इन्टरलॉकिंग रोड निर्माण कार्य भीलो का बास से हरिजनो की बस्ती GP भेडाना एवं टीन शेड मय मंच निर्माण कार्य ग्राम मठ भेडाना हेतु मय दो वर्ष का दोष निवारण एवं उनके सुधार (डिफेक्ट लाइबिलिटी पीरियड) हेतु सा. नि. वि. में उपयुक्त श्रेणी (न्यूनतम डी श्रेणी) में पंजीकृत एवं संवेदक कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग डाक एवं दूर संचार रेल्वे या अन्य राज्य सरकार / केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनो जो कि राजस्थान सरकार के डी एव उच्च श्रेणी ("सी" "बी" "ए" "एए" एए) के संवेदको के समकक्ष हो से निर्धारित परिपत्र मे आनलाईन निविदाए आमत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विस्तृत विवरण वेबसाइट www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eprocrajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

UBN No. - PKW2425WSOB00034
UBN No. - PKW2425WSOB00035

ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत भेडाना पं. स. गुडामालानी

सरपंच ग्राम पंचायत भेडाना पं. स. गुडामालानी

OFFICE OF GRAM PANCHAYAT MODHA PANCHAYAT SAMITI FATEHGARH

S.No./GPM/2024-25/36 DATE: 26.07.2024

TENDER NIT 02/2024-25

Under MGNREGA & RDPR Scheme in the FY 2024-25 in Gram Panchayat Modha, E-Tender are invited from the willing manufacturers and suppliers, for the supply of construction material for the construction work to be carried out. Further detail regarding the tender can be checked on the web portal https://sppp.rajasthan.gov.in, & https://eproc.rajasthan.gov.in.

NIB CODE - PFT2425A0051, BID/UBN- PFT2425GLOB00064

Sarpanch, Gram Panchayat Modha , Panchayat Samiti Fatehgarh

OFFICE OF THE GRAM PANCHAYAT MODHA, PANCHAYAT SAMITI, FATEHGARH

Sr.No./GPM/2024-25/36/ Date-26.07.2024

TENDER NIT 02/2024-25

Under MGNREGA & RDPR Scheme in the FY 2024-25 in Gram Panchayat modha E- Tendet are invited from the willing manufactures and suppliers for the supply of construction material for the construction work to be carried out further detail regarding the tender can be checked on the web portal https://sppp.rajasthan.gov.in & https://eproc.rajasthan.gov.in .

UBN : PFT2425A0051
BID/UBN : PFT2425GLOB00064

Sarpanch Gram panchayat , Modha Panchayat Samiti Fatehgarh

देवी राम मुल्लाका हत्याकांड के एक और आरोपी को दबोचा

दिल्ली-हरियाणा में मजदूरी कर काट रहा था फरारी, गंगापुर सिटी में नादौती थाना क्षेत्र से पकड़ा, 25 हजार का इनामी है आरोपी

जयपुर। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने डीग जिले में 3 साल पहले बहुचर्चित रहे देवी राम मुल्लाका हत्याकांड के एक और आरोपी को पकड़ लिया है। इस पर एस.पी. डीग द्वारा 25 हजार रुपए का इनाम घोषित है। दिल्ली एवं हरियाणा में मजदूरी कर फरारी काट रहा आरोपी शिव हरि गुर्जर करीब 15 दिन पहले ही नादौती आया था।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स एवं अपराध दिनेश एम.एन. ने बताया कि उपमहानिरीक्षक पुलिस श्री योगेश यादव के सुपरविजन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एजीटीएफ विद्या प्रकाश के नेतृत्व में इनामी, वांछित अपराधियों, गैंगस्टर इत्यादि के बारे में सूचना के संकलन के लिए एएसआई शैलेंद्र कुमार शर्मा, हैड कांस्टेबल मदनलाल शर्मा व कांस्टेबल बृजेश कुमार शर्मा की एक टीम भरतपुर रेंज की ओर रवाना की गई है। एडीजी एमएन ने बताया कि शनिवार को एएसआई शैलेंद्र कुमार शर्मा व कांस्टेबल बृजेश कुमार शर्मा को सूचना मिली कि हत्याकांड में शामिल 25 हजार का इनामी आरोपी शिवहरी गुर्जर पुत्र रामजीत निवासी मुल्लाका थाना कामां अपने जानकार से मिलने गंगापुर सिटी में थाना नादौती इलाके की होडाहेली गांव में आया हुआ है। सूचना पर थाना पुलिस की मदद से एजीटीएफ ने जाल बिछाकर आरोपी को सरकारी स्कूल के पास से दबोच लिया।

डीग में तीन साल पहले बहुचर्चित रहे देवी राम मुल्लाका हत्याकांड का एक और आरोपी पकड़ा गया।

एमएन ने बताया कि 11 जून 2021 की सुबह खरीदारी करने बाइक लेकर कामां के लिए निकले देवी राम गुर्जर निवासी मुल्लाका पर पुरानी रंजिश के चलते गांव के ही रामावतार पुत्र रामप्रसाद पक्ष के 20-22 व्यक्तियों ने लोहे के सरियों और लाठियों से हमला कर दिया और मरा समझकर हवाई फायर करते हुए गांव आये। गांव में भी फायरिंग की जिसमे तीन बच्चे व चार अन्य घायल हो गये। गंभीर घायल देवीलाल ने जयपुर लाते समय महुआ से पहले दम तोड दिया था। मामले में थाना पुलिस द्वारा घटना के बाद आठ व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया था, 13 आरोपी फरार हो गये। जिन पर 25-25 हजार का इनाम घोषित किया गया। फरार आरोपियों में से आठ आरोपियों को एजीटीएफ ने कामां पुलिस के सहयोग से पकड़ा, एक आरोपी को कामां पुलिस ने पकड़ लिया। बाकी बचे चार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एजीटीएफ विद्या प्रकाश के नेतृत्व में की गई इस संपूर्ण कार्रवाई में एएसआई शैलेंद्र शर्मा एवं कांस्टेबल बृजेश कुमार की विशेष भूमिका एवं हैड कांस्टेबल मदन लाल शर्मा व कांस्टेबल सोहन की तकनीकी भूमिका रही। कार्रवाई में थाना नादौती से उपनिरीक्षक देवेंद्र कुमार शर्मा मय टीम एएसआई चन्द्र हुसैन, कांस्टेबल धारा सिंह, रवि कुमार, कपिल, बनवारी लाल व जसराज का सराहनीय सहयोग रहा।

आकाशीय बिजली गिरने से पांच महिलाएं झुलसी

निवाई में आकाशीय बिजली गिरने से झूलसी महिलाओं का उपचार सरकारी अस्पताल में कराया।

निवाई, (निसं)। उपखण्ड मुख्यालय की ग्राम पंचायत भरथला के गांव जीवली की बैरवा ढाणी में शनिवार की दोपहर अचानक मौसम के करवट बदलते ही आंधी व बरसात के दौरान आकाशीय बिजली गिर जाने से गांव की पांच महिलाएं झुलस गईं। आकाशीय बिजली गिरने से जीवली निवासी अनीता पत्नी मुकेश बैरवा, ग्यारसी पत्नी छीतर बैरवा, मीरा बैरवा, संतरा पत्नी रामलाल बैरवा, काली देवी पत्नी अमरचन्द बैरवा झुलस जाने से घायल हो गई। घायलों को परिजनों ने सामुदायिक चिकित्सालय झिलाय में भर्ती करवाया जहां प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया।

सरकारी स्कूल पर आकाशीय बिजली गिरी

मालपुरा, (निसं)। उपखण्ड क्षेत्र के हिंडोला गांव में तेज गर्जना के साथ सरकारी स्कूल भवन पर आकाशीय बिजली गिरने से उपकरण जल गये। विद्यालय के शिक्षक सुरेश विजय ने बताया कि तेज गर्जना के साथ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन पर बिजली गिरने से विद्यालय भवन में दारारें आ गई तो कुछ हिस्सा क्षतिग्रस्त भी हो गया। बिजली गिरने से विद्यालय में लगे कम्प्यूटर, प्रिंटर, इन्वर्टर, पंखें व लाइटें सहित अन्य उपकरण जल गये। वहीं शहर के दूदू रोड पर सड़क के बीच बने डिवाइडर पर नगरपालिका प्रशासन द्वारा लगाई गई रोड लाइटों की कंट्रोल डीपी के नंगे तार जमीन पर फैले होने से शनिवार को करंट प्रवाहित तारों की चपेट में आने से दूधारू भैंस अकाल मौत का शिकार हो गई।

युवक फांसी के फंदे पर झूला, मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र की आजाद नगर कॉलोनी में अज्ञात कारणों के चलते एक 32 वर्षीय युवक ने फांसी के फंदे पर झूल कर आत्महत्या कर ली। प्रताप नगर थाना अधिकारी गजेंद्र सिंह नरूका ने बताया क्षेत्र वासियों ने टेलीफोन के जरिए सूचना दी की क्षेत्र के एक मकान से अजीब सी बदबू आ रही है । इस आधार पर पुलिस ने गृह स्वामी के परिजनों से संपर्क कर मौके पर पहुंच देखा तो मकान के मुख्य द्वार का गेट अंदर से बंद था जिसे परिजनों की मौजूदगी में तोड़कर अंदर देखा गया तो पंखे से युवक की लाश लटकी हुई थी। पुलिस का कहना है कि यह लाश तीन से चार दिन पुरानी थी जो की सड़ गल चुकी थी। मृतक का नाम नंदकिशोर पिता जगदीश व्यास है जो की पूर्व में टेंट का व्यवसाय करता था। बुधवार को पिता से मिला था और उसके बाद से परिजनों के संपर्क में भी ही नहीं था।

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER, PHED, CIRCLE BARMER
Tel:02982-220253, Email: edphed@gmail.com, secircle.barmer@rajasthan.gov.in
No. SE/PHE/Bmr/NIT 01/2024-25/1299-1316 Date: 23/07/2024
NOTICE INVITING BIDS NIB No. 2024-25/01
Bids for Work of

01	Annual Rate Contract for construction and commissioning of tube Wells By Rotary Rig Machine with P,L& J Of Pipe Line under Circle Barmer. UBN: PHE2425WSRC03167	120.00 Lacs.

are invited from interested bidders upto 13.08.2024 up to 6:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state; and departmental website.
SUPERINTENDING ENGINEER PHED CIRCLE BARMER
DIPR/C/6539/2024

कार्यालय अधिशाषी सार्वजनिक निर्माण विभाग नगरखण्ड उदयपुर
S.No:TS/NIT File/2024-25/D- 1032 Date 18-07-2024
NOTICE INVITING BID (NO.06/2024-25)
Bids for Various Roads work in PWD City Division Udaipur are invited from insterested bidders upto 6.00 PM (time) 12-08-2024 (date). Other Particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://Sppp.raj.nic.in) of the state; and departmental website.
SPPP NIB No, PWD2425A0804

S.No.	UBN No.
1	PWD2425WSOB03077
1	PWD2425WSOB03078

(R.K.Mundra) EXECUTIVE ENGINEER PWD CITY DIVISION UDAIPUR
DIPR/C/6580/2024

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PHED DIVISION KARAULI
PH NO.-07464-250219, E-Mail-ee.kar.phed@rajasthan.gov.in
Notice Inviting Bid
Bids for the work of solar installation under phed division karauli are invited from interested bidders up to 05.08.2024 Other Particulars of the bid may be visited on the procurement portal eproc.rajasthan.gov.in and sppp.raj.nic.in website.
NIB CODE:-PHE2425A1427

S.N.	NIT NO.	UBN	S.N.	NIT NO.	UBN
1	57/2024-25	PHE2425WSOB03158	2	58/2024-25	PHE2425WSOB03159
01	Total work		02		
02	Total Estimate Cost		28.50 Lac		
03	Bid submission end date		05.08.2024 up to 06.00 PM		
04	Bid opening date		06.08.2024 at 02.00 PM		

(Prahlad Meena) Executive Engineer Public Health Engineering Department Division Karauli
DIPR/C/6559/2024

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड सांचौर
क्रमांक-अअ / सांचोर/2024-25/533 दिनांक-22.07.2024
निविदा सूचना संख्या : 05 वर्ष 2024-2025
NIB No.: -.PWD 2425A0852
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से भवन निर्माण कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवैदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में भवन निर्माण कार्य जिनकी लागत राशि रू. 217.00 लाख है के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदां आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	25 जुलाई 2024, 9:30 बजे से 17 अगस्त 2024, सायं 06:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in http:// eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवष्यक है। कार्यवार यू.बी.एन संख्या निम्नानुसार है।
1. UBN: PWD2425WSOB03223
(ओम प्रकाश) अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड सांचौर
DIPR/C/6578/2024

हिण्डौन में 27 जून से अब तक 335 एमएम बारिश

- पिछले 18 घंटे से रुक-रुक कर बूंदा-बांदी जारी
- जिला अस्पताल के इमरजेंसी गेट पर भरा पानी

हिण्डौन सिटी। क्षेत्र में शनिवार को मानसून मेहरबान रहा। यहां सुबह से रुक-रुक कर बरसात हो रही है। हिण्डौन में शुक्रवार देर रात बारिश शुरू हुई, जिसमें सुबह तक 2 एमएम बारिश दर्ज हुई। इसके बाद दोपहर को घने बादल छाए और बारिश शुरू हुई, जिससे तापमान में 2 से 3 डिग्री की गिरावट आई। हिंडौन में 27 जुलाई तक 335 एमएम बारिश हो चुकी है। आज बारिश के बाद लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली, वहीं कई क्षेत्रों में जलभराव बना रहा।

गौशाला रोड, मोक्षधाम, कटरा बाजार, मनीराम पार्क, और जिला अस्पताल मार्ग में बारिश होते ही सडकों पर पानी भर गया। जिला अस्पताल के इमरजेंसी गेट पर पानी भरने से मरीजों को काफी परेशानी हुई। हिंडौन में दोपहर 2 बजे बाद तेज बारिश शुरू हुई। क्षेत्र के कई इलाकों में पिछली बारिश का पानी नहीं निकल पाया है। बाजना रोड पर जलभराव और टूटी हुई सडकों से गुजरते हुए वाहन चालक काफी परेशान रहे। मौसम विभाग ने अगले 2-3 दिन मानसून के सक्रिय रहने की संभावना जताई है। इसी के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों में पानी भरा हुआ है, जिससे सरसों की बोई फसलें अंकुरित होकर डूब गई।

मैनेजर पर चाकू से हमला करने वाला आरोपी गिरफ्तार

नौ चोकी पाल की पहाड़ी पर छिपा हुआ था आरोपी

पुलिस की गिरफ्त में चाकू से हमला करने वाला आरोपी।

राजसमंद, (निसं)। जिला मुख्यालय के मुखर्जी चौराहा स्थित सुपरमार्केट मैनेजर पर हमले के मामले में पुलिस ने एक बडी कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही, एक नाबालिग को भी हिरासत में लिया गया है।

कांकरोली थानाधिकारी हनवंत सिंह सोढा ने बताया कि शुक्रवार को हुई चाकूबाजी की घटना के बाद से ही पुलिस टीम आरोपियों की तलाश में जुटी हुई थी। कांकरोली पुलिस ने राजनगर पुलिस कंट्रोल रूम से अतिरिक्त बल बुलाकर शहर और आसपास के इलाकों में आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। पुलिस को सूचना मिली कि मुख्य आरोपी रामचंद्र राजनगर के नौ चोकी पाल की दार्यी पहाडी पर छिपा हुआ है। इस सूचना के आधार पर पुलिस दल तुरंत नौ चोकी पाल पहुंचा। वहां पुलिस को आरोपी की मोटरसाइकिल मिली जिससे उनकी जानकारी और पुख्ता हो गई। आरोपी पहाडी पर चढ कर घनी झाडियों में छिप गया। पुलिस भी आरोपी को पकडने के लिए पहाडी पर चढी, लेकिन अंधेरा होने के कारण और इलाके में तेंदुए के होने के कारण खोजी अभियान मुश्किल हो गया। पुलिस ने पहाडी को चारों ओर से घेर लिया और रात 1० बजे तक सर्च ऑपरेशन जारी रखा।

इस दौरान शुरू हुई बारीश ने खोजी अभियान को और कठिन बना दिया। रात 11 बजे जब आरोपी रामचंद्र भील पहाडी से उतरा तो पहले से घात लगाए पुलिस दल ने उसे दबोच लिया। वासोल निवासी रामचंद्र और उसका एक नाबालिग साथी इस वारदात में शामिल थे, जिसे पुलिस ने हिरासत में ले लिया। रामचंद्र का मेडिकल परीक्षण करवाने के बाद उसे कांकरोली थाने लाया गया, जहां उसने अपना अपराध स्वीकार किया। पुलिस जांच में सामने आया है कि चाकूबाजी की इस घटना का मुख्य कारण आरोपी और सुपरमार्केट के मैनेजर के बीच काम को लेकर हुए विवाद था। मैनेजर द्वारा आरोपी को नौकरी से निकाले जाने पर आरोपी ने अपनी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचा हुआ महसूस किया और बदले की भावना से भर गया। इसी कारण वह अपने नाबालिग दोस्त के साथ मिलकर मैनेजर की पिटाई करने की योजना बनाई। घटना को अंजाम देने से पहले दोनों ने गांजा और शराब का सेवन किया जिससे उनका गुस्सा और बढ गया।

'संविदा पर लगे शिक्षकों को फिलहाल नहीं हटाया जायेगा'

बीकानेर। राजस्थान के महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में एक साल के लिए संविदा पर लगाए गए साढ़े चार हजार शिक्षकों को आगामी निर्देश तक कार्य मुक्त नहीं किया जाएगा। इस संबंध में शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने आदेश जारी किए।

प्रदेश के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक) को भेजे आदेश में कहा गया है कि सहायक अध्यापक, लेवल-प्रथम व द्वितीय संविदा भर्ती 2023 के अन्तर्गत संविदा आधार पर नियुक्त सहायक अध्यापक (अंग्रेजी एवं विज्ञान-गणित) की एक वर्ष की संविदा अवधि पूर्ण हो रही है। ऐसे कार्यरत संविदा सहायक अध्यापकों को आगामी निर्देश प्राप्त होने तक विद्यालय से कार्यमुक्त नहीं किया जाए। इन सभी की उपस्थिति पूर्वानुसार नियमित रूप से उपस्थिति पंजिका में दर्ज की जाए। किसी भी विद्यालय में सहायक अध्यापकों को उपस्थिति दर्ज करने से मना करने पर समस्त दायित्व संस्था प्रधान का माना जाएगा।

राजस्थान के साढ़े चार हजार शिक्षकों को अंग्रेजी माध्यम में एक साल के लिए 16 हजार 900 रुपए प्रति माह पर लगाया गया था। इन शिक्षकों का कार्यकाल 28 जुलाई को समाप्त होने वाला था, जिसके बाद से इनमें जबरदस्त बेचैनी थी। लेकिन अब भजनलाल सरकार ने इन शिक्षकों को बड़ी राहत दी है।

निचले तबके को त्वरित न्याय मिलें, इसके लिए बार और बैंच संयुक्त रूप से प्रयास करें : बिरला

- 'सशक्त न्याय व्यवस्था विकसित भारत के संकल्प का मूल आधार है'

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में हाईकोर्ट की प्लेटिनम जुबली के अवसर पर शनिवार को सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमीनार मे लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा- सबसे निचले तबके को त्वरित न्याय मिल सकें, इसके लिए बार और बैंच को संयुक्त रूप से प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा सशक्त न्याय व्यवस्था विकसित भारत के संकल्प का मूल आधार है। आम जनता को सुलभ, सस्ता और त्वरित न्याय दिलाने में न्यायालयों की भूमिका महत्वपूर्ण है। पेंडिंग मुकदमों के समाधान के लिए नवाचार और नवीन टेक्नॉलजी का अधिकतम उपयोग आवश्यक है।

बिरला ने आज राजस्थान उच्च न्यायालय की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कि राजस्थान उच्च न्यायालय ने देश को कई अत्यंत विशिष्ट न्यायाधीश और प्रख्यात अधिवक्ता दिए हैं , जिन्होंने कानून और न्याय के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक यात्रा में न्यायालय के निर्णयों ने राजस्थान सहित देश के सभी लोगों के हितों को सुरक्षित और सशक्त किया है। बिरला ने सशक्त न्याय व्यवस्था को विकसित भारत के संकल्प का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा कि इस दिशा में सरकार और न्यायपालिका दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। आम जनता के लिए सुलभ, सस्ता और त्वरित न्याय की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए लोक सभा अध्यक्ष ने विचार व्यक्त किया कि इस दिशा में न्यायालयों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। सरकार ने न्याय व्यवस्था पर अनावश्यक बोझ कम करने के लिए कई वैधानिक परिवर्तन किए हैं, बिरला ने आशा व्यक्त की कि न्यायपालिका भी इस दिशा में बराबर की भूमिका निभाएगी। उन्होंने न्यायालयों में लंबित मुकदमों के निपटान और न्याय व्यवस्था की खामियों को दूर करने के लिए नए इनोवैशन और नई टेक्नॉलजी के अधिकतम उपयोग पर बल दिया।

जोधपुर हाईकोर्ट की प्लेटिनम जुबली पर आयोजित सेमिनार में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का स्वागत किया।

उन्होंने युवाओं का आव्हान करते हुए कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में उनकी विशेष भूमिका रहेगी। सेमिनार में एडवोकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रतना राम ठोलिया ने सभी सभी अतिथियों का स्वागत किया। सेमिनार में सुप्रीम कोर्ट के जज संदीप मेहता ने भी संबोधित किया। बताया- एक मामला ऐसा आया जब 14 साल से एक कैदी को पैरोल नहीं मिली। तब पता चला कि उसका नंबर नहीं आया। इसके बाद सभी कैदियों के लिए एक ऐप बनाया गया और कैदियों की जानकारी उस ऐप पर डाली गई। इस तरह से ई-प्रिजनर ऐप आया और सभी कैदियों की जानकारी उसमें है। यही व्यवस्था उन्होंने गुवाहाटी उच्च न्यायालय में करवाई। इस तरह से टेक्नॉलोजी से जेल में बंद हर कैदी को न्याय पहुंच रहा है। सुप्रीम कोर्ट के जज पंकज मित्तल ने बताया कहा राजस्थान हाईकोर्ट ने जिस तरह कॉज लिस्ट को प्रिंट करना बंद कर दिया, यह बड़ी उपलब्धि है। मैं जब इलाहबाद हाईकोर्ट में एक्सपेंडिचर कमेटी में था। तब कॉज लिस्ट का बकाया बिल करीब 63 करोड़ रुपए था, जो गर्वमेंट प्रेस को देना था।

उन्होंने कहा कि कॉज लिस्ट ऑनलाइन करने से काफी पैसा बचा है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी कार्य किया है। विधि मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा- विधानसभा भी जल्द ही पेपर लेस होगी। उन्होंने कहा कि हाई कोर्ट में जिस तरह टेक्नोलॉजी का उपयोग हो रहा है, विधानसभा में भी होगा। कार्यक्रम में जस्टिस पुष्पेंद्र सिंह भाटी ने राजस्थान हाईकोर्ट में उपयोग की जाने वाली टेक्नोलॉजी से अवगत करवाया। कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट जज पंकज मित्तल, जज संदीप मेहता,राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव व अधिवक्ता मौजूद रहे।

राजस्थान सरकार का उपक्रम
RIICO GROW WITH RAJASTHAN

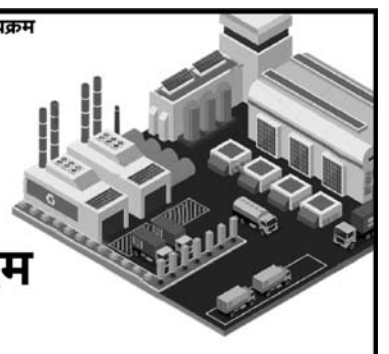

स्थापित करें नए उद्यम विकास की ओर बढ़ाएं कदम
सरल ई-नीलामी के माध्यम से
आधारभूत सुविधाओं युक्त औद्योगिक क्षेत्रों में करें उद्यम की स्थापना

कुल भूखण्ड	औद्योगिक भूखण्ड	व्यावसायिक भूखण्ड	दुकानें	कियोस्क
77	57	5	14	1

ईएमडी	ऑनलाईन बिड
प्रारम्भ तिथि : 29 जुलाई, 2024 (प्रातः 10:00 बजे)	प्रारम्भ तिथि : 13 अगस्त, 2024 (प्रातः 10:00 बजे)
अंतिम तिथि : 12 अगस्त, 2024 (सायं 06:00 बजे)	अंतिम तिथि : 16 अगस्त, 2024 (सायं 05:00 बजे)

05 आबू रोड़	07 अजमेर	04 अलवर	02 बालोतरा	03 बांसवाड़ा
03 भीलवाड़ा	08 भिवाड़ी-II	02 बीकानेर	01 दौसा	01 धिलोठ
05 जयपुर (उत्तर)	02 जयपुर (दक्षिण)	02 ईपीआईपी, सीतापुरा (जयपुर)	02 झालावाड़	03 जोधपुर
01 कोटा	04 किशनगढ़	07 नागौर	01 नीमराना	02 पाली
03 राजसमंद	02 सवाई माधोपुर	02 सीकर	03 श्रीगंगानगर	02 उदयपुर

25% भुगतान के बाद, शेष 75% भुगतान 11 किस्तों में 8.5% ब्याज के साथ या 120 दिनों के भीतर ब्याज रहित भुगतान या टर्म लोन स्कीम के तहत भूमि की लागत का 75% तक का ऋण 5 साल की पुनर्भुगतान अवधि एवं 8.5% ब्याज के साथ
*T&C Apply
सामान्य प्रश्नों के लिए स्कैन करें
Raj.Samvad/C/24/2912
राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रियल डवलपमेन्ट एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302005
ई-नीलामी हैल्पलाइन नं. 0141-4593250, 4593237, व्हाट्सएपः +91 9001306515, ई-मेलः riico@riico.co.in
ईएमडी विवरण, रजिस्ट्रेशन एवं भूखण्ड से सम्बंधित जानकारी के लिए देखें www.riico.co.in

भारत विश्व का सबसे बड़ा और सफल लोकतंत्र : देवनानी

युवा संसद में विधानसभाध्यक्ष ने कहा कि देश के युवा जातिवाद, क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर नेशन फर्स्ट की भावना के साथ कार्य करें

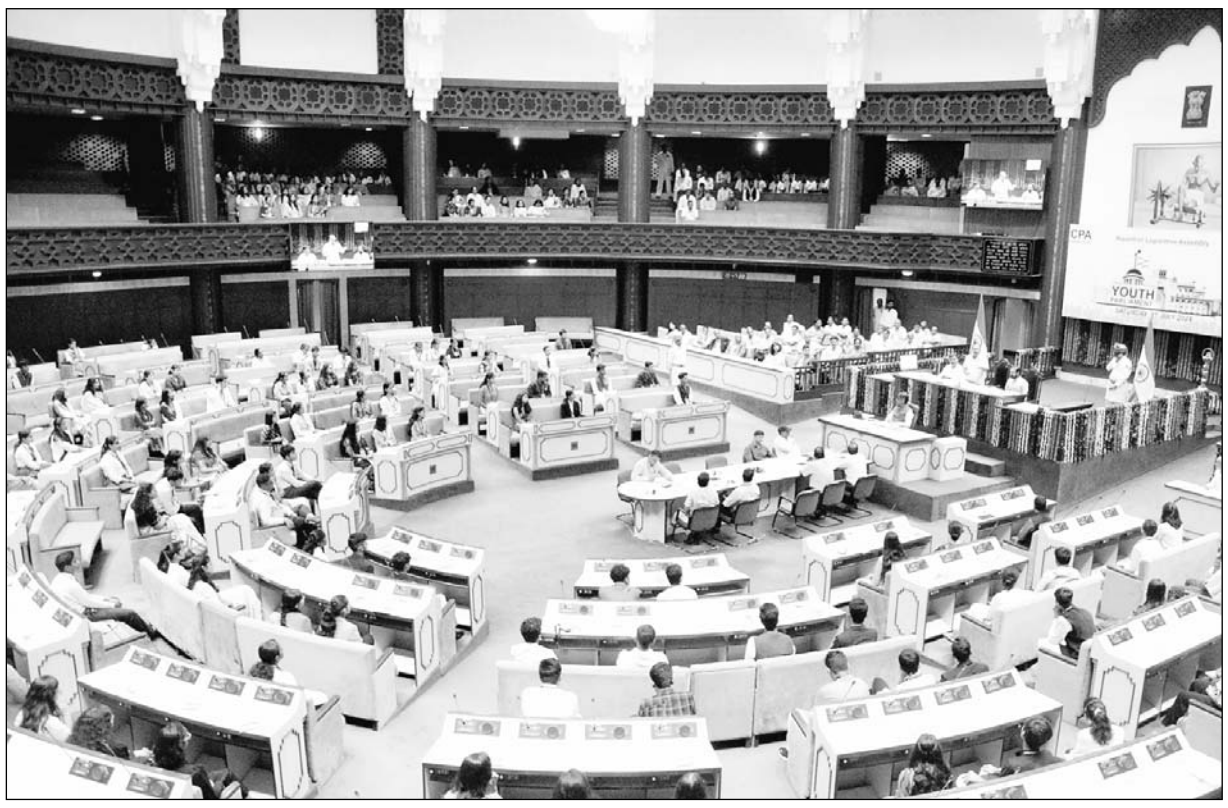

विधानसभा में शनिवार को राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ की राजस्थान शाखा की ओर से युवा संसद समारोह का आयोजन हुआ।

- 'वर्तमान में कई बार असंसदीय घटनाओं के कारण मन व्यथित होता है। असहनशीलता इसका प्रमुख कारण है'
- देवनानी की पहल पर युवाओं को हुआ विधानसभा का अनुभव

जयपुर, (वि.सं.)। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा एवं सफल लोकतंत्र है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को महान बनाने में यहाँ की समृद्ध संवैधानिक परम्पराए, नियम और प्रक्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भविष्य में इस महान लोकतंत्र को इसी प्रकार जीवित रखने में देश के युवाओं का अहम योगदान होगा। विधानसभा में शनिवार को राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ की राजस्थान शाखा के तत्वावधान में आयोजित युवा संसद समारोह को स्पीकर देवनानी संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही न्याय सभा तथा राज सभा के रूप में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं रही हैं। भारत के जन जन के मन में लोकतांत्रिक सिद्धांतों और व्यवस्थाओं के प्रति गहरी आस्था है। उन्होंने युवा संसद में उपस्थित युवाओं का आव्हान किया कि इस संसदीय व्यवस्था में भागीदार बनकर इस महान लोकतंत्र में एक नयी ऊर्जा का संचार करें।

देवनानी ने कहा कि वर्तमान में कई बार असंसदीय घटनाओं के कारण मन व्यथित होता है। असहनशीलता इसका प्रमुख कारण है। उन्होंने युवाओं को कहा कि सहनशील और शिक्षित बनकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से राष्ट्र निर्माण के लिए हमेशा कार्य करते रहे।देवनानी ने कहा कि संविधान के आधार पर ही देश में विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका कार्य करती है इसलिए देश के युवाओं को संविधान में अपनी गहरी आस्था रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के युवा जातिवाद, क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर नेशन फर्स्ट की भावना के साथ कार्य करें। राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए एक भारत श्रेष्ठ भारत की दिशा में काम करें।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि हमेशा दीन-दुखी, पिछड़े और गरीबों के उत्थान के लिए कार्य करें और समाज में अंधकार और अशिक्षा को दूर करने में अपने तन-मन-धन से हर संभव सहयोग करें। उन्होंने स्वयं के शिक्षक रहते हुए अपने अनुभव साझा करते हुए सदन में उपस्थित विद्यार्थियों को कहा कि मन में जिज्ञासा और गुणात्मक कार्यों में हमेशा अपनी रूचि बनाये रखे।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि प्रदेश के विकास, कानूनों की क्रियान्विति आदि का निर्धारण विधानसभा से ही होता है। इस पवित्र सदन में आना बहुत सौभाग्य की बात है। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को कहा कि सदन में बैठकर यहाँ की कार्यप्रणाली को बारीकी से समझकर एक जागरूक नागरिक बने। उन्होंने विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के सीमित उपयोग और फेक न्यूज़ के प्रति जागरूक रहने को कहा। विधायक और राष्ट्रमंडल संसदीय संघ की राजस्थान शाखा के सचिव संदीप शर्मा ने समारोह में स्वागत और आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि संघ द्वारा आयोजित किये जा रहे युवा संसद कार्यक्रमों से युवाओं को लोकतंत्र की स्वस्थ परम्पराओं, दूसरे के विचारों का सम्मान और विधायिका के कामकाज को बारीकी से समझने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

कार्यक्रम में विधान सभा के प्रमुख सचिव महावीर प्रसाद शर्मा, विशिष्ट सचिव भारत भूषण शर्मा सहित विधानसभा के अधिकारी व कर्मचारीगण तथा एस.एम.एस विद्यालय के अध्यापकगण मौजूद थे। इस कार्यक्रम में 41 विद्यालयों के 181 विद्यार्थियों द्वारा विधायक के रूप में सदन में बैठकर जनहित के प्रश्न पूछे गए एवं उनके द्वारा ही स्पीकर, मुख्यमंत्री, नेता प्रतिपक्ष व मंत्री की भूमिका निभाई गयी। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में 20 जयपुर के और 21 राज्य के अन्य जिलों व राज्यों के विद्यालयों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

खट्टर आज जयपुर में केंद्रीय बजट की जानकारी देंगे

जयपुर। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच ने कहा कि केंद्रीय बजट की जन कल्याणकारी नीतियों को आमजन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भाजपा की ओर से प्रदेश के संभाग मुख्यालयों पर प्रेसवार्ता आयोजित की जा रही है। इस दौरान प्रेसवार्ता में केंद्रीय मंत्री के साथ राज्य सरकार के मंत्री और भाजपा प्रदेश पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। आज अजमेर और कोटा संभाग मुख्यालय पर प्रेसवार्ता आयोजित की गई। इसमें अजमेर में केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी, भाजपा प्रदेश मंत्री महेंद्र कुमावत और देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भडाना तथा कोटा में केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के साथ उर्जा मंत्री हीरालाल नागर और भाजपा उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा ने प्रेसवार्ता की।

भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने गुरुग्राम पहुँचकर भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद प्रभात झा के दु:खद निधन पर उनकी पार्थिव देह के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवारजनों को ढांढस बंधाया।

पी.टी.आई.भर्ती परीक्षा में पास हुए पांच अभ्यर्थियों के खिलाफ में एफ.आई.आर. दर्ज

- एस.ओ.जी. की जांच में डिग्रियां फर्जी निकलीं, डमी अभ्यर्थी बैठाकर पास हुए।
- पी.टी.आई. को क्रिकेट, बैडमिंटन और बॉक्सिंग के बेसिक नहीं पता।

जयपुर। पीटीआई भर्ती परीक्षा 2022 में पास हुए पांच अभ्यर्थियों पर एसओजी ने एफआईआर दर्ज की है। अब जल्द ही इनकी गिरफ्तारी हो सकती है। जांच में सामने आया कि इन पीटीआई ने डमी अभ्यर्थी बैठकर परीक्षा पास की है। इनकी डिग्रियां भी फर्जी हैं। साथ ही इन्हें क्रिकेट बैडमिंटन, वॉलीबॉल और बॉक्सिंग जैसे खेलों की बेसिक जानकारी भी नहीं है। इसके लिए एसओजी ने एक महीने से जांच कर रही थी। अब एसओजी ने जांच रिपोर्ट सीनियर अधिकारियों को सौंप दी है।

सूत्रों के अनुसार, एसओजी की जांच में सामने आया है कि पीटीआई भर्ती परीक्षा-2022 में पास हुए अभ्यर्थियों के पास बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (बीपीएड) की सामान्य डिग्री तक नहीं है। आरोपियों ने फर्जी डिग्री लेकर सरकारी नौकरी हासिल की है। एसओजी द्वारा की गई जांच में अब तक पांच पीटीआई के खिलाफ मिली शिकायत की पुष्टि हो चुकी है।

सूत्रों के अनुसार, एसओजी की जांच में सामने आया है कि इन पांच पीटीआई को बेसिक गेम क्रिकेट, बैडमिंटन, वॉलीबॉल और बॉक्सिंग के यार्ड की जानकारी भी नहीं है। दो पीटीआई को टी-20 क्रिकेट मैच और टैस्ट मैच के बेसिक क्लियर नहीं हैं। क्रिकेट बॉल की मोटाई पूछने पर एक पीटीआई ने तो हाथ से इशारा करके बता दिया कि इतनी मोटी होती है।

एसओजी का कहना है कि राजस्थान स्टाफ सलेक्शन बोर्ड की ओर से शारीरिक शिक्षक भर्ती परीक्षा 2022 परीक्षा का आयोजन 25 सितम्बर 2023 को हुआ था। इस परीक्षा में बड़ी संख्या संख्या में डमी अभ्यर्थी बैठे। इनके कारण बड़ी संख्या में अयोग्य लोग राजस्थान सरकार के सरकारी स्कूलों में पीटीआई लग गए। पेपर लीक के आरोपियों की परीक्षा के दिन की मोबाइल लोकेशन चैक की गई। उनकी लोकेशन सेंटर के आसपास की नहीं मिली। ये लोग सेंटर ही नहीं जिले से भी बाहर थे।

एसओजी को हेल्पलाइन नम्बर से अलवर जिले में तैनात सरकारी स्कूल के पीटीआई के बारे में भी जानकारी मिली है। अलवर में लगे हुए कुछ पीटीआई भी इसी प्रकार से परीक्षा पास करके नौकरी पर लगे हैं। एसओजी ने उनके दस्तावेजों की जांच कर रही है। जांच पूरी होने पर उन के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच आगे की कार्रवाई की जाएगी।

एसओजी के अनुसार, जांच में पुष्टि होने के बाद पांच पीटीआई के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। एसओजी को उनके खिलाफ शिकायत मिली है। उनकी जांच चल रही है। इन लोगों से जल्द पूछताछ कर इनकी गिरफ्तारी की जाएगी। संबंधित जिला एसपी और हमारी यूनिट को एक्टिव कर दिया गया हैं।

सूत्रों के अनुसार जोधपुर के बिलाड़ा में रहने वाले महेन्द्र कुमार बिश्नोई के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। महेन्द्र का सेंटर शास्त्री नगर स्थित टैगोर विद्या भवन में था। आरोप है कि महेन्द्र ने अपनी जगह डमी कैंडिडेट बिठाकर परीक्षा पास की। जब आरोपी से बीपीएड का सर्टिफिकेट मांगा गया तो आरोपी ने अमरावती विवि से बीपीएड की फर्जी डिग्री दे कर नौकरी ले ली। वहीं श्रवण सिंह के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की गई है। श्रवण सिंह का सेंटर मुरलीपुरा में शहीद मेजर योगेश अग्रवाल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आया था। उसने अपनी जगह पर डमी कैंडिडेट बिठा कर परीक्षा पास की और पीटीआई बन गया। आरोपी ने एकलव्य यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश से बीपीएड की डिग्री लगाई, जो फर्जी निकली।

सांचोर के रहने वाले मनोहर लाल का जयपुर के मुरलीपुरा में सेंटर आया था। उसकी जगह डमी कैंडिडेट ने परीक्षा दी थी। शिकायत मिलने के बाद अभ्यर्थी मनोहर लाल के दस्तावेजों की जांच की। जांच में आवेदन पत्र, परीक्षा प्रवेश पत्र और जेएस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त बीपीएड की डिग्री फर्जी पाई। जालोर के सायला का रहने वाले ईश्वर सिंह का परीक्षा केंद्र मुरलीपुरा के प्रिंस स्कूल में आया था। उसकी जगह डमी कैंडिडेट ने परीक्षा दी थी। ओपीजेएस विश्वविधालय में बीपीएड सत्र 2018-20 अभ्यर्थी ईश्वर सिंह का नाम नहीं मिला। उसने शारीरिक शिक्षक की नौकरी बैक डेट में फर्जी तरीके से ओपीजेएस विश्वविधालय की डिग्री और मार्कशीट से प्राप्त की है। सांचोर के रहने वाले सुरेश कुमार का परीक्षा केंद्र महात्मा गांधी स्कूल में आया था। सुरेश के स्थान पर डमी कैंडिडेट ने परीक्षा दी थी। सुरेश कुमार ने जेएस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) से बीपीएड की डिग्री प्राप्त की थी। आवेदन पत्र में बीपीएड उत्तीर्ण करने का साल 2021 अंकित किया गया है। वहीं, जेएस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद द्वारा जारी मॉर्कशीट में चौथे सेमेस्टर का परिणाम 23 सितम्बर 2022 को जारी होना बताया है। इस प्रकार फर्जी डिग्री प्राप्त की गयी थी।

सुमेल एनीकट के अति.जल भराव की समस्या के निस्तारण के लिए क्या कर रही है सरकार?

- अदालत ने मामले में मुख्य सचिव और जल संसाधन विभाग के अधिकारियों सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से पूछा है कि गंगापुर सिटी के पास सुमेल नदी पर बने एनीकट के अतिरिक्त जल भराव से स्थानीय निवासियों को हो रही समस्या के निस्तारण के लिए क्या किया जा रहा है। अदालत ने मामले में मुख्य सचिव और जल संसाधन विभाग के अधिकारियों सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने यह आदेश भरत सिंह व अन्य की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

जनहित याचिका में अधिवक्ता सुरेन्द्र कुमावत लांबा ने अदालत को बताया कि मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के तहत सुमेल नदी पर एनीकट का निर्माण किया गया है। एनीकट के सर्वेक्षण और निर्माण के दौरान प्रशासन की ओर से यह बताया गया था कि इसकी भराव क्षमता 46.20 एमसीटी रहेगी और इसका जल भराव क्षेत्र बामन बड़ौदा की संपर्क रोड के पुल के स्तर तक रहेगा। जबकि नौगांवा इसके अपस्ट्रीम में रहेगा। वहीं एनीकट की दोषपूर्ण डिजाइन और गलत निर्माण के कारण इसका जलमग्न एरिया 46.20 से करीब चार गुणा बढकर 184 एमसीटी हो गया। इसके अलावा अपस्ट्रीम एरिया से पांच किलोमीटर आगे तक जलभराव हो रहा है। जिसके कारण नौगांवा, बिदरखा, बामन बड़ौदा सहित आसपास के गांवों के निवासियों के खेतों और मकानों में जलभराव की स्थिति पैदा हो गई है। याचिका में बताया गया कि याचिकाकर्ताओं की भूमि को डूब क्षेत्र के उद्देश्य से न तो अधिग्रहित किया गया और ना ही उन्हें कोई मुआवजा मिला। वहीं हर मौसम में जलभराव होने के कारण खेतों में फसल की पैदावार खराब हो रही है, लेकिन उसका भी मुआवजा नहीं दिया गया। यहां हो रहे जलभराव के कारण उन्हें जीवन यापन में कठिनाई का सामना करना पड रहा है। इस संबंध में स्थानीय अधिकारियों को कई बार शिकायत दी गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। जिस पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

चयन प्रक्रिया में शामिल करने के आदेश

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को इन्हीं स्कूलों के रिक्त पदों की चयन प्रक्रिया में शामिल करने के आदेश देते हुए उनके ऑफ लाइन आवेदन स्वीकार करने को कहा है। वहीं अदालत ने मामले में शिक्षा सचिव और माध्यमिक शिक्षा निदेशक से जवाब तलब किया है। जस्टिस महेन्द्र गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश गजानंद यादव व अन्य की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार ने राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में शिक्षकों के खाली पदों पर भर्ती के लिए गत 11 जुलाई को भर्ती विज्ञापन निकाला। जिसमें यह शर्त रखी गई कि विशेष चयन प्रक्रिया से चयन के बाद अंग्रेजी माध्यम में पदस्थापित शिक्षक इसमें आवेदन करने के पात्र नहीं होंगे। याचिका में कहा गया कि याचिकाकर्ता शिक्षक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में ही दूसरे जिलों में कार्यरत हैं।

वकील को केस की फाइल नहीं देने वाले जिम्मेदारों के खिलाफ क्या कार्रवाई की : हाईकोर्ट

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने वन विभाग के कर्मचारी के चयनित वेतनमान नहीं देने से जुड़े मामले में सरकारी वकील के पास फाइल नहीं होने पर नाराजगी जताई है। इसके साथ ही अदालत ने अतिरिक्त मुख्य वन सचिव को निर्देश दिए हैं कि वह 29 जुलाई को व्यक्तिगत या वीसी के जरिए अदालत में उपस्थित होकर इस संबंध में अपना शपथ पत्र पेश करें। अदालत ने एसीएस को कहा है कि शपथ पत्र में बताए प्रकरण की सरकारी वकील को फाइल नहीं देने के क्या कारण हैं। इसके अलावा इसके लिए दोषी अधिकारी के खिलाफ क्या कार्यवाही अमल में लाई जा रही है। जस्टिस महेंद्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश राम प्रसाद मीणा की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान सरकारी वकील ने कहा कि उन्हें प्रकरण की फाइल उपलब्ध नहीं कराई गई है। ऐसे में वे प्रकरण में बहस नहीं कर सकते हैं। ऐसे में उन्हें चार सप्ताह का समय दिया जाए। वहीं याचिकाकर्ता के वकील विजय पाठक ने कहा कि गत सुनवाई को भी इसी आधार पर तारीख ली गई थी। इस पर अदालत ने नाराजगी जताते हुए कहा कि कोर्ट में रोजाना वन विभाग के ऐसे कई केस आ रहे हैं, जिनमें विभाग के वकील को प्रकरण की फाइल ही मुहैया नहीं कराई गई है। जिसके कारण मुकदमों की सुनवाई प्रभावित हो रही है। इस मामले में भी पूर्व में सरकारी वकील को फाइल नहीं होने के आधार पर बहस के लिए समय दिया गया था, लेकिन अभी तक उनके पास फाइल नहीं पहुंची है। ऐसे में विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव व्यक्तिश: या वीसी के जरिए हाजिर होकर इस संबंध में शपथ पत्र पेश कर सरकारी वकील को फाइल नहीं पहुंचाने के कारण और इसके दोषी अधिकारी के खिलाफ की गई कार्रवाई की जानकारी अदालत में पेश करें।

'आवंटी बिल्डर से जमा राशि वापस लेने का अधिकारी'

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान रियल एस्टेट अपीलीय अधिकरण ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि कंप्लीशन सर्टिफिकेट व ऑक्यूपेंसी सर्टिफिकेट बिना प्रोजेक्ट व बिल्डिंग के निर्माण को पूरा नहीं माना जा सकता। यदि बिल्डर ने ये सर्टिफिकेट प्राप्त नहीं किए हैं तो ऐसी स्थिति में आवंटी बिल्डर से अपनी जमा राशि वापस लेने का अधिकारी होगा। इसके साथ ही अधिकरण ने बिल्डर को निर्देश दिया कि वह अपीलार्थी को उसकी जमा राशि 45 दिन में ब्याज सहित लौटाए। अधिकरण ने यह आदेश आवंटी कैलाश गुप्ता की अपील को मंजूर करते हुए और सिक्विन रियल एस्टेट की अपील को दस हजार रुपए हर्जाने सहित खारिज करते हुए दिया। अधिवक्ता मोहित खंडेलवाल ने बताया कि अपीलार्थी बिल्डर ने वर्ष 2006 में स्टार सिटी के नाम से एक आवासीय प्रोजेक्ट शुरू किया।

नीट की तैयारी कर रही छात्रा 5वीं मंजिल से कूदी

जयपुर (कासं)। परिवार के साथ अपना 18वां जन्मदिन मनाने के दूसरे दिन युवती ने बिल्डिंग की 5वीं मंजिल से छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। वह नीट परीक्षा की तैयारी कर रही थी। मरने से पहले एक सुसाइड नोट भी लिखा, जिसमें परिजनों से माफी मांगी है। विद्याधर नगर थाना पुलिस ने सुसाइड नोट जब्त किया है। शव को कांवटिया हॉस्पिटल की मॉर्च्यूरी में रखवाया गया है।

पुलिस ने बताया कि छात्रा यति अग्रवाल (18) द्वारिका अपार्टमेंट विद्याधर नगर की रहने वाली थी। उसने 12वीं क्लास पास कर नीट परीक्षा की कोचिंग कर रही थी। गुरुवार को उसका जन्मदिन था। उसने अपना 18वां जन्मदिन अपने परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर मनाया था। शुक्रवार को उसने बिल्डिंग की 5वीं मंजिल से छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। छात्रा को लहूलुहान हालत में जमीन पर गिरा देखकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए कांवटिया हॉस्पिटल लेकर गई। पुलिस को मृतका के पास से नोटबुक में एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें परिवार की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने के लिए माफी मांगी है।

जयपुर फुट के विशेषज्ञ अब कोलकाता के तकनीशियनों को प्रशिक्षित करेंगे

जयपुर, (का.सं.)। भारत सरकार के संस्थान नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी और विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) के बीच एक एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए। इस एम.ओ.यू. के अन्तर्गत दोनों संस्थाएँ आपसी सहयोग से कोलकत्ता स्थित इस राष्ट्रीय शारीरिक गतिशील द्विव्यांगजन संस्थान के तकनीशियनों के बी.एम.वी.एस.एस. के विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित करेगा।

नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी (एन.आई.एल.डी.) के निदेशक डॉ. ललित नारायण और बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव (तकनिकी) डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता, सचिव भूपेन्द्र राज मेहता, बी.एम.वी.एस.एस. के तकनिकी परामर्शदाता डॉ. एम.के. माथुर और एन.आई.एल.डी. के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रसन्ना लेंका भी उपस्थित थे। एन.आई.एल.डी. केन्द्रीय सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय के द्विव्यांगों के पुर्नवास विभाग के अन्तर्गत कोलकत्ता के बोनहुगली स्थित संस्था है।

सचिव डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने बताया कि एन.आई.एल.डी. और बी.एम.वी.एस.एस. के बीच आपसी सहयोग के अन्तर्गत दोनों संस्थाऐं द्विव्यांगों के पुर्नवास के लिए प्रशिक्षण और अन्वेषण कार्य करेगा और एन.आई.एल.डी. के प्रशिक्षुओं को जयपुर फुट की निर्माण संस्था प्रशिक्षित करेगी। बी.एम.वी.एस.एस. एन.आई.एल.डी. के अपने एक केन्द्र की स्थापना कर प्रशिक्षण कार्य चलाएगी और इसके अन्तर्गत जयपुर फुट और अन्य उपकरणों के निर्माण की विधि का प्रशिक्षण देगा। इस अनुबन्ध के अन्तर्गत एन.आई.एल.डी. में द्विव्यांगजनों को जयपुर फुट और अन्य उपकरण उपलब्ध किए जाऐंगे, जिससे पश्चिम बंगाल और पूर्व भारत के बड़ी संख्या में द्विव्यांगजन लाभान्वित होंगे।

बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता ने कहा कि एन.आई.एल.डी. से अनुबन्ध से जयपुर फुट की गुणवत्ता और प्रौद्योगिकी का विस्तार होगा, जिसका लाभ देश भर के द्विव्यांगों को विशेष कर पूर्व और पूर्वोत्तर के राज्यों के द्विव्यांगों को मिलेगा। एन.आई.एल.डी. के निदेशक डॉ. ललित नारायण ने कहा कि इस एम.ओ.यू. के अन्तर्गत अब द्विव्यांगों को एन.आई.एल.डी. के माध्यम से जयपुर फुट लगाकर उनका पुर्नवास किया जा सकेगा।

भारत सरकार के संस्थान नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी और विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के बीच एक एम.ओ.यू. पर नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी के निदेशक डॉ. ललित नारायण और बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने हस्ताक्षर किए। इस दौरान बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता मौजूद रहे।

नाटक '12 एंग्री मैन' का मंचन

- रविवार सुबह 11 बजे संवाद प्रवाह, शाम 7 बजे भोपा भैरूनाथ का मंचन होगा

जयपुर । जवाहर कला केंद्र की सहभागिता में जारी नटराज महोत्सव के 5वें दिन शनिवार को नाटक '12 एंग्री मैन' का मंचन हुआ। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से स्नातक कर चुके विशाल विजय के निर्देशन में फोर्थ वॉल ड्रामेटिक सोसाइटी के कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय से रंगकर्मियों ने सुधि दर्शकों को एकटक नाटक देखने पर मजबूर कर दिया। आलम यह रहा कि रंगायन सभागार दर्शकों से पूरी तरह आबाद नजर आया। 12 एंग्री मैन अमरीकी लेखक रेजीनॉल्ड रोज कृत कोर्टरूम ड्रामा है। रंजीत कपूर ने इसका रूपांतरण किया है। नाटक में उस समय का जीवंत दृश्य देखने को मिलता है जब अदालती फैसले ज्यूरी मेंबर किया करते थे। अदालत में एक हत्या का मामला आता है। कार्यवाही के दौरान मेंबर्स के असली चेहरे, निजी विचार, पूर्वाग्रह उभरने लगते हैं। अंत में बड़ी मशक्कत के बाद वे निष्पक्ष फैसला सुनाते हैं। यह न्याय की जीत को दर्शाता है। बेहतर निर्देशन और बेजोड़ अभिनय दर्शकों के दिलों पर छाप छोड़ गया। 12 एंग्री मैन शीर्षक वाले नाटक में बीच-बीच में व्यंग्यात्मक संवाद के जरिए रंगकर्मियों ने दर्शकों को हँसने का मौका भी दिया। संचित जैन, अंकित शर्मा, योगेन्द्र सिंह, चित्रार्थ मिश्रा, कमलेश बैरवा, राहुल पंवार, रितिक शर्मा, संदीप मिश्रा, गौरव कुमार, आकिब मिर्ज़ा, दीपक गुर्जर, दीक्षांक शर्मा, विनय सैनी ने मंच पर किरदार निभाए। देशराज गुर्जन ने लाइट, विमल मीणा ने संगीत संयोजन संभाला व वरिष्ठ रंगकर्मी रुचि भार्गव नरुला ने जज के किरदार के लिए अपनी आवाज दी। गौरतलब है कि 28 जुलाई को नटराज महोत्सव के आखिरी दिन सुबह 11 बजे कृष्णायन में "संवाद प्रवाह" का आयोजन होगा, जिसमें भारत रत्न भार्गव, प्रेरणा श्रीमाली (जयपुर घराने की कथक नृत्यांगना), गोपालाचार्य जी एवं विशाल विजय विचार रखेंगे और बातचीत करेंगी रुचि भार्गव नरूला।

घर में घुसकर प्रोपर्टी डीलर पर हमला, रास्ते में दम तोड़ा

सायला, (निसं)। पुलिस थानाक्षेत्र के बावतरा में शुक्रवार रात्रि को कृषि बेरे पर स्थित घर के आंगन में सो रहे प्रोपर्टी डीलर विजयराज देवासी (47 वर्ष) पर हमलावरों ने धारदार हथियारों व लाठियों से ताबडतोड वार किए। उसके चीखने पर परिजन जागे, लेकिन तब तक हमलावर मौके से फरार हो गए। जबकि गंभीर घायल विजयराज को परिजन सायला के निजी होस्पीटल लेकर आए, जहां पर प्राथमिक उपचार के बाद भीनमाल ले जा रहे थे। बीच रास्ते में ही विजयराज ने दम तोड दिया।

मृतक के भाई मगनाराम पुत्र खीमाराम जाति देवासी उम्र 41 वर्ष निवासी बावतरा ने रिपोर्ट पेशकर बताया कि बावतरा के पादरू रोड पर कृषि बेरा आया हुआ है। 26 जुलाई को बडा भाई विजयराज (47 वर्ष) रात्रि 12 बजे के लगभग घर आकर आंगन में पलंग पर सो गया था।

मध्यरात्रि करीबन 1:30 से 2 बजे के बीच अज्ञात हमलावरों ने बेरे पर स्थित घर में घुसकर विजयराज को जान से मारने की नियत से धारदार हथियार व लाठियों से हमला करने लगे। तब विजयराज के चिखने पर भाभी रकमोदेवी पत्नी विजयराज जाग गई व चिल्लाने लगी। तब उठकर आया तो अज्ञात हमलावर गेट की तरफ भाग गये। जिनका पीछा करते हुए गेट तक पहुंचा तब तक हमलावर भाग चुके थे।

गेट के पास मोटरसाइकिल के टायरों के निशान पडे है। हमले में विजयराज के गंभीर चोटे आने पर सायला के एक निजी होस्पीटल लेकर पहुंचे, जहां प्राथमिक उपचार के बाद भीनमाल रेफर किया। इस दौरान बीच रास्ते में ही विजयराज की मृत्यु हो गई।

प्रोपर्टी डीलर विजयराज के हत्या की सूचना पर बडी संख्या में देवासी समाज के लोग सायला के सरकारी हॉस्पीटल में एकत्रित हुए तथा अज्ञात हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर मोर्चरी के आगे धरने पर बैठ गए। वही परिजनों ने आरोपियों की गिरफ्तारी नही होने तक मृतक के शव का पोस्टमार्टम करवाने से इन्कार कर दिया।

सायला पुलिस थाने के सामने देवासी समाज के लोगों ने प्रदर्शन किया। फोटो-राष्ट्रदूत

आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े परिजन

परिजनों के पोस्टमॉर्टम करवाने से इनकार करने और धरने पर बैठने की जानकारी मिलने पर एसपी ज्ञानचंद यादव, एएसपी रामेश्वरलाल, जालोर वृताधिकारी गौतम जैन व सीआई रामेश्रलाल ने मृतक के परिजनों व समाजबंधुओं से वार्ता की। लेकिन लोग आरोपियो की गिरफ्तारी की मांग पर अडे रहे। वही शाम 7 बजे तक आरोपियों का कोई सुराग नही लगने से शव नही उठाया गया।

प्रॉपर्टी को लेकर हमले की आशंका

विजयराज प्रॉपर्टी खरीदने और बेचने का काम करते थे। पुलिस ने प्रारंभिक जांच में प्रॉपर्टी को लेकर ही हमला करने की आशंका जताई है। कुछ संदिग्ध लोगों से पूछताछ की जा रही है। फिलहाल जांच जारी है।

आरोपियों का सुराग नहीं लगा

हत्या के बाद पूरे दिन में पुलिस हत्या के कारणों व हत्यारों का पता नही लगा पाई है। एसपी ज्ञानचन्द यादव ने बावतरा में घटनास्थल पर पहुंचकर मौका मुआयना किया। वही अलग अलग टीमें गठ्ठित कर आरोपियों की शिनाख्तगी के प्रयास शुरू किए। लेकिन पुलिस को कोई सुराग नही मिला है।

2013 में बसपा के टिकट पर लड़ा था विधानसभा चुनाव

विजयराज देवासी ने 2013 के विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के टिकट पर बा?मेर की सिवाना सीट से चुनाव लड़ा था, लेकिन हार गए।

विजयराज किसान होने के साथ-साथ प्रॉपर्टी का बिजनेस करता था। प्रॉपर्टी डीलर विजयराज के 1 बेटा और 6 बेटियां हैं। 2 बेटियों की शादी हो चुकी है। बेटा सबसे छोटा है।

नून पंचायत में पौधारोपण

प्रशासन एवं नारी शक्ति ग्रुप के तत्वावधान में नून की गोचर भूमि पर 1000 पेड़ लगाये। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। जिला प्रशासन एवं नारी शक्ति ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम पंचायत नून की गोचर भुमि पर 1000 पेड़ लगाये गये, जिसकी सुरक्षा के लिए द्वारा चारों तरफ़ तारबंदी व पानी की टंकी तथा ड्रिप लाइन की भी व्यवस्था की गई।

इस मौक़े पर अतिरिक्त ज़िला कलेक्टर जालोर शिवचरण मीणा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद जवाहर चौधरी, उपखण्ड अधिकारी जालोर शंकरलाल मीणा, विकास अधिकारी जालोर प्रदीप मायला, तहसीलदार जालोर गेनाराम भुंगेरिय, पूर्व उपप्रधान उम्मेद सिंह, सरपंच गीता कंवर, एडवोकेट तेज सिंह, सूरज पाल सिंह सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण मौजूद रहे। कलैक्टर पूजा पार्थ के मार्गदर्शन में रसद विभाग जालोर द्वारा सघन वृक्षारोपण अभियान अंतर्गत शनिवार को ग्राम पंचायत देलदरी, दिगांव, उमेदाबाद, धानपुर एवं नागणी गांव में एनएफएसए के लाभार्थियों से गुलमोहर, नीम, करंज, रेलिया एवं कनेर के पौधो का वृक्षारोपण करवा कर जिओ ट्री ऐप पर प्रत्येक पौधे की जिओ टैगिंग की गई।

जेवरात और नगदी चुराने का संदेह जताया

जोधपुर, (कासं)। शहर के राजीव गांधी कॉलोनी पाल लिंक रोड पर रहने वाली एक महिला ने अपनी मासी पुत्र पर घर से नगदी और जेवरात चुराने का संदेह जताते हुए पुलिस में रिपोर्ट दी है। देवनगर पुलिस इस बारे में अब पड़ताल कर रही है।

मूलत: लूणी हाल राजीव गांधी कॉलोनी पाल लिंक रोड पर रहने वाली मोनिका पत्नी जगदीश ओड़ ने रिपोर्ट दी। इसमें बताया कि वह 26 जुलाई को एक जगह पर पुडिय़ां बंटने के लिए चली गई थी। तब वह जल्दबाजी में अपना बटुआ घर पर भूल आई और बटुए में उसकी अलमारी की चाबी रखी थी। तब उसने अपनी मासी का फोन कर इसकी जानकारी दी। इस पर उसकी मासी घर पहुंची तो पता लगा कि मासी का बेटा भाई वहां पहले से मौजूद था। बाद में अलमारी चेक की तो पता लगा कि अलमारी से 50 हजार रूपए, सोने की टूसी, कंठी आदि सामान चोरी हो रखा था। अलमारी के ताले भी नहीं टूटे थे। पीड़ित महिला ने अपने मासी के पुत्र भाई पर जेवरात और नगदी चुराने का संदेह जताते हुए रिपोर्ट दी है।

जिला अस्पताल जालोर में शिविर का आयोजन किया

जालोर के राजकीय चिकित्सालय में हेपेटाईटिस आउटरिच शिविर का आयोजन किया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। जिला अस्पताल जालोर में शनिवार को हेपेटाइटिस नि:शुल्क आउटरीच जांच स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे आमजन के स्वास्थ्य का परीक्षण कर हेपेटाइटिस रोग के बारे में जागरूक किया गया।

हेपेटाइटिस ट्रीटमेंट केंद्र प्रभारी डॉ. विजय कुमार मीणा ने बताया कि राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम के तहत आउटरीच स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 200 लोगों की हेपेटाइटिस रोग की स्क्रीनिंग की गई।

साथ ही आमजन को हेपेटाइटिस रोग सम्बन्धित जानकारी भी दी गई।बताया कि एनवीएचसीपी कार्यक्रम के अंतर्गत शहर मे आउटरीच शिविर का आयोजन कर आमजन को हेपेटाइटिस रोग के बारे में जागरूक और हेपेटाइटिस रोग की स्क्रीनिंग शीघ्र निदान किया जा रहा है।

डॉ.मीणा ने बताया कि जिला अस्पताल में हेपेटाइटिस यूनिट द्वारा प्रतिदिन जांच की जाती है और मरीज को चरणबद तरीके से निदान एवं फॉलोअप पर लेकर शक मुक्त किया जा रहा है। समय-समय पर शहर की अन्य इरिस ग्रुप जैसे कच्ची बस्ती ट्रक ड्राइवर कचरा एकत्रित करने वाले लोग एवं अन्य व्यक्तियों की जांच कर संभावित पाए जाने पर उपचारित किया जा रहा है

विश्व हेपेटाइटिस दिवस की सात दिवसीय कार्य योजना शहर में जगह-जगह अवेयरनेस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को जिला अस्पताल में इस रोग के प्रति जागरूकता को को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ओपीडी में आने वाले व्यक्तियों की जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें रोग के लक्षण होने के कारण निदान उपचार आदि पर विस्तार से जानकारी दी गई।

आउटरिच शिविर में जिला कार्यक्रम अधिकारी अभिमन्यु सिंह , नर्सिंग अधीक्षक विशनाराम गर्ग, ओपीडी प्रभारी शहजाद खान , हेपेटाइटिस ट्रीटमेंट सेंटर के नर्सिंग ऑफिसर रमजान खां, छगनलाल गर्ग, राधे श्याम सोलंकी, पारसमल डॉ जीतू प्रजापत, नर्सिंग ऑफिसर सद्दाम हुसैन, हनवंत सिंह,एलटी भरत कुमार एवं रविन्द्र प्रताप सिंह आदि उपस्थित थे।

न्याय पालिका के कारण लोकतंत्रत मजबूत : बिरला

जोधपुर, (कासं)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने आज कहा कि न्याय पालिका मजूबत है, इसलिये भारत का लोकतंत्रत मजबूत है और इसकी विश्वसनीयता देश और दुनिया में एक अलग पहचान रखती है। राजस्थान हाईकोर्ट की प्लेटेनियम जुबली महोत्सव के तहत आयोजित सेमीनार में भाग लेने आए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एयरपोर्ट पर पत्रकारों से अनौपचारिक वार्ता कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि हमारी न्याय यात्रा बहुत स्पष्ट और पारदर्शी है। लोकतंत्रत में न्यायपालिका मजबूत होने से पूरा लोकतंत्र मजबूत रहता है। लोकतंत्र की मजबूती का आभास इसी से होता है कि लोकतंत्र की स्थापना के समय जो विकास के लिये 400 करोड़ से बजट यात्रा शुरू की थी वो आज 48 लाख हजार करोड़ पर पहुंच गई है।

उन्होंने कहा कि राजस्थान हाईकोर्ट का भी देश की न्याय पालिका में विशिष्ट स्थान रहा है। राजस्थान हाईकोर्ट के कई न्यायाधिपति ने सुप्रीम कोर्ट में भी न्यायाधपिति की भूमिका निभाई है। इसके साथ राजस्थान हाईकोर्ट में वकालात करने वाले कई अधिवक्ताओं ने सुप्रीम कोर्ट तथा अंतराष्ट्रीय कोर्ट में भी अपनी वकालात का लोहा मनवाया है।

उन्होंने कहा कि किसी भी देश के लोकतंत्र की सफलता में न्यायालय की भूमिका अहम होती है और यह अहमियत भारत देश में देखने को मिलती है।

यहां पर न्याय पालिका अपनी विशिष्ट भूमिका में है जिसके चलते न्याय सहज, सरल और सस्ता है। उन्होने बताया कि न्याय पालिका ने भी समय के साय परिवर्तन किये है।

सार-समाचार

'ईश्वर की शरण से समस्या का समाधान'

रेवदर, (निसं)। जैसे भगवान अनिर्वचनीय है वैसे ही भगवान की योग माया शक्ति भी अनिर्वचनीय है। वाणी से उसका प्रतिपादन संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारे घबराने या चिंता करने से समस्या का समाधान नहीं होना, जो होना होता है वह तो होकर ही रहेगा, किंतु ईमानदारी से उस समय यदि भगवान की में शरण चले जाए, तो हमारी समस्या का तत्काल समाधान हो जाता है। जो भगवान की शरण ग्रहण करता है, उसकी लाज भगवान के हाथ में होती है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कथा में परम गोभक्त सूर्यकांतजी जालान बनारस, भानु प्रकाशजी जालान रांची मौजूद रहे। इन उदगारों के जरिए मलूक पीठाधीश्वर राजेंद्रदास जी महाराज ने श्री गोधाम महातीर्थ पथमेडा की शाखा श्री मनोरमा गोलोक नंदगांव केसुआं में चल रही मंगलमय गोभागवत कथा में हजारों गौभक्तों को संबोधित किया। प्रतिदिन की भांति आज देशभर के संतों के साथ नंदगांव परिसर की परिक्रमा हुई। परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज के सानिध्य में आयोजित इस परि मा में मलूक पीठाधीश्वर राजेंद्रदासजी महाराज, अवधेश चैतन्यजी महाराज, प्रज्ञानंदजी महाराज, सुधानंदजी महाराज, राधाकृष्णजी महाराज, रविंद्रानंदजी महाराज, बलदेवदासजी महाराज, गोवत्स विट्ठलकृष्णजी महाराज सहित सैंकडों संत मौजूद थे। साधक धर्मशरणजी ने बताया कि अपने वजन के बराबर गौमाता के लिए भोजन सामग्री का दान करके तुलादान किया जाता है। चातुर्मास के दौरान देशभर से आए गो सेवक प्रतिदिन तुलादान में बढ चढकर हिस्सा ले रहे हैं। शास्त्रों में मान्यता है कि इस दान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। कथा मनोरथी नर नारायण जालान परिवार, चातुर्मास अनुष्ठान मनोरथी देवाराम जागरवाल कैलाशनगर, अन्नपूर्णा प्रसाद मनोरथी दलपतजी मंडवारिया का परम श्रद्धेय स्वामी गोऋषि स्वामी श्री दत्तशणानंद महाराज ने सम्मान करते हुए कहा कि सनातन हिन्दु समाज के ऐसे गोभक्तो के श्रद्धा, समर्पण व सहयोग से गोसेवा जैसे प्रकल्प को बल मिलता है।

आधार बनाने के लिए परेशान ग्रामीण

धोरीमन्ना, (निसं)। धोरीमन्ना क्षेत्र के सेडवा व धोरीमना में दोनों क्षेत्रों के बीच में आधार कार्ड को संशोधन को लेकर एक ही केंद्र वे सेंटर होने के कारण ग्रामीणों एवं विद्यार्थियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वार्ड पंच केवलराम गवारिया ने बताया कि धोरीमना पोस्ट ऑफिस में स्टाफ एवं तकनीकी मशीन के कारण समय पूर्व काम नहीं हो रहा है। सुखराम सारण मिठडा ने कहा कि कई दिनों से चक्कर काट रहा हूं। काम नहीं हो रहा है। पीराराम पूनिया बामरला ने बताया कि सेडवा क्षेत्र धोरीमना क्षेत्र के कई गांव से दूर-दूर से लोग आते हैं। काम नहीं होने के कारण आखिर में निराश होकर वापस लौटते हैं। विद्यार्थी गुणेशाराम सियोल पाबूबेरा ने बताया कि आधार कार्ड में नाम संशोधन नहीं होने के कारण स्कूल में विद्यार्थियों का एडमिशन नहीं हो रहा है। इसीलिए छात्र छात्राओं की पढाई बर्बाद हो रही है। सोहनीदेवी विश्नोई कोजा ने बताया कि मैं सुबह 7 से शाम शाम तक भीड में इंतजार करती हूं। एक सप्ताह से शकर कट रही हूं। हालात जस की तस है। ग्रामीणों ने बताया कि इसी समस्या को लेकर डेढ महीना हो गया है। छात्र-छात्राओं की पढाई बर्बाद हो रही है। लेकिन कोई समस्या का समाधान नहीं हो रहा है। सरकार से आग्रह है कि आधार कार्ड के संशोधन का अलग-अलग सेंटर खोला जाए। पाबूराम बिश्नोई हीरकन का थान विद्यार्थी रमेश पूनिया बामरला विष्णु पूनिया उदय सिंह राजपूत बुल डालूराम मूढ कोठाला रीडमलराम जाट भीमथल गंगाराम लोल लोलो की बेरी भगाराम सेवर इत्यादि सैकडो की संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। केंद्र एवं सेंटर केकड दूदू चालकना कारटिया इत्यादि ग्राम पंचायत में आधार बनाया जाता है।

बोरली ने कार्रवाई की मांग की

जालोर, (निसं)। बीते दिनों में भीनमाल में स्थित जी.के. गोवाणी राजकीय महाविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं और महाविद्यालय प्राचार्य एवं सह प्राचार्य के बीच विवाद बढता जा रहा है। महाविद्यालय में नव प्रवेशित विद्यार्थियों की सहायता के लिए एबीवीपी कार्यकर्ताओं द्वारा हेल्प डेस्क लगाए जाने के कारण महाविद्यालय प्राचार्या शिप्रा रानी एवं सह प्राचार्या कोमल कत्याल द्वारा एबीवीपी कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट एवं अभद्र व्यवहार किया गया। जिसके संबंध में भाजपा जिलाध्यक्ष श्रवणसिंह राव बोरली ने शनिवार को उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा एवं शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को पत्र लिखकर शीघ्र कार्यवाही की मांग की। उन्होंने पत्र में बताया कि महाविद्यालय विद्यार्थियों द्वारा नव प्रवेशित विद्यार्थियों के सहयोगार्थ संचालित हेल्प डेस्क लगाने के कारण महाविद्यालय विद्यार्थियों के साथ मारपीट एवं अभद्र व्यवहार करना निंदनीय हैं। उन्होंने उप मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री को पत्र लिख कर बताया की महाविद्यालय प्राचार्य शिप्रा रानी पर पूर्व में भ्रष्टाचार के बार-बार आरोप लगते आ रहे हैं, आरोपों के कारण महाविद्यालय प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों पर फेल करने और कॉलेज से निष्कासित करवाने की धमकिया देकर, उनकी आवाज दबाने का कार्य किया जाता हैं। उन्होने पत्र में इस विषय की उच्च स्तरीय जांच के लिए कमेटी गठन करवाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के साथ दुर्व्यवहार करने हेतु प्राचार्य एवं सह-प्राचार्य के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करवाने की मांग की।

'पोकरण पालिका को विशेष दर्जा दें'

पोकरण, (निसं)। पोकरण विधायक महंत प्रतापपुरी महाराज ने सदन में राजस्थान सरकार के बजट सत्र में विभिन्न विषयों एवं समस्याओं पर सरकार का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि पोकरण पालिका आजादी से पूर्व 1936से कार्य कर रही है। पालिका की आर्थिक स्थिति दयनीय है। पिछली सरकार में पालिका को आवंटित मद विषय में त्रुटि में संशोधन करने की मांग रखी। विधायक ने मांग रखते हुए कहा कि एतिहासिक परमाणु नगरी पोकरण नगरपालिका क्षेत्र में विकास कार्यो के लिए विशेष पैकेज देकर परमाणु नगरी व पर्यटक नगरी के रूप मे विकसित करते हुए पालिका क्षेत्र में विकास कार्यों के तहत सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट,पानी पाइपलाइन बिछाने,बिजलीपोल लगाने,एव पालिका अध्यक्ष मनीष पुरोहित कि शहरी क्षैत्र के विकास कार्यों कि मांग सदन में रखते हुए सड़क निर्माण व पोकरण पालिका सहित अन्य विभागों में रिक्त पदों को भरने कि मांग रखते हुए ऐतिहासिक धरोहर व सरोवर के रख रखाव के साथ जीव-जंतु व पर्यावरण संरक्षण के लिए नदी, आगोरो कि जमीन का संरक्षण कि मांग रखी। वही विधायक ने पोकरण विधानसभा क्षेत्र में पर्यटको को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विशेष मद आवटन का पैकेज देने कि मांग पुरे जोर से रखी। राजस्थानविधानसभामे लगातार तीसरी बार बजट सत्र के दौरान महन्त प्रतापपुरी महाराज ने पोकरण विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को सदन में रखा।

एक टांका एक पौधा कार्यक्रम चलाया

बालोतरा, (निसं)। ग्राम पंचायत गिडा की शायर कंवर को प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में आवास निर्माण, स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण, महात्मा गंधी नरेगा योजनान्तर्गत भूमि सुधार एंव टांका निर्माण का लाभ मिल चुका है। इस परिवार के लिए पक्की छत उपलब्ध होने से आंधी- बरसात आदि मे कोई परेशानी नही झेलनी पडती है, शौचालय निर्माण होने से खुले में शौच से भी मुक्ति मिल गई तथा टांका निर्माण से स्वच्छ बरसाती पानी मिलने से जल जनित बीमारियों से भी निजात मिल गई। जिला कलैक्टर सुशील कुमार यादव एवं अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी भुवनेश्वर सिंह चौहान के आदेशानुसार हरियालो राजस्थान कार्यक्रम की कडी में एक पौधा मां के नाम, एक टांका एक पौधा कार्य म के तहत डॉ. भंवरलाल गोदारा विकास अधिकारी, साथ में विजयसिह, ग्राम पंचायत गिडा के ग्राम विकास अधिकारी महेन्द्रसिह समाजसेवी देवीसिह टीम के रूप में पांच पौधे लेकर शायर कंवर के घर गये, जहां टांके के पास मौके पर ही पांच खड्डे खुदवाकर पौधों को पालने की जिम्मेदारी शायर कंवर व उनके परिवार को दी। इस पर पुरे परिवार ने खुशी से पौधो को पालने की जिम्मेदारी ली। पांचों पौधों की जियो ट्री एप्प पर जियो टैग भी की गई।

जनजाति छात्रावास का निरीक्षण

बालोतरा, (निसं)। उपखंड अधिकारी राजेश कुमार ने शनिवार को अनुसूचित जाति जनजाति छात्रावास का निरीक्षण किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार उपखंड अधिकारी राजेश कुमार ने छात्रावास के रसोईघर का बारीकी से अवलोकन किया। लेकिन वहां खाने-पीने की सभी वस्तुएं न केवल व्यवस्थित रूप से रखी मिली, बल्कि छात्राओं के लिए गुणवत्ता युक्त भोजना बनता पाया गया। इसके अलावा साफ-सफाई का इंतजाम भी छात्रावास में काफी बेहतर मिला। उपखंड अधिकारी ने छात्रावास पहुंच साफ-सफाई व्यवस्था, बच्चों को मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता की जांच की। साथ ही बच्चों से चर्चा भी की। इस दौरान बच्चों द्वारा व्यवस्थाओं पर संतोष जाहिर किया गया।

सार-समाचार

पूंजला में जागरूकता दिवस मनाया

जोधपुर, (कासं)। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के संघटक यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी के विशेषज्ञ शिक्षक-चिकित्सकों की टीम द्वारा शिवराम नत्थुजी टाक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पूंजला में वर्ल्ड हेपेटाइटिस डे जागरूकता दिवस आयोजित किया गया। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी जोधपुर के प्राचार्य डॉ. गौरव नागर एवं शिविर प्रभारी डॉ राजेश कुमार कुमावत ने बताया कि होम्योपैथी विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप कुमार झा, डॉ. अंकिता आचार्य, डॉ. अंकिता उपाध्या, डॉ. राकेश कुमार मीना ने हेपेटाइटिस से संबन्धित विकार, लक्षण पर विस्तृत व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के छात्र-छात्राओं को हेपेटाइटिस बी के खिलाफ टीकाकरण व हेपेटाईटिस के रोकथाम जांच और उपचार की सेवाओं की जानकारी दी। छात्रों को सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रदीप कुमार झा ने व्यक्तिगत स्वच्छता बनाऐ रखने जैसे साबून एवं पानी से हाथ धोने एवं दवा लेने के लिए सुइयों को साझा ना करने की जानकारी दी। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. अंकिता उपाध्याय एवं डॉ. राकेश कुमार मीना कम्यूनिटी मेडिसिन विभाग ने हेपेटाइटिस सम्बन्धित विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित वर्ष 2024 की थीम यह कार्यवाही का समय है के बारे में बताया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान प्राधानाचार्य रेणु व्यास का सहयोग रहा तथा उन्होनें जागरूकता दिवस के आयोजन के लिए कुलपति प्रो.(वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति का आभार व्यक्त किया।

कौशल विकास प्रशिक्षण जारी

जालोर, (कासं)। कृषि विज्ञान केंद्र, केशवना में ग्रामीण युवाओं एवं महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए कौशल विकास के उद्देश्य से पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षण का मुख्य विषय मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण रहा। केंद्र के वैज्ञानिक सुमन शर्मा ने प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को बाजरा के मूल्य संवर्धन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। जिसमे महिलाओ को बाजार के बिस्कुट, नमकीन, पॉपकोर्न, केक, लड्डु, पापड़, राबोड़ी का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महिलाओ ने बाजरे के विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने कला कौशल का विकास किया। कृषि विज्ञान केंद्र के सश्य विज्ञान विशेषज्ञ बिरम सिंह ने जालोर क्षेत्र की मुख्य फसल बाजरा के मूल्य संवर्धन करने के लिए महिलओं को प्रेरित किया एवं जालोर जिले के लिए बाजरे की आयरन एवं जिंक से भरपूर बायोफोर्टिफाइड किस्म आर.एच.बी. 233 की विशेषताओं के बारे में महिलाओ को अवगत करवाया। इस अवसर पर डॉ पवन कुमार पारीक उद्यान विशेषज्ञ ने महिलाओं को सब्जियों के मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण के बारे में विस्तार से बताया। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओ को केन्द्र की विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का भ्रमण करवाया एवं वर्तमान में नयी तकनीकों के बारे में बताया। कार्यक्रम में मनीष चौधरी फार्म मेनेजर, अंशुमाली प्रोग्राम सहायक एवं भूपेंद्र सिंह एग्रोमेट आब्जर्वर उपस्थित रहे।

तीन दुकान के प्राधिकार पत्र निलम्बित

बालोतरा, (निसं)। बालोतरा शहर के तीन उचित मूल्य दुकानदारों के विरूद्ध विभागीय कार्यवाही करते हुए प्राधिकार पत्र निलम्बित किए गए। जिला रसद अधिकारी कंवराराम ने बताया कि बालोतरा शहर के उचित मूल्य दुकानदारों के विरूद्ध प्राप्त शिकायत के आधार पर कार्यवाही करते हुए जिला कलक्टर सुशील कुमार यादव द्वारा बालोतरा उपखण्ड अधिकारी राजेश कुमार से जांच करवाई गयी। जाँच रिपोर्ट जाँच में मनोज श्र ह्रहड्डु लक्ष्मीनारायण उचित मूल्य दुकानदार वार्ड संख्या 3० एवं वैकल्पिक वितरण व्यवस्था वार्ड संख्या 24, हस्तीमल पुत्र पूनमजी उचित मूल्य दुकानदार वार्ड संख्या 14 एवं वैकल्पिक वितरण व्यवस्था वार्ड संख्या 23 तथा गोविन्द पुत्र सीताराम उचित मूल्य दुकानदार वार्ड संख्या 16 द्वारा वितरण व्यवस्था में गम्भीर अनियमितता पायी गयी। उन्होंने बताया कि वितरण व्यवस्था में गम्भीर अनियमितताओं के मद्देनजर इन उचित मूल्य दुकानदारों के विरूद्ध विभागीय प्रकरण दर्ज करते हुए इनको जारी प्राधिकार पत्र राजस्थान खाद्यान्न एवं अन्य आवश्यक पदार्थ (वितरण का विनियमन) आदेश 1976 के तहत निलम्बित किये गये है तथा इनके विरूद्ध विधि सम्मत कार्यवाही प्रारम्भ की गयी।

महिलाओं का सावन मेला लगाया

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर के महावीर नगर स्थित महावीर भवन में स्माइली इवेंट्स की ओर से महिलाओं के लिए सावन राखी पर्व को लेकर दो दिवसीय महिला मेला का आयोजन किया गया। स्माइली इवेंट की संयोजक उर्मिला तापड़िया ने बताया कि इस मेले के माध्यम से घरेलू उत्पादन करने वाली महिलाओं को एक मंच के माध्यम से अपना प्रोडक्ट बेचने के लिए मंच दिया। इस मेले में करीब 45 स्टॉल लगाई गई है, जिसमें सभी महिला दुकानदार हैं। इसमें रेडीमेड गारमेंट,क्रोकरी,इमिटेशन ज्वेलरी,फैंसी आइटम, अचार पापड़ नमकीन,गिफ्ट आइटम की दुकानों पर पहले दिन शहर की महिला खरीदारी करने उमड़ी। मेले के सहयोग में संतोष, सुमित्रा शर्मा, बेला मेहता आदि का सहयोग रहा। स्माइल इवेंट पिछले 5 वर्षों से साल में तीन चार बार ऐसे मेलों का आयोजन करती है, इसमें शहर की महिलाए अपना उत्पाद बेच सकती है।

नाबालिग का देह शोषण

जोधपुर, (कासं)। पुलिस कमिश्नरेट के देव नगर थाने में नाबालिग से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी ने नाबालिग से दोस्ती कर मेलजोल बढ़ाया। इसके बाद देह शोषण किया। लगातार देह शोषण से नाबालिग गर्भवती हो गई तब परिजनों को पता चला। अब परिजनों ने मामला दर्ज करवाया है। थाने में दी रिपोर्ट में नाबालिग ने बताया आरोपी ने उसे दोस्ती कर झांसे में लिया। दोस्ती का फायदा उठाकर आरोपी नाबालिग के साथ रेप करता रहा। इसकी वजह से वह गर्भवती हो गई। नाबालिग के गर्भवती होने पर परिजनों को इसका पता चला। बाद में परिजनों ने थाने पहुंचकर मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने पीड़िता की रिपोर्ट पर आरोपी के खिलाफ आईपीसी, पोक्सो एक्ट और एससी एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज किया। मामले की जांच एसीपी प्रतापनगर कर रहे है।

हरियालो राजस्थान के तहत पौधारोपण

बालोतरा, (निसं)। औद्योगिक क्षेत्र बालोतरा में रीको, राजस्थान पत्रिका एवं मैसर्स वंदना फिलिंग स्टेशन के संयुक्त तत्वावधान में हरियालो राजस्थान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया गया। जिसके अन्तर्गत औद्योगिक क्षेत्र बालोतरा चतुर्थ चरण के ओपन पार्क में लगभग 2०० पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मैसर्स वंदना फिलिंग स्टेशन, बालोतरा के प्रोपराईटर प्रवीण कुमार पुंगलिया द्वारा पौधों के रख-रखाव का जिम्मा लिया गया। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलैक्टर नानू राम सैनी ने कार्य म की सराहना करते हुए उद्यमियों से औद्योगिक क्षेत्र में अधिक से अधिक पौधे लगाने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान रीको इकाई प्रभारी सुशील कटियार, योजना सहायक नरेश परिहार, सहायक स्थल अभियंता मुल्तान राम, ड्राफ्टसमैन रामबलवान मीणा, प्रवीण कुमार पुंगलिया, राजस्थान पत्रिका के प्रतिनिधिगण एवं उद्यमीगण उपस्थित रहे।

पॉवर लिफ्टिंग प्रतियोगिता आज

जालोर, (कासं)। जिला पावर लिफ्टिंग संघ जालोर के तत्वावधान में 28 जुलाई को जिला स्तरीय सीनियर पुरुष एवं महिला (उपकरण साहित) प्रतियोगिता सुदेलाव तालाब स्थित आर्य हनुमान व्यायामशाला जालोर में शाम 6 बजे आयोजित होगी। भाग लेने वाले 28 जुलाई को दोपहर 12 बजे तक अपनी प्रविष्टियां जमा करा सकेंगे। जिला पावर लिफ्टिंग संघ के सचिव कांतिलाल आर्य ने बताया कि पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता के सभी वर्ग के मुकाबले होंगे। पुरुष वर्ग में 53, 59,66,74, 83, 93, 105, 120 महिला वर्ग में 43, 47, 52, 57, 63, 69, 76, 84, 84 भार वर्ग के अलग-अलग मुकाबला होंगे। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता के आधार पर चयनित जिला पावर लिफ्टिंग टीम 2 से 4 जुलाई को चित्तौड़गढ होने वाली 12वीं राज्य स्तरीय पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में जालोर जिले का प्रतिनिधित्व करेगी।

हॉस्टल रूम से दो छात्रों के मोबाइल चोरी

जोधपुर, (कासं)। शहर के पाली रोड स्थित एक हॉस्टल से दो छात्रों के मोबाइल चोरी हो गए। इस बारे में पीड़ित छात्रों की तरफ से संयुक्त रिपोर्ट भगत की कोठी थाने में दर्ज कराई गई है। पुलिस ने बताया कि खेड़ापा के कजनाउ कला हाल भगत की कोठी एक हॉस्टल में रहने वाले जुगल किशोर जाट और उसके साथी सिरोही के अरठवाडा निवासी अर्जुन कुमार की तरफ से संयुक्त रिपोर्ट दी गई है। इसमें बताया कि दो दिन पहले वे हॉस्टल रूम से बाहर गए थे। वापिस आने पर कमरों से दो मोबाइल चोरी हो गए। पुलिस अब मोबाइल चोरों का पता लगाने का प्रयास कर रही है।

मुझे गौतम पर यकीन है कि वे भारतीय टीम को भी ज्यादा ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। मैने उन्हें मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ देते हुए देखा है। गौतम में दृढ़ता और हार न मानने की आदत देखी है। मैं गौतम को भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं। - राहुल द्रविड़

पूर्व भारतीय कोच, गौतम गंभीर को शुभकामनाएं दी।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

जो रूट

वेस्टइंडीज के खिलाफ जो रूट ने अपना 63वां अर्धशतक लगाया। साथ ही उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में अपने 12000 रन भी पूरे कर लिए। जो रूट अब टेस्ट क्रिकेट में ब्रायन लारा से ज्यादा रन बना लिए और वो टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में 7वें नंबर पर पहुंच गए। लारा ने टेस्ट क्रिकेट में 131 मैचों में 11953 रन बनाए थे। लेकिन अब रूट उनसे आगे निकल गए हैं। रूट इंग्लैंड की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में एलिएस्टर कुक के बाद दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं।

क्या आप जानते हैं ?... सबसे कम टेस्ट मैचों में 3000 रन बनाने और 350 विकेट लेने का रिकॉर्ड पाकिस्तान के इमरान खान के नाम है। इमरान ने मात्र 79 टेस्टों में 3262 रन बनाए व 351 विकेट लिये।

मनु भाकर ने रचा इतिहास

ओलिंपिक में 20 साल बाद किसी भारतीय महिला शूटर ने फाइनल में बनाई जगह

मनु भाकर 10 मीटर पिस्टल के फाइनल में पहुंची, रिदम सांगवान नहीं कर पाई क्वालीफाई

मनु भाकर से आज रहेगी पदक की उम्मीद

पेरिस, 27 जुलाई। भारत की स्टार शूटर मनु भाकर महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल में पहुंच गई हैं। उन्होंने क्वालिफिकेशन दौर में 580-27 का स्कोर बनाया और तीसरे स्थान पर रहीं। इसी के साथ मनु भाकर ने इतिहास रच दिया है, ओलिंपिक में 20 साल बाद किसी भारतीय महिला शूटर ने फाइनल में बनाई जगह है। वहीं भारत की ही रिदम सांगवान 15वें स्थान पर रहकर पदक की दौड़ से बाहर हो गईं। वहीं रविवार यानी 28 जुलाई को फाइनल भारतीयसमयानुसार दोपहर 3.50 तीन बजे खेला जाएगा। वहीं मनु भाकर देश केलिए मेडल का खाता खोल सकती हैं। फाइनल में आठ शूटर्स के बीच तीन मेडल गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज के लिए स्पर्धा होगी।

इस दौरान हंगरी की वेरोनिका मेजर 582-22 अंकों के साथ पहले स्थान पर रहीं। जबकि दक्षिण अफ्रीका की जिन ये ओह 582-20 अंक के सात दूसरे स्थान पर रहीं। मनु ने 6 प्रयासों में 97,97, 98, 96, 96 और 96 का स्कोर बनाया। इन तीनों के अलावा वियतनाम की विन्ह थू त्रिन, दक्षिण कोरिया की येजी किम, चीन चुए ली, तुर्किए की इलायदा सेवाल तरहान और चीन रैंक्सिन जियांग ने फाइनल्स के लिए क्वालिफाई किया है।

सांस रोक देने वाले मैच में भारत ने न्यूजीलैंड को हराया

पेरिस ओलिंपिक में भारतीय हॉकी टीम का जीत से आगाज

भारतीय टीम अपने दूसरे मुकाबले में सोमवार को अर्जेंटीना से भिड़ेगा

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पेरिस ओलंपिक में जीत से शुरुआत की है। भारत ने पूल बी के अपने पहले मैच में न्यूजीलैंड को 3-2 से पराजित किया। 0-1 से पिछड़ने के बावजूद भारत ने शानदार तरीके से जीत दर्ज की। हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली भारतीय हॉकी टीम में 5 खिलाड़ी ऐसे हैं जो इस बार ओलंपिक में डेब्यू कर रहे हैं। कप्तान तीसरी बार ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इस जीत से भारत को 3 अंक मिले। भारतीय टीम अपने दूसरे मुकाबले में सोमवार को अर्जेंटीना से भिड़ेगी।

कीवी टीम की ओर से साइमन चाइल्ड ने पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल कर टीम को बराबरी दिला दी। भारतीय टीम बढ़ त की फिराक में है। टीम इंडिया के लिए इस मैच में जीत बेहद जरूरी है। भारत की ओर से हरमनप्रीत सिंह ने तीसरा गोल दागकर भारत को शानदार जीत दिलाई।

भारत की ओर से विवेक सागर ने तीसरे क्वार्टर में गोल कर भारत को 2-1 से आगे कर दिया। न्यूजीलैंड ने रेफरेल लिया लेकिन इसका फायदा उसे नहीं हुआ।। भारतीय टीम ने शुरुआती दो क्वार्टर में ज्यादा गलत पास दिए। हालांकि बाद में टीम इंडिया ने वापसी की। शुरुआती दो क्वार्टर का खेल खत्म होने के बाद स्कोर 1-1 की बराबरी पर है। भारत की ओर से मनदीप सिंह ने पेनाल्टी के सहारे गोल दागा। भारत की ओर से बराबरी का गोल मनदीप सिंह ने दागा। मनदीप ने 24वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल कर भारत को 1-1 की बराबरी दिलाई। भारत ने पहले ही पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील कर न्यूजीलैंड के खिलाफ धमाकेदार पलटवार किया।

पूल बी के मैच में न्यूजीलैंड ने 8वें मिनट में भारत के खिलाफ शुरुआती गोल दागा। कीवी खिलाड़ी सैम लैन ने पेनाल्टी कॉर्नर के सहारे गोल किया। पहले क्वार्टर के 10वें मिनट में गुरजंट सिंह को ठीन कार्ड दिखाया गया। भारतीय टीम इस मैच को जीतकर ओलंपिक में धमाकेदार शुरुआत करने की ओर देख रही है।

जो रूट व स्टोक्स के नाबाद अर्द्धशतक

नई दिल्ली, 27 जुलाई। वेस्टइंडीज और इंग्लैंड के बीच तीन मैचों की सीरीज का आखिरी टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस टेस्ट मैच की पहली पारी में वेस्टइंडीज ने 282 रन बनाए। इसके बाद पहली पारी में इंग्लैंड की टीम ने 6 विकेट के नुकसान पर 231 रन बना लिए हैं। वहीं खबर लिखे जाने तक जो रूट ने 122 गेंदों में 87 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं बेन स्टोक्स ने 54 रन दोनों ने ही अपने-अपने अर्धशतक पूरे कर लिए थे। जो रूट ने अपनी इस पारी के दौरान टेस्ट क्रिकेट में 12 हजार रन पूरे कर लिए है। हालांकि, इस मैच में स्टोक्स फिर पहली पारी में 54 रन बनाकर आउट हो गए।

मेंस सिंगल स्कल्स हीट इवेंट में बलराज पंवार चौथे नंबर पर रहे, अब भी मेडल की आस

पेरिस, 27 जुलाई। फिलहाल भारत की तरफ से शनिवार को सबसे पहले रोइंग इवेंट में बलराज पंवार एक्शन में दिखे। वह पुरुषों के सिंगल स्कल की हीट्स राउंड में हिस्सा लिया। हालांकि, बलराज पंवार ने रोइंग स्पर्धा में चौथा स्थान प्राप्त किया और वे रेपचेज में पहुंच गए हैं। पुरुष एकल स्कल्स क्वालिफिकेशन के लिए रेपचेज जाएंगे। बलराज ने 7:07.11 मिनट का समय निकाला, जो मिस्त्र के लिए अब्देलखलेक एल्बाना के 7:05.06 मिनट से कम है, जिन्होंने पहले हीट से क्वार्टर फाइनल के लिए अंतिम स्थान प्राप्त किया है। वहींपुरुष एकल स्कल्स क्वालिफिकेशन के लिए रेपचेज इवेंट भारतीय समयानुसार रविवार 28 जुलाई को दोपहर 1 बजे होगा।

पुरुषों की स्ट्रीक स्केटबोर्डिंग बारिश के कारण कल तक स्थगित

पेरिस, 27 जुलाई। पेरिस ओलंपिक खेलों में शनिवार को होने वाली पुरुषों की स्ट्रीट स्केटबोर्डिंग प्रतियोगिता को भारी बारिश के कारण सोमवार तक के लिए स्थगित कर दिया गया। वर्ल्ड स्केट के स्केटबोर्डिंग निदेशक लुका बेसिलिको ने यहां जारी एक बयान में कहा, दोपहर तक प्रतिकूल पूर्वानुमानों के कारण पुरुषों की स्ट्रीट स्केटबोर्डिंग प्रतियोगिता को सोमवार को पुनर्निर्धारित की गई है जो मूल रूप से नियोजित समय के अनुसार ही शुरू होगी। पुनर्निर्धारित प्रारंभिक प्रतियोगिता चरण दोपहर के समय शुरू होगा जिसमें चार हीट से शीर्ष आठ प्रतियोगी फाइनल में पहुंचेंगे। प्रतियोगिता स्थल के कर्मचारियों ने कहा कि यह निर्णय एथलीटों की सुरक्षा चिंताओं से लिया गया है क्योंकि लगातार बारिश के कारण मैदान फिसलन हो गई है। सफाई के प्रयासों के बावजूद स्ट्रीट-स्टाइल कोर्स में अभी भी पानी जमा है।

बेहद कम अंतर से सरबजोत पेरिस ओलिंपिक में मेडल राउंड से चूके

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय निशानेबाज सरबजोत सिंह शनिवार को पेरिस ओलिंपिक में पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में पदक राउंड के लिए क्वालीफाई करने के बेहद करीब पहुंच गए, लेकिन बेहद कम अंतर के कारण अंततः उन्हें पोडियम पर जगह नहीं मिल पाई। सिंह ने असाधारण कौशल और फोकस का प्रदर्शन करते हुए अपनी एक श्रृंखला में 100 के पूर्ण स्कोर के साथ उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। इस प्रभावशाली उपलब्धि के बावजूद, उनकी अंतिम श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण गलती महंगी साबित हुई। वह मेडल टेली में नौवें स्थान पर रहे और फाइनल में मात्र एक अंक से चूक गये। अंतिम परिणाम में सिंह जर्मनी के रॉबिन वाल्टर के साथ बराबरी पर रहे, दोनों ने 577 अंक बनाए।

पेरिस ओलिंपिक का धांसू आगाज, सीन नदी के किनारे ओपनिंग सेरेमनी

सिंधु-शरत कमल ने की भारतीय दल की अगुवाई

पेरिस, 27 जुलाई। फ्रांस की राजधानी पेरिस में 33वें ओलिंपिक का आयोजन हो गया है। इस दौरान ओपनिंग सेरेमनी का आयोजन किया गया, हालांकि ये आयोजन किसी स्टेडियम में नहीं बल्कि सीन नदी पर किया गया। वहीं इस सेरेमनी में सबसे पहले ग्रीस देश की परेड निकली। बता दें कि, ग्रीस को ओलिंपिक खेलों का जन्मदाता भी कहा जाता है।

26 जुलाई से 11 अगस्त तक चलने वाले इस ओलिंपिक में भारत की तरफ से ध्वजवाहक पीवी सिंधु और टेबल टेनिस के दिग्गज शरत कमल रहे। ये दोनों खिलाड़ी अपने-अपने खेल में ओलिंपिक की ओपनिंग सेरेमनी में भारत के ध्वजवाहक बनने वाले पहले खिलाड़ी हैं।

भारत के 117 खिलाड़ी इन खेलों में भाग ले रहे हैं, इनमें 47 महिलाएं हैं। कई खिलाड़ियों की शनिवार को प्रतिस्पर्धा है इसलिए तैयारियों का प्राथमिकता देते हुए उन्होंने ओपनिंग सेरेमनी में हिस्सा लिया। नावें शह की ऐतिहासिक इमारतों कैथेड्रल आफ नोत्रे डेम, लावरे म्युजियम और कुछ आयोजन स्थलों से होकर गुजरी। शहर में उद्घाटन समारोह के लिए दो लाख से ज्यादा मुफ्त टिकट दिए गए थे जबकि एक लाख से ज्यादा टिकट बिके थे। सेरेमनी के दौरान फ्लोटिंग परेड के बीच कलाकारों का धांसू परफॉर्मेंस भी देखने को मिला। लगभग 80 कलाकारों ने प्रसिद्ध फ्रांसीसी कैबरे नृत्य कैन-कैन का प्रदर्शन भी किया। इससे पहले लेडी गागा ने अपने परफॉर्मेंस से समां बांधा। लेडी गागा ने फ्रांस की दिवंगत अभिनेत्री जिजी जीनमैरे का फेमस सॉन्ग मॉन ट्रुक एन प्लम्स प्रस्तु किया। जीनमैरे की साल 2020 में 96 वर्ष की उम्र में निधन हो गया था।

ओलिंपिक आयोजकों ने मांगी माफी

पेरिस, 27 जुलाई। ओलिंपिक खेलों के आयोजकों ने कहा कि वे पेरिस में उद्घाटन समारोह के दौरान दक्षिण कोरिया के खिलाड़ियों को उत्तर कोरिया के रूप में पेश करने के लिए 'तहे दिल से माफी' मांगते हैं। उद्घाटन समारोह के दौरान शुक्रवार शाम जैसे ही दक्षिण कोरिया के दल ने सीन नदी में तैरती एक नाव पर अपने देश का झंडा लहराया, तो उन्हें फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में 'डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (उत्तर कोरिया)' घोषित किया गया। दक्षिण कोरिया को कोरिया गणराज्य के तौर पर जाना जाता है।

पेरिस ओलिंपिक में भारत की खराब शुरुआत, शूटिंग में निराशा हाथ लगी

पेरिस, 27 जुलाई। पेरिस ओलिंपिक 2024 में प्रतिस्पर्धाएं शुरू हो चुकी हैं। पहले दिन 27 जुलाई भारतीय शूटर्स से मेडल की उम्मीद थी लेकिन भारत को निराशा मिली। 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम इवेंट में भारत की दोनों जोड़ियां फाइनल के लिए भी क्वालिफाई नहीं कर सकीं। इलावेनिल वलारिवन और संदीप सिंह 12वें स्थान पर रहे। जबकि रमिता जिंदल और अर्जुन बाबुता ने छठा स्थान हासिल किया। रमिता-अर्जुन ने कुल मिलाकर 628.7 अंक हासिल किए जबकि इलावेनिल-संदीप 626.3 अंक जुटा पाए। बता दें कि, टॉप 4 टीमों ने ही 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम इवेंट में मेडल राउंड के लिए क्वालिफाई किया। इस इवेंट का फाइनल 27 जुलाई को ही होना है, ध्यान रहे कि भारत के लिए आज सिर्फ यही एक मेडल इवेंट था। भारत की ओर से ओलिंपिक गेम्स के पहले दिन मेडल जीतने का रिकॉर्ड वेटलिफ्टर मीराबाई चानू के नाम हैं, चानू ने टोक्यो ओलिंपिक 2020 के पहले दिन सिल्वर मेडल जीता था।

बैडमिंटन में लक्ष्य सेन का जीत से आगाज

टेबल टेनिस में हरमीत देसाई ने पुरुष एकल मुख्य ड्रॉ में बनाई जगह

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय बैडमिंटन स्टार लक्ष्य सेन ने पेरिस ओलिंपिक की शुरुआत शानदार जीत के साथ की है। पहले ग्रुप मुकाबले में ग्वाटेमाला के केविन कॉर्डन के खिलाफ खेलते हुए धमाकेदार प्रदर्शन किया। पहला गेम महज 14 मिनट में जीतने के बाद दूसरे गेम में पीछे होने के बाद वापसी करते हुए मुकाबला अपने नाम किया। लक्ष्य ने ग्वाटेमाला के खिलाड़ी को खिलाफ मैच 21-8 और 22-20 से जीता।

लक्ष्य से ने पेरिस ओलिंपिक की शुरुआत अपने ही अंदाज में जीत के साथ की है। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी से देश को पदक की उम्मीद है। पहले ग्रुप मुकाबले में इस खिलाड़ी का सामना ग्वाटेमाला के केविन कॉर्डन के खिलाफ था। आक्रामक शुरुआत करते हुए लक्ष्य ने पहले गेम में महज 14 मिनट में खत्म कर दिया। 21-8 के बड़े अंतर से गेम को एकतरफा बनाते हुए बढ़त हासिल की। दूसरी तरफ पेरिस 2024 ओलिंपिक के पुरुष टेबल टेनिस प्रिलिमिनरी राउंड में भारत के हरमीत देसाई ने जॉर्डन के जैद अबो यमन को हराया। साउथ पेरिस एरिना में खेलते हुए देसाई ने 30 मिनट तक चले मुकाबले में 4-0 (11-7, 11-9, 11-5, 11-5) से जीत हासिल की। 31 वर्षीय खिलाड़ी का रविवार को राउंड ऑफ 64 में फ्रांस के फेलिक्स लेब्रून से मुकाबला होगा।

टेबल टेनिस में हरमीत की विजयी शुरुआत

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी हरमीत देसाई ने शनिवार को पेरिस ओलंपिक में जॉर्डन के जायद एबो यमन पर 4-0 से जीत दर्ज करते हुये अपने विजयी अभियान की शानदार शुरुआत की। आज यहां खेले ये मुकाबले में हरमीत शानदार लय में रहे और उन्होंने शुरुआत से ही अपने प्रतिद्वंद्वी एबो यमन पर दबाव बनाये रखा।

भारतीय खिलाड़ी आज इन खेलों में लेंगे हिस्सा

पेरिस, 27 जुलाई। पेरिस ओलिंपिक 2024 का आगाज हो चुका है। पहले दिन भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित स्पर्धा में टीम कुछ खास नहीं कर पाई। हालांकि, 10 मिटर एयर पिस्टल इवेंट के फाइनल में अपनी जगह बनाई। इलावेनिल वलारिवन और संदीप सिंह की जोड़ी 12वें स्थान पर और रमिता जिंदलकी-अर्जुन बबुता की जोड़ी छठे स्थान पर रही। वहीं अब रविवार 28 जुलाई को भारत निशानेबाजी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, बॉक्सिंग और तीरंदाजी में चुनौती पेश करेगा।

मनु भाकर से भारत को पदक की उम्मीद है। उन्होंने 10 मीटर पिस्टल इवेंट के क्वालिफिकेशन राउंड के खत्म होने के बाद तीसरे स्थान पर रहते हुए फाइनल में जगह बनाई और उनके इस प्रदर्शन से इस बात की संभावना जग गई है कि वह इस प्रतियोगिता में भारत को मेडल दिला सकती है। हालांकि, उनकी साथी रिदम सांगवान क्वॉलीफाई करने में असफल रहीं।

28 जुलाई को भारत का शेड्यूल-

महिलाओं के 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा का क्वालीफिकेशन राउंड मुकाबला होगा। वहीं इसी दिन पुरुषों के क्वालिफिकेशन राउंड में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा होगी।

बैडमिंटन-पीवी सिंधु महिला एकल ग्रुप में तो पुरुष एकल में एचएस प्रणय एक्शन में होंगे।

टेबल टेनिस-श्रीजा अकुला, शरत कमल और मनिका बत्रा एक्शन में दिखेंगे।

बॉक्सिंग-निखत जरीन खेलते हुए नजर आऐंगी। वहीं तीरंदाजी में भारतीय महिला टीम क्वालिफिकेशन मुकाबला खेलेगी।

चीन ने पेरिस ओलिंपिक खेलों के पहले दो स्वर्ण पदक जीते

पेरिस, 27 जुलाई। चीन ने पेरिस ओलिंपिक 2024 खेलों में प्रतिस्पर्धा के पहले दिन दो स्वर्ण पदक जीते। इन पदकों में खेलों का पहला स्वर्ण पदक भी शामिल है। विश्व चैंपियन निशानेबाज चीन के हुआंग युटिंग और शेंग लिहाओ ने शनिवार को 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा में जीत हासिल कर अपने देश को पेरिस ओलिंपिक का पहला स्वर्ण पदक दिलाया। चीन ने 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम के फाइनल में दक्षिण कोरियाई निशानेबाजों पर 16-12 से करीबी जीत दर्ज की। कजाकिस्तान ने पहले इस स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। चीनी जोड़ी ने चेटेउरौक्स शूटिंग सेंटर में अपने असाधारण कौशल और धैर्य का प्रदर्शन करते हुए दक्षिण कोरिया के क्यूम जी-ह्योन और पार्क हा-जून को हराया। इससे पहले दिन में कजाकिस्तान की एलेक्जेंड्रा ले और इस्लाम सतपायेव की जोड़ी ने कांस्य पदक जीता। उन्होंने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए जर्मनी की अन्ना जानसेन और मैक्सिमिलियन उलब्रिच को 17-5 के स्कोर से हराया।

महिला एशिया कप 2024 : श्रीलंका को हराकर 8वां खिताब जीतने उतरेगा भारत

नई दिल्ली, 27 जुलाई। मौजूदा चैंपियन भारतीय टीम महिला एशिया कप टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट में अपना दबदबा बरकरार रखकर श्रीलंका के खिलाफ रविवार को यहां होने वाले फाइनल में जीत दर्ज करके रिकॉर्ड आठवां खिताब जीतने की कोशिश करेगी। भारत ने टूर्नामेंट में अभी तक शानदार प्रदर्शन किया है। उसने लीग चरण में पाकिस्तान को सात विकेट से, संयुक्त अरब अमीरात को 78 रन से और नेपाल को 82 रन से हराया था।

सेमीफाइनल में उसने बांग्लादेश को 10 विकेट से पराजित किया था। भारत के शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों और गेंदबाजों ने अभी तक बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने अभी तक अपनी प्रतिद्वंद्वी टीमों को कोई मौका नहीं दिया है। सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा ने अभी तक टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई है लेकिन टीम प्रबंधन गेंदबाजों विशेषकर दीप्ति शर्मा और रेणुका सिंह के प्रदर्शन से काफी खुश होगा। दीप्ति ने टूर्नामेंट में अभी तक सर्वाधिक 9 विकेट लिए हैं जबकि रेणुका सात विकेट लेकर तालिका में तीसरे नंबर पर है। इन दोनों का इकोनॉमी रेट भी शानदार है जिसका मतलब है कि उन्होंने विरोधी टीम के बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया है। इन दोनों की कसी गेंदबाजी का फायदा भारत के अन्य गेंदबाजों को भी मिला है। बाएं हाथ की स्पिनर राधा यादव इसका उदाहरण है जिन्होंने अभी तक 5.5 के इकोनॉमी रेट से 6 विकेट लिए हैं। भारतीय टीम के लिए कोई विभाग चिंता का विषय नहीं है लेकिन कप्तान हरमनप्रीत कौर और जेमिमा रोड्रिग्स को बल्लेबाजी के कम मौके मिलने से वह थोड़ा चिंतित हो सकता है।

कवीन क्विंटल और मोहसीन पराम्बन ने 19वें और 22वें स्थान पर

इंडोनेशिया, 27 जुलाई। आईडेमिट्सु होण्डा रेसिंग इंडिया टीम के राइडरों ने इंडोनेशिया में 2024 एफआईएम एशिया रोड रेसिंग चैम्पियनशिप के चौथे राउण्ड की पहली रेस में मजबूत प्रदर्शन किया। भारतीय जोड़ी कवीन क्विंटल और मोहसीन पराम्बन ने आज की रेस दृढ़ संकल्प और स्थिरता के साथ पूरी की। ग्रिड पर 27वें पॉज़िशन से शुरूआत करने के बाद चेन्नई के 19वर्षीय राइडर कवीन क्विंटल ने पहले लैप के बाद तेज़ी से बढ़त ली और पूरी रेस के दौरान स्थिरता बनाए रखी। अपने अनुभव का उपयोग करते हुए और योजनाओं को प्रभाविता से अंजाम देते हुए, उन्होंने इंटरनेशनल राइडरों को कड़ी टक्कर दी और चोट के बावजूद अपने परफोर्मेन्स में निरंतर सुधार लाते रहे। उन्होंनं 18:37.226 के कुल टाईम के साथ 19वें पॉज़िशन पर रेस पूरी की।

एफसीजी ने हरेरा के साथ किया स्थायी अनुबंध

पणजी, 27 जुलाई। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) की टीम एफसी गोवा ने बोर्जा हरेरा के साथ स्थाई अनुबंध की घोषणा की है। कैनरी द्वीप के लास पालमास में जन्मे 31 वर्षीय हरेरा ने लास पालमास की अकादमी में फुटबॉल में पदार्पण किया था, उन्होंने तब से स्पेन, इज़रायल और भारत के विभिन्न क्लबों में अपनी प्रतिभा को निखारा है और खुद को मिडफील्ड में एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी के तौर पर स्थापित किया है। हरेरा के करियर में ला लीगा में यूडी लास पालमास, सेगुंडा डिवीज़न में रियल वलाडोलिड और आईएसएल में हैदराबाद एफसी के साथ काम शामिल हैं जहाँ उन्होंने 2022-23 लीग शील्ड की दौड़ में अपनी टीम को उपविजेता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने डूरंड कप 2023, इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2023-24 सीज़न के पहले हाफ़ और कलिंगा सुपर कप 2024 में ईस्ट बंगाल एफसी का प्रतिनिधित्व किया जहाँ वे चैंपियन बनकर उभरे। हरेरा ने कहा मैं एफसी गोवा के साथ अपने सहयोग को आगे बढ़ाने में सक्षम होने के लिए बहुत खुश हूं। पिछले सीज़न के अंत के बाद से यह मेरी एकमात्र इच्छा थी।

भारत ने 43 रन से जीता पहला टी-20, अच्छी शुरुआत के बाद फिर हारा श्रीलंका

श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज में 1-0 की बढ़त, कप्तान सूर्या की फिफ्टी, रियान पराग को 3 विकेट

पल्लेकल, 27 जुलाई। वर्ल्ड चैंपियन भारत ने श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज का पहला मुकाबला 43 रनों से जीत लिया है। इस जीत से टीम इंडिया ने 5 मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल की है। दूसरा मुकाबला 28 जुलाई को खेला जाएगा। पल्लेकेले में श्रीलंका ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। भारतीय टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 213 रन बनाए। टीम इंडिया ने टी-20 में 35वीं बार 200 से ज्यादा का स्कोर बनाया। रन चेज में श्रीलंकाई टीम 19.2 ओवर में 170 रन पर ऑलआउट हो गई। रियान पराग ने 3 विकेट झटके। अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल को 2-2 विकेट मिले।

श्रीलंका से पथुम निसांका ने 79 रन बनाए। उनकी पारी के दम पर श्रीलंकाई टीम ने 14 ओवर में एक विकेट पर 140 रन बना लिए थे और आसानी से जीतती दिख रही थी। उन्हें अक्षर पटेल ने आउट करके भारत की मैच में वापसी कराई। कुसल मेंडिस (45 रन) रन बनाकर आउट हुए। श्रीलंका ने टॉस जीतकर भारत को बल्लेबाजी का न्यौता दिया। बल्लेबाजी करने उतरी यशस्वी जयसवाल और शुभमन गिल की सलामी जोड़ी ने बेहतरीन शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये 74 रन जोड़े। छठें ओवर में दिलशान मदुशंका ने शुभमन गिल को आउट कर भारत का पहला झटका दिया। गिल ने 16 गेंदों में 34 रनों की पारी खेली। अगले ही ओवर में हसरंगा ने जयसवाल को के मेंडिस के हाथों स्टंप आउट कराकर भारत को दूसरा झटका दिया।

जयसवाल ने 21 गेंदों में 40 रन बनाये। बल्लेबाजी करने आये कप्तान सूर्यकुमार यादव ने ऋषभ पंत के तेजी से रन बटोरे। दोनों बल्लेबाजों के बीच 76 रनों की साझेदारी हुई। 14वें ओवर में पतिराणा ने सूर्यकुमार यादव को पगबाधा आउट कर पवेलियन भेज दिया। सूर्यकुमार यादव ने 26 गेंदों में आठ चौके और दो छक्के लगाते हुये (58) रनों की पारी खेली। ऋषभ पंत ने 33 गेंदों में छह चौके और एक छक्का लगाते हुये (49) रन बनाये। हार्दिक पंड्या (9), रियान पराग (7) और रिंकू सिंह (1) रन बनाकर आउट हुये।

अक्षर पटेल पांच गेंद में 10 रन और अर्शदीप सिंह (1) रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 213 रन का स्कोर खड़ा किया। श्रीलंका की ओर से मतीशा पतिराणा ने चार विकेट लिये। दिलशान मदुशंका, असिथा फर्नांडो और वानिंदु हसरंगा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

नीति आयोग की गवर्निंग काउन्सिल की नवीं बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शामिल हुये। बैठक में मुख्यमंत्री ने प्रदेश को 350 बिलियन डॉलर की इकॉनमी बनाने का खाका पेश किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बुनियादी सुविधाओं के विकास, किसानों का सशक्तिकरण, एम.एस.एम.ई. योजनाओं को विशेष प्रोत्साहन देने की योजनाओं पर विशेष बल दिया जा रहा है। राजस्थान को रिन्युएबल एनर्जी निर्माण क्षेत्र में अग्रणी बनाने की योजनाओं पर भी प्रदेश सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

भाजपा मुख्यालय में भाजपाई मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक ली प्र.मंत्री मोदी ने

केन्द्र में तीसरी बार प्र.मंत्री बनने के बाद यह पहला मौका है जब मोदी इस तरह की बैठक कर रहे हैं

- **इस बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा भी शामिल हुये। बैठक की शुरुआत में प्र.मंत्री मोदी का तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के लिए अभिनंदन किया गया।**
- **बैठक के दूसरे दिन सभी भाजपाई मु.मंत्री अपने राज्यों में चल रही विकास योजना की अप-टू-डेट रिपोर्ट पेश करेंगे तथा प्र.मंत्री मोदी सभी मुख्यमंत्रियों के साथ चर्चा भी करने वाले हैं।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई। नीति आयोग गवर्निंग काउन्सिल की बैठक में शामिल न होकर विपक्ष ने विकसित भारत के मोदी सरकार के लक्ष्य में असहयोग का बिगुल भले ही फूंक दिया हो, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी डबल इंजन सरकार के सहारे अपने संकल्प रथ को गति देने के लिए तैयार हैं। शनिवार को भाजपा मुख्यालय में शुरू हुई भाजपा मुख्यमंत्री परिषद की दो दिवसीय बैठक में पार्टी का जोर इसी पर है।

हर राज्य की ओर से विकास का खाका पेश किया जाना है। बैठक को प्रधानमंत्री भी संबोधित करेंगे। केंद्र में लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनने के बाद यह पहला अवसर है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सभी भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक कर रहे हैं।

शनिवार शाम को प्र.मंत्री के अलावा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी पार्टी मुख्यालय पहुंचे। पार्टी सूत्रों ने बताया कि सबसे पहले प्रधानमंत्री का तीसरी बार लगातार विजय के लिए अभिनंदन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बैठक के उद्देश्य पर विचार रखा।

बताया गया है कि पार्टी की ओर से सभी भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों से पहले ही कह दिया गया था कि अपने-अपने राज्यों में चल रही केंद्र सरकार की योजनाओं की अद्यतन स्थिति, उनकी सफलता और लागू करने में आ रही बाधा पर रिपोर्ट सहित प्रदेश सरकारों ने सभी वर्गों के कल्याण को लक्षित करते हुए जो भी योजनाएं और नवाचार शुरू किए हों उनका ब्योरा लेकर आएं। सभी मु.मंत्री और डिप्टी मु.मंत्री इस तैयारी के साथ पहुंचे हैं।

गौरतलब है कि इस तरह की बैठक कर एक दूसरे की अच्छी योजनाओं का अनुसरण करने को कहा जाता है। ऐसी ही एक बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गरीब कल्याण योजना के लिए पूरा ड्राफ्ट तैयार करने का निर्देश दिया था, जिसे अब केंद्र सरकार और भाजपा शासित राज्यों में क्रियान्वित किया गया है। बैठक में अपने नवाचार साझा करने का क्रम शनिवार को शुरू हो गया और रविवार को भी मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री अपने राज्यों के कार्यकलापों का प्रस्तुतीकरण करेंगे।

बैठक में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक, मध्य प्रदेश से डॉ. मोहन यादव, राजस्थान से भजनलाल शर्मा, उत्तराखंड से पुष्कर सिंह धामी, गुजरात से भूपेंद्र पटेल, छत्तीसगढ से विष्णुदेव साय, हरियाणा से नायब सिंह सैनी, असम से हिमंत बिस्वा सरमा पहुंचे।

ओडिशा से मु.मंत्री मोहन चरण माझी, त्रिपुरा से माणिक साहा, अरुणाचल प्रदेश से पेमा खांडू, गोवा से प्रमोद सावंत, मणिपुर से बिरेन सिंह, बिहार से उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा और महाराष्ट्र से डिप्टी मु.मंत्री देवेंद्र फडणवीस समेत कई केंद्रीय मंत्री शामिल हो रहे हैं। संभावना है कि रविवार को सभी मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री के मन की बात को भी एक साथ सुनें।

विकसित भारत 2047 की तर्ज पर तैयार किया जा रहा है विकसित राजस्थान 2047 का रोड मैप

नीति आयोग की गवर्निंग काउन्सिल की नवीं बैठक में शामिल हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री

- **मुख्यमंत्री ने बिजली उत्पादन के क्षेत्र में प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दी और बताया कि राज्य सरकार में डेढ़ लाख करोड़ रूपए के एम.ओ.यू. किए हैं।**
- **मुख्यमंत्री ने ई.आर.सी.पी. और यमुना जल समझौते के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया और कहा कि इससे राज्य के 21 जिलों की जनता को पानी मिलेगा।**
- **मुख्यमंत्री ने विकसित राजस्थान को पूर्ण विकसित बनाने के लिए चिकित्सा, शिक्षा एवं सड़क निर्माण के क्षेत्र में उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों की जानकारी भी दी।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में नीति आयोग की गवर्निंग काउन्सिल की नवीं बैठक में शिरकत करते हुए विकसित राजस्थान 2047 का रोड मैप काउन्सिल के सामने रखा। शर्मा ने बैठक में कहा कि विकसित राजस्थान 2047 की संकल्पना को साकार करने के लिए हमारी सरकार ने वर्ष 2024-25 के बजट में 10 संकल्प लिए हैं जिसमें आगामी 5 वर्षों में प्रदेश की इकोनमी को 350 बिलियन डॉलर बनाने, बुनियादी सुविधाएं, शहरी ग्रामीण एवं क्षेत्रीय तथा मानव संसाधनों का विकास, किसानों का सशक्तिकरण, एम.एस.एम.एस.ई. को प्रोत्साहन देना तथा विरासत संरक्षण के साथ-साथ सबके लिए स्वास्थ्य, सुशासन जैसे महत्वपूर्ण घटकों को शामिल किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा, हमारी सरकार ने कार्यभार संभालते ही बिजली के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक कदम उठाए हैं। हमनें एन.टी.पी.सी., एन.टी.पी.पी. ग्रीन, कोल इंडिया, एन.एल.सी और आर.ई.सी. जैसे केंद्रीय उपक्रमों के साथ 1 लाख 50 हजार करोड़ के एम.ओ.यू. संपादित किए हैं। जिसके तहत 32 हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जा सकेगा, जो कि राजस्थान को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने 2950 मेगावाट की सोलर परियोजना हेतु भूमि आवंटित कर दी है तथा पीएम कुसुम योजना के तहत 7 महीने की अल्पावधि में 4386 मेगावाट क्षमता के प्रोडक्ट्स हेतु लैटर ऑफ इन्टैन्ट जारी किए हैं।

बैठक में मुख्यमंत्री ने ई.आर.सी.पी. परियोजना तथा यमुना जल समझौते के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा ई.आर.सी.पी. परियोजना को रिवर लिंकिंग प्रोजेक्ट में सम्मिलित कर राज्य के 21 जिलों के 3 करोड़ 25 लाख लोगों का सपना साकार हुआ है तथा हमने जल जीवन मिशन के तहत इस वर्ष 15 हजार करोड़ रुपए व्यय करके 25 लाख घरों में जल पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।

मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं को सम्मिलित करते हुए कहा कि हमारी सरकार ने चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार हेतु बजट में 27 हजार 660 करोड रुपए का प्रावधान किया है जो राज्य बजट का 8.26 प्रतिशत है। राज्य में फरवरी, 2024 से "मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना" प्रारंभ कर दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने स्कूली शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए 134 राजकीय स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूलों में प्राईमरी कक्षाओं का संचालन प्रारंभ कर दिया है तथा 402 पी.एम.श्री. विद्यालयों में वर्चुअल ऑनलाइन लैब स्थापित किया जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि विकसित राजस्थान 2047 की दिशा में राज्य सरकार द्वारा पिछले 7 माह में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। जिसमें 2,750 किलोमीटर लंबाई के नौ ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे का निर्माण, राज्य के हर जिले में मातृ वन बनाने, किसान सम्मान निधि की राशि को 6,000 से बढ़कर 8,000 करने तथा इस समयावधि में 20 हजार युवाओं को नियुक्ति प्रदान करने के साथ-साथ राज्य में "वन स्टेट-वन इलेक्शन" व्यवस्था लागू करने हेतु आवश्यक कार्यवाही शामिल है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भाखड़ा और पोंग बांध को पूर्ण क्षमता तक भरने के संबंध में शीघ्र निर्णय लिया जाना आवश्यक है ताकि राज्य को उसके हिस्से का पानी आसानी से मिल सके। उन्होंने जल जीवन मिशन की अवधि मार्च 2027 तक बढ़ाई जाने का आग्रह भी किया। उन्होंने राज्य को आवंटित 2 लाख सोलर पंप के लक्ष्य को बढ़ाकर 6 लाख किए जाने का अनुरोध भी केंद्र सरकार से किया।

राजस्थान रिफाइनरी परियोजना के संबंध में भी मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया कि परियोजना की बढ़ी हुई लागत 72 हजार 937 करोड़ रुपए का अनुमोदन शीघ्र किया जाए ताकि रिफायनरी के काम को जल्द पूर्ण किया जा सके। शर्मा ने राजस्थान के विकास में पर्यटन की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य में धार्मिक पर्यटन की बहुत बड़ी भूमिका है इसलिए धार्मिक स्थलों के विकास हेतु केंद्रीय सहयोग अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग को जल्द राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित कर विकसित किया जाए।

राहुल ने मोची को भेजा गिफ्ट

- **राहुल गांधी शुक्रवार को सुल्तानपुर में जिस मोची की गुमटी पर उससे मिलने गये थे, शनिवार को उन्होंने उस मोची के लिए जूते सिलने वाली मशीन भिजवा दी।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई। सुलतानपुर में अपने चिर-परिचित अंदाज में नजर आए राहुल गांधी की चर्चा इस समय शहर से लेकर गांव तक हो रही है। शुक्रवार को राहुल गांधी एक मुकदमे में एम.पी.-एम.एल.ए. कोर्ट में बयान दर्ज कराने आए थे। दिल्ली वापस लौटते समय वे गुप्तारगंज कस्बे के विधायकनगर में अचानक मोची चैतराम की दुकान पर रुक गए। उन्होंने मोची से जूता बनाने की विधि के बारे में पूछा और उनके साथ कोल्ड ड्रिंक पी। थोड़ी देर बातचीत की और आगे बढ़ गए। शनिवार को उन्होंने दिल्ली से अपनी टीम भेजकर मोची को जूता बनाने की मशीन भेज दी। बदले में मोची चैतराम ने भी राहुल गांधी को रिटर्न गिफ्ट दिया। मोची ने उपहार में चमड़े के दो जूते भिजवाए।

शनिवार को मोची चैतराम के पास दिन में करीब 11 बजे फोन आया कि आपको राहुल ने जूता बनाने की मशीन भिजवाई है।

पुतिन से हो चुकी बात अब यूक्रेन के प्रधानमंत्री से बात करने जायेंगे मोदी

यूक्रेन-रूस युद्ध को खत्म करने पर बातचीत के लिए प्र.मंत्री मोदी 23 अगस्त को यूक्रेन की यात्रा पर जाने वाले हैं

- **प्रधानमंत्री मोदी की, लोकसभा चुनावों में लगातार तीसरी जीत के बाद प्रधानमंत्री ज़ैलैंस्की ने उन्हें बधाई दी थी और यूक्रेन की यात्रा करने के लिए आमंत्रित किया था।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करने के बाद पहली बार अगले महीने कीव की यात्रा कर सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, प्र.मंत्री मोदी 23 अगस्त को यूक्रेन जा सकते हैं। आपको बता दें कि करीब एक महीना पहले इटली में जी7 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की की मुलाकात हुई थी।

इटली में दोनों नेताओं को मिलते समय गले मिलते देखा गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनावों में लगातार तीसरी जीत के बाद ज़ेलेंस्की ने उन्हें बधाई दी थी और यूक्रेन की यात्रा करने के लिए आमंत्रित किया था।

प्रधानमंत्री की यूक्रेन की यात्रा से इसलिए भी युद्ध की समाप्ति के आसार बन रहे हैं क्योंकि वह रूस की यात्रा के ठीक बाद यूक्रेन की यात्रा करने वाले हैं। इससे पहले जेलेंस्की ने प्र.मंत्री मोदी से मध्यस्थता करने की अपील की थी।

इससे पहले सितंबर 2022 में उज्बेक शहर समरकंद में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ द्विपक्षीय बैठक में प्र.मंत्री मोदी ने कहा था, "आज का युग युद्ध का नहीं है।" उन्होंने पुतिन से यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने के लिए कहा। उनके संदेश को दुनिया का तमाम नेताओं से प्रशंसा मिली।

इस साल मार्च में राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की के साथ एक फोन कॉल में प्र.मंत्री मोदी ने भारत-यूक्रेन साझेदारी को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। उन्होंने इस दौरान संघर्ष के समाधान के लिए बातचीत और कूटनीति का रास्ता अपनाने का आ ान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार हरसंभव प्रयास करता रहेगा।

युद्ध शुरू होने के बाद से ही भारत का मानना रहा है कि इसे केवल बातचीत और कूटनीति के माध्यम से ही सुलझाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि भारत किसी भी शांति प्रयास में योगदान देने के लिए तैयार है।

दिल्ली: कोचिंग...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बेसमेंट में पानी भर गया है और कुछ लोगों के फंसे होने की आशंका है। उन्होंने कहा कि शाम को भारी बारिश के कारण सड़क पर जलभराव हो गया था। डीसीपी हर्षवर्धन ने कहा कि हम मामले की जांच कर रहे हैं कि पूरा बेसमेंट कैसे भर गया।

उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि बेसमेंट में बहुत तेजी से पानी भर गया और कुछ लोग बेसमेंट के अंदर फंस गए। दिल्ली फायर सर्विस और एनडीआरएफ की बचाव टीमें यहां मौजूद हैं। तलाशी और बचाव अभियान जारी है। अब तक दो स्टूडेंट्स की बॉडी बरामद हुई है।

भाजपा अध्यक्ष जे.पी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के आम चुनावों में मोदी अल्पमत में आ गये थे, उस समय आर.एस.एस. की योजना उनके स्थान पर किसी और नेता बनाने की थी।

लेकिन मोदी ने भाजपा या भाजपा संसदीय दल की मीटिंग ही नहीं बुलाई। इसके स्थान पर, उन्होंने एन.डी.ए. की मीटिंग बुलाई तथा एन.डी.ए. सदस्यों से अपना समर्थन करवा लिया।

यह बात स्वयं में कितनी महत्वपूर्ण है कि भाजपा संसदीय दल का कोई पत्र राष्ट्रपति के पास नहीं गया था तथा राष्ट्रपति ने भी इस प्रकार का कोई पत्र माँगना उचित नहीं समझा।

अब यह लड़ाई पूरी तरह खुले में आ गई है। मोहन भागवत और नरेन्द्र मोदी में इस समय खूली अनबन है।

यह देखना बड़ा दिलचस्प होगा कि कौन टिका रहता है और कौन बाहर कर दिया जाता है।

ऐसी सम्भावना है कि अगर संघर्ष की स्थिति बनती है तो आर.एस.एस. मूल के सांसदों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाएगी।

ऐसी स्थिति में, जब मोदी-शाह योगी आदित्यनाथ से छुटकारा पाने के लिये पूरी-पूरी कोशिश एवं मेहनत कर रहे हैं तब योगी-प्रकरण क्या रूप लेता है, उससे यह स्पष्ट संकेत मिल जायेगा कि भाजपा की राजनीति किस दिशा में जा रही है।

अनंतनाग में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिन्हा ने दुखद सड़क दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया। सिन्हा ने कहा, आज अनंतनाग के डकसुम में एक दुर्भाग्यपूर्ण सड़क दुर्घटना में बहुमूल्य जिंदगियों के नुकसान के बारे में जानकर मुझे गहरा दुख हुआ है। दुख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के साथ हैं। मैंने जिला प्रशासन को प्रभावित परिवारों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने के निर्देश जारी किए हैं।

पूर्व मुख्यमंत्रियों फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, गुलाम नबी आजाद और महबूबा मुफ्ती सहित कई राजनीतिक नेताओं ने भी इस दुखद दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया है।

जम्मू-कश्मीर में एक माह में नवां आतंकी हमला

शनिवार सुबह ही आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ शुरु हो गई, जिसमें सुरक्षाबलों के तीन जवान घायल हो गये तथा एक जवान शहीद हो गया

- **सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में एक आतंकी को मारने में कामयाबी हासिल की है। संदेह जताया जा रहा है कि यह आतंकी पाकिस्तानी सेना का एस.एस.जी कमाण्डो हो सकता है।**

श्रीनगर, 27 जुलाई। जम्मू-कश्मीर के एल.ओ.सी. के पास वाले जिले कुपवाड़ा में आज सुबह सेना और आतंकियों के बीच हुई मुठभेड़ में एक जवान शहीद हो गया है इसके साथ ही मेजर समेत तीन और जवानों के घायल होने की खबर है। इस मुठभेड़ में एक आतंकी के भी ढेर होने की खबरें सामने आई है। घायल सैनिकों घटनास्थल से निकाल कर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। कुपवाड़ा में यह पिछले एक महीने में चौथी आतंक की घटना है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जवान मुच्छल सेक्टर के कुमकाडी इलाके में सर्च ऑपरेशन चला रहे थे तभी आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी। सेना को कुमकाडी इलाके में आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी, जिसके बाद सैनिकों ने यह सर्च ऑपरेशन चलाया था। सेना के द्वारा और सैनिकों को भेजकर इन आतंकियों की तलाश की जा रही है। रक्षा सूत्रों के द्वारा मिली जानकारी के अनुसार इस हमले में पाकिस्तानी बैट(बॉर्डर एक्शन टीम) टीम का हाथ है। हमले में शामिल बैट टीम में पाकिस्तान के एसएसजी कमांडो सहित पाकिस्तान की नियमित सेना के सैनिक होने का संदेह है जो आतंकवादी संगठनों के साथ मिलकर काम करते हैं।

बुधवार को कुपवाडा जिले में ही सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच गोलीबारी हुई थी, जिसमें एक आतंकी मारा गया था। एक सैनिक भी घायल हो गया था। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर सेना की तरफ से बताया गया था कि आतंकियों की मौजूदगी के संबंध में खबर मिली थी।

नीति आयोग प्रकरण में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोग की गवर्निंग काउंसिल बैठक में भाग ले रही थीं। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक से एकमात्र ममता बनर्जी ही थीं, जिन्होंने नीति आयोग की बैठक में भाग लिया था जबकि अन्य ने यह आरोप लगाकर बैठक का बहिष्कार किया था कि केन्द्र ने बजट में उनकी मांगों की अनदेखी की है। विपक्ष की राजनीति में खुद को अलग-थलग पाकर ममता बनर्जी बैठक बीच में ही बायकॉट का नाटक किया।

प्रैस इन्फॉमेशन ब्यूरो, जिसने ममता बनर्जी के दावे का फैक्ट चैक किया था, ने बयान जारी किया कि ममता बनर्जी का दावा "भ्रामक" है। ब्यूरो ने कहा "ऑफिशियल क्लॉक" बता रही है कि वे अपने निर्धारित समय से ज्यादा देर बोली। यहां तक कि उनको टाइम खत्म होने की सूचना देने वाली घंटी भी नहीं बजाई गई। ममता बनर्जी का दावा था कि उनका माइक्रोफोन बंद कर दिया गया, जबकि वरिष्ठ नेता होने के नाते उनसे अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए। सत्य तो यह हे कि ममता बनर्जी विपक्ष से अलग-थलग पड़ गई हैं, अन्य नेताओं को ज्यादा तवज्जो मिल रही है।

इसके अलावा विपक्ष का सारा फोकस राहुल गांधी पर है। इसके अलावा अन्य विपक्षी दलों की राजनीति नहीं समझ पाने के कारण नीति आयोग की मीटिंग में शामिल होने वाली वही एकमात्र विपक्षी मुख्यमंत्री थीं, बाकी सब एन.डी.ए के सहयोगी दल थे। वह अक्सर अपनी वरिष्ठता का ढोल पीटती रहती हैं और यह बताती हैं कि वे कई बार सांसद चुनी जा चुकी हैं। प्रैस की सुर्खियों में आने के लिए नियमित रूप से वे ऐसी हरकते करती रहती हैं।

जे.डी.ए. सचिव...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बताया गया कि परिवादी पी.आर.एन. का सफल आवंटी है, लेकिन उसे पी.आर.एन. में भूखंड का कब्जा नहीं दिया गया, जिस पर उसने उपभोक्ता आयोग में परिवाद दायर किया। आयोग ने 26 जुलाई 2013 को फैसला देते हुए जे.डी.ए. पर 2500 रुपए हर्जाना लगाते हुए निर्देश दिया कि वह परिवादी को पी.आर.एन. में ही भूखंड दे। जे.डी.ए. ने आदेश की पालना करने के बजाय, इसे राज्य उपभोक्ता आयोग और बाद में राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग में चुनौती दी, लेकिन दोनों ही जगह पर जे.डी.ए. हारा और जिला उपभोक्ता आयोग का फैसला बरकरार रखा गया। इस पर जे.डी.ए. ने राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी गत 13 फरवरी को जे.डी.ए. की एस.एल.पी. खारिज कर दी। इस पर परिवादी ने उपभोक्ता आयोग में चल रहे अवमानना मामले में आदेश की पालना करवाने का आग्रह किया, जिस पर आयोग ने जे.डी.ए. सचिव के गिरफ्तारी वारंट व जे.डी.सी. के जमानती वारंट जारी कर उन्हें तलब किया है।

राजस्थान से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रुप से डॉग मीट खाया जाता है, वहां भी मांस के लिए कुत्ते को मारना प्रतिबंधित है। बेंगलुरू पुलिस ने कहा कि राजस्थान से आने वाले मीट को मटन कहकर बेचा जा रहा है, जबकि वास्तव में, वो मटन नहीं है। यदि लैब परीक्षणों में इस बात की पुष्टी हो गई कि यह कुत्ते का मांस है तो आरोपियों के खिलाफ सख़्त कार्यवाही की जाएगी।

ममता बनर्जी ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दोनों से मुलाकात की थी। मुख्य बात यह है कि बनर्जी ने कई बार इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों से भिन्न रुख अपनाया था, परन्तु मोटे तौर पर वह भाजपा का विरोध करने वाली ताकतों के साथ प्रतिबद्ध रही हैं। मनोज झा ने यह भी कहा कि "भाजपा यदि यह सोचती है तो यह उसकी गलतफहमी है कि विपक्षी समूह में समन्वय की कमी है। समन्वय है या नहीं है यह एक बिलकुल ही अलग बात है। परन्तु, सार यह है कि हब सब एकजुट हैं और एकसाथ खड़े हैं।"

महबूबा मुफ्ती ने अमित शाह से कश्मीर मसले पर खास अपील की

महबूबा मुफ्ती ने अमित शाह से कहा, आप कश्मीर और पी.ओ.के मसले पर शांति स्थापित करने के लिए दोंनो देशों के 20-20 प्रतिनिधियों की एक समिति बनाइये

- **महबूबा मुफ्ती ने अमित शाह से कहा कि राष्ट्र हित में वे अपना अहंकार त्याग दें और लाइन ऑफ कन्ट्रोल (एल.ओ.सी.) के दोनों ओर के लोगों के प्रतिनिधियों की बैठक कराएं, जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने कार्यकाल के दौरान किया था।**

श्रीनगर, 27 जुलाई। पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू कश्मीर को वापस लाने के लिए पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने एक सुझाव दिया है। महबूबा मुफ्ती ने शनिवार को क्षेत्र के मुद्दों पर चर्चा के लिए जम्मू कश्मीर में नियंत्रण रेखा के दोनों ओर के लोगों के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने का आव्हान किया। पीडीपी के 25वें स्थापना दिवस समारोह में महबूबा ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से प्रत्येक पक्ष के 20 प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने की अपील की।

उन्होंने कहा, "अमित शाह कहते हैं कि वह कश्मीर (पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर) वापस लाएंगे, जबकि आप हम मुसलमानों से कहते हैं कि पाकिस्तान चले जाओ।" पीडीपी अध्यक्ष ने कहा, "हालांकि मेरा आपसे एक अनुरोध है। जब तक आप उस हिस्से को वापस नहीं लाते, तब तक इस कश्मीर और उस कश्मीर के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाइए तथा हमें साथ लाइए। हम साल में दो बार एक साथ बैठेंगे और हमारे सामने आने वाले मुद्दों पर चर्चा करेंगे।"

उन्होंने शाह से कहा कि राष्ट्र के हित में वह अपना अहंकार त्याग दें और नियंत्रण रेखा (एलओसी) के दोनों ओर के लोगों के प्रतिनिधियों की बैठक कराएं जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने कार्यकाल के दौरान किया था। महबूबा ने कहा, "क्या आपमें हिम्मत है अमित शाह साहब? आप कहते रहते हैं कि आप उस कश्मीर को वापस लाएंगे। वह कश्मीर बहुत दूर है, उनके 20 प्रतिनिधि और हमारे 20 प्रतिनिधि लाइए और हमें एकसाथ बैठने दीजिए।" उन्होंने सवाल किया, "क्या आप ऐसा कर सकते हैं? क्या आपमें ऐसा करने की हिम्मत है? क्या आपमें वाजपेयी की तरह देशभक्ति है कि आप जम्मू कश्मीर के लिए अपने अहंकार का त्याग कर दें?" महबूबा ने देशभर की जेलों में बंद कश्मीरी युवाओं को रिहा करने का भी आव्हान किया।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908